Supporting Information 3.3.3

3 - ISBN
7
12

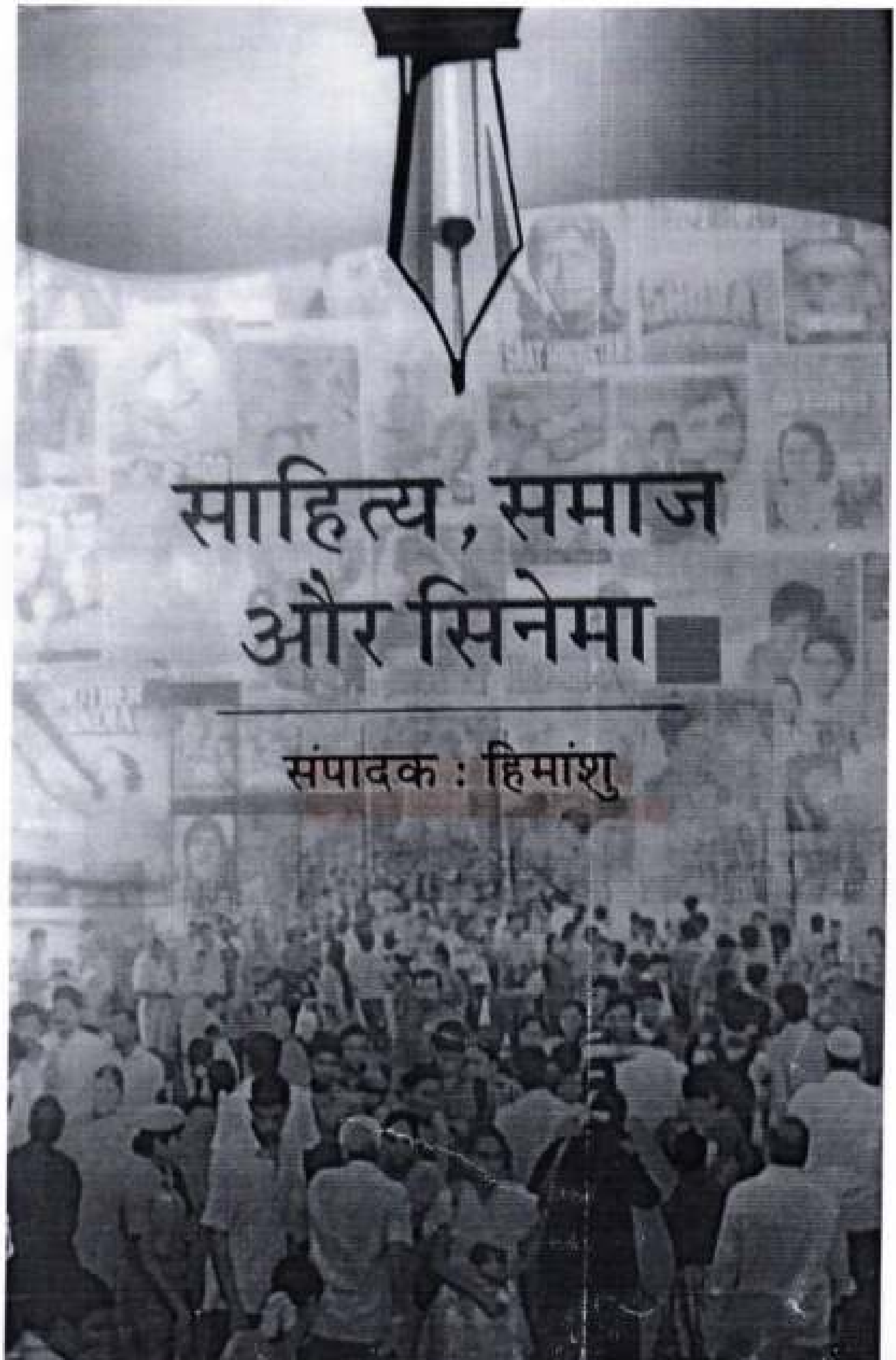

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Coordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(5)

साहित्य, समाज और सिनेमा

संपादक
हिमांशु

गोयनका कॉलेज ऑफ कॉमर्स एण्ड
बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन
210, बिपिन बिहारी गागुंली स्ट्रीट, कोलकाता-700012

आनंद प्रकाशन
कोलकाता-700007

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

© हिमांशु

प्रकाशक :
आनन्द प्रकाशन
176/178, रवीन्द्र सरणी
कोलकाता-700 007

ISBN : 978-81-88904-92-1

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : 500.00 रुपए

शब्द-संयोजन
कंप्यूटेक सिस्टम,
दिल्ली-110032

मुद्रक :
कॉम्पैक्ट प्रिंटर्स
दिल्ली-110094

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(5)

अनुक्रम

संपादकीय		3
सिनेमा और साहित्य : एक अवलोकन	शरद दत्त	7
साहित्य और सिनेमा : आवा-जाही के विमर्श...	सत्यदेव त्रिपाठी	18
हिंदी साहित्य और सिनेमा	साकेत सहाय	32
साहित्य आधारित सिनेमा और निर्देशकीय दृष्टि	नीरा जलक्षत्रि	41
साहित्यिक रचनाओं के फिल्मांतरण की चुनौतियाँ	डॉ. सन्तोष कुमार सिंह	45
सिनेमा के विकास में साहित्य का योगदान	अंजुम	48
हिन्दी साहित्य और सिनेमाई अनुवाद	अनुज कुमार गौतम	54
सिनेमा और साहित्य का संबंध	मनीषा साव	60
साहित्य और सिनेमा का अंतःसम्बन्ध	डॉ. सुभाष चंद अग्रवाल डॉ. सुशील उपाध्याय	64
हिंदी सिनेमा में बंगाल का हस्तक्षेप : साहित्य एवं निर्देशन के विशेष सन्दर्भ में	निकिता जैन	70
सिनेमा और साहित्य की विधागत चुनौतियाँ	डॉ. नीरज शर्मा	77
साहित्य, सिनेमा और गुलजार	आशुतोष श्रीवास्तव	83
सिनेमा और साहित्य	अर्चना द्विवेदी	94
साहित्य और भारतीय सिनेमा	डॉ. कमल कुमार	101
साहित्य और सिनेमा के अंतःसंबंध का तात्विक विश्लेषण	गोविन्द यादव	106
साहित्य पर आधारित हिन्दी फ़िल्में	सुभाष मंडल	112
साहित्य और सिनेमा : रियल से रील तक	डॉ. सुनीता मंडल	116
सिनेमा और साहित्य का अन्तर्सम्बन्ध	डॉ. जी.जे.के. भारती	121
सिनेमा और साहित्य का अंतर्संबंध	बिजय कुमार रविदास	130
सिनेमा, साहित्य और सामाजिक सरोकार	अरुण प्रसाद रजक	137
भारतीय सिनेमा और साहित्य : एक अंतर्संबंध	रहीम मियाँ	142
सिनेमा और साहित्य का सूत्रीकरण	डॉ. काजू कुमारी साव	147
हिन्दी साहित्य, सिनेमा और सामाजिक मूल्य	मधु सिंह	153

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

साहित्य और सिनेमा का अंतःसम्बन्ध

डॉ. सुभाष चंद अग्रवाल[1]
डॉ. सुशील उपाध्याय[2]

साहित्य और सिनेमा का सम्बन्ध बेहद गहरा और अटूट है। यह वैसा ही है, जैसे कि बीज और कवच का, बादल और बिजली का, राधा और कृष्ण का, जीव और प्रकृति का तथा मनुष्य और प्रकृति का। यह अतिशयोक्तिपूर्ण कथन इस बात का द्योतक है कि फिल्म और साहित्य के रिश्ते को किसी औपचारिक सम्बन्ध के तौर पर नहीं देखा जा सकता, वरन इसकी जड़ें एक-दूसरे से गुँथी हुई हैं। प्रायः सिनेमा की दुनिया में साहित्य की चर्चा होती है और वहाँ साहित्य को गंभीरता से भी लिया जाता है। इसके उलट, यह एक विसंगति है कि पुस्तक-पत्रिकाओं में छपने वाले साहित्यिकार सिनेमा में साहित्य के होने को संदेह की नजर से देखते हैं। साहित्य का चिन्तन करने वाले कुछ साहित्यिकार एक संकुचित दृष्टि रखते हैं और इसके चलते वे फिल्म और साहित्य को एक साथ रखकर देखने से परहेज करते हैं। इस दृष्टि ने साहित्य के स्वरूप को भी सीमित कर दिया है। साहित्य के संदर्भ में जो प्रयोजन और हेतु स्वीकार किए गए हैं, वे सभी फिल्म पर ज्यों की त्यों लागू किए जा सकते हैं।

साहित्य के प्रकार अलग-अलग हो सकते हैं, उसे भिन्न श्रेणियों में बाँटकर देखा जा सकता है। पाठक और साहित्य, दोनों का हित इसी बात में है कि फिल्म को भी साहित्य की एक विधा के तौर पर स्वीकार किया जाए। उल्लेखनीय है कि नाट्य विधा को पहले से ही साहित्य की श्रेणी के तौर पर स्वीकार किया जा चुका है किसी भी चिंतनशील व्यक्ति के लिए साहित्य का मूल आधार विचार और चिन्तन में है। वही आधार उसकी भावनाओं और विचारों के रूप में भौतिक रूप में अंकित होता है। यह स्वाभाविक है कि विचारों और भावों की अभिव्यक्ति के माध्यम भिन्न हो सकते हैं, लेकिन उन सभी को विस्तृत रूप से साहित्य के अंदर ही शामिल

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • I.Q.A.C. Coordinator
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(6)

हिंदी भाषा और साहित्य
भारतीय संस्कृति
समाज विज्ञान
राष्ट्र और उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श
मानवाधिकार
मीडिया
आलोचना के बीज शब्द
पौराणिक चरित्र
पर्यावरण
पश्चिमी सिद्धांतकार
भारत के राज्य
कलाओं का संसार

4

अनुवाद सिद्धांत
नवजागरण और सुधारवादी आंदोलन
वैश्वीकरण और उपभोक्ता संस्कृति

हिंदी साहित्य ज्ञानकोश

प्रधान संपादक

शंभुनाथ

संपादक मंडल

राधावल्लभ त्रिपाठी, जवरीमल्ल पारख
अवधेश प्रधान, अवधेश कुमार सिंह
अवधेश प्रसाद सिंह

भाषा संपादक

राजकिशोर

संयोजन

कुसुम खेमानी

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

हिंदी साहित्य ज्ञानकोश

खंड -4

प्रधान संपादक

शंभुनाथ

संपादक मंडल

राधावल्लभ त्रिपाठी, जवरीमल्ल पारख, अवधेश प्रधान
अवधेश कुमार सिंह, अवधेश प्रसाद सिंह

भाषा संपादक

राजकिशोर

संयोजक

कुसुम खेमानी

शोध सहायक

दिनेश कुमार शर्मा (समन्वयक), पीयूषकांत,
श्रद्धांजलि सिंह, पूजा गुप्ता, उपेन्द्र शाह, निशांत

प्रकाशक

भारतीय भाषा परिषद

36ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता - 700 017

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar) I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

एकमात्र वितरक

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710

शाखाएँ
अशोक राजपथ, पटना 800 004, बिहार
कॉफ़ी हाउस कैम्पस, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211 001, उत्तर प्रदेश
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001, महाराष्ट्र

www.vaniprakashan.in
marketing@vaniprakashan.in
sales@vaniprakashan.in

HINDI SAHITYA JNANKOSH-4
Chief Editor : Shambhunath

ISBN : 978-81-940882-1-9
Kosh

© 2019 भारतीय भाषा परिषद

प्रथम संस्करण

सात खंडों का सम्पूर्ण सेट (पेपरबैक संस्करण) : ₹ 2000

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सम्पर्ण प्रा.लि., कोलकाता में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

प्रविष्टि सूची

खंड-4

द

951 दंडी 1651
952 दकनी उर्दू 1651
953 दक्खिनी का साहित्य 1654
954 दक्ष 1655
955 दक्षिण एशिया में हिंदी 1656
956 दक्षिण कोरिया में हिंदी 1657
957 दक्षिणापथ 1657
958 दत्तात्रेय 1658
959 दधीचि 1658
960 दमन और दीव 1659
961 दयानंद सरस्वती 1662
962 दलपतराम 1663
963 दलित आंदोलन और साहित्य 1665
964 दलित आत्मकथा 1668
965 दलित एलीट 1670
966 दलित और मानवाधिकार 1671
967 दलित जीवन दृष्टि 1672
968 दलित नाटक 1673
969 दलित पैंथर आंदोलन 1675
970 दलित राजनीति और लोकतंत्र 1676
971 दलित विमर्श 1678
972 दलित समाज सुधार 1680
973 दलित साहित्य आंदोलन 1682
974 दलित सौंदर्यशास्त्र 1683
975 दलित स्त्रीवाद 1685
976 दशरथ 1689
977 दहेज प्रथा 1689
978 दादर और नगर हवेली 1691
979 दादाभाई नौरोजी 1694
980 दादावाद 1696
981 दामोदर धर्मानंद कोसंबी 1697
982 दारा शिकोह 1698
983 दिल्ली 1699
984 दिवोदास 1706
985 दिव्य सौंदर्यबोधशास्त्र 1706
986 दीने इलाही 1708
987 दीपावली 1709
988 दीमशिल्प 1710
989 दुःशासन 1710
990 दुआर्ते बारबोसा 1711
991 दुर्गा 1712
992 दुर्गादास राठौर 1714
993 दुर्गाबाई देशमुख 1715
994 दुर्योधन 1716
995 दुर्वासा 1717
996 दुविधा 1718
997 दृश्य काव्य 1719
998 देव-असुर 1720
999 देवकी-वसुदेव 1721
1000 देवबंद आंदोलन 1722
1001 देवयानी 1723
1002 देवेंद्रनाथ टैगोर 1724
1003 देवेंद्रनाथ शर्मा 1725

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

1069 नव मध्यवर्ग 1828
1070 नव-मानववाद 1830
1071 नव वाम 1830
1072 नव इतिहासवाद 1833
1073 नव उदारवाद 1835
1074 नव उपनिवेशवाद 1837
1075 नवगीत 1839
1076 नवजागरण और स्त्री 1841
1077 नवजागरण और महावीर प्रसाद द्विवेदी 1843
1078 नवजागरणकालीन हिंदी पत्रकारिता 1849
1079 नव डार्विनवाद 1853
1080 नव फ्रायडवाद 1854
1081 नव-भाषिक विश्व व्यवस्था 1857
1082 नव मार्क्सवाद 1859
1083 नव यथार्थवाद 1863
1084 नवयान 1865
1085 नवरात्रि 1866
1086 नव-शास्त्रवाद 1866
1087 नव साम्राज्यवाद 1868
1088 नवोन्मेषपरक शिक्षण 1869
1089 नस्ल 1871
1090 नस्लवाद 1872
1091 नहुष 1873
1092 नांदी 1874
1093 नागपुरी 1874
1094 नागरिक 1876
1095 नागरिक अधिकार 1877
1096 नागरिक समाज 1879
1097 नागरी आंदोलन 1880
1098 नागरी प्रचारणी सभा 1884
1099 नागेश भट्ट 1887
1100 नाचा गम्मत 1887
1101 नाजीवाद 1888
1102 नाटक 1890
1103 नाट्य रूपांतरण 1892
1104 नाट्य वृत्तियां 1894
1105 नाट्य शोध संस्थान 1895
1106 नाट्य संधि 1896
1107 नाट्यगीत 1899
1108 नाट्यशास्त्र 1901
1109 नातेदारी 1904
1110 नाथ संप्रदाय 1905
1111 नाना फडनवीस 1906
1112 नाना साहब 1907
1113 नान्गेली 1908
1114 नाभिकीय आपूर्तिकर्ता ग्रुप 1909
1115 नाम महिमा 1909
1116 नामदेव 1910
1117 नामदेव ढसाल 1912
1118 नायक 1913
1119 नायन्मार संत 1914
1120 नायिका भेद 1916
1121 नारद 1917
1122 नारायण गुरु 1919
1123 नारायण श्रीधर बेंद्रे 1920
1124 नारी पराधीनता 1920
1125 नार्थ्रोप फ्राई 1922
1126 नार्सिसिज्म 1923
1127 नालंदा विश्वविद्यालय 1924
1128 नासदीय सूक्त 1926
1129 नास्तिकता 1927
1130 निजंधरी कथा 1929
1131 निंबार्काचार्य 1930
1132 निकोलाई ग्राविलोविच चेर्नीशेव्स्की 1932
1133 निजता का अधिकार 1933
1134 निजामुद्दीन औलिया 1934
1135 निजीकरण 1936

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttrakhand

1136 निबंध 1937
1137 निबंध लेखन 1940
1138 निमाड़ी 1943
1139 निराशावाद 1944
1140 निर्गुण काव्य 1945
1141 निर्माणात्मक ध्वंस 1948
1142 निर्वाण–महापरिनिर्वाण 1949
1143 निर्वेद 1950
1144 निर्वैयक्तिकता 1951
1145 निषेध का निषेध 1952
1146 नि-स्तालिनीकरण 1953
1147 निहिलिज्म 1955
1148 नीति कथा 1955
1149 नीतिकाव्य 1956
1150 नीतिशास्त्र 1958
1151 नुक्कड़ नाटक 1960
1152 नृत्य कला 1962
1153 नेट-जनसत्याग्रह 1963
1154 नेट-निरपेक्षता 1964
1155 नेतृत्व कौशल 1965
1156 नेपाली 1968
1157 नैसी चोदोरोव 1976
1158 नैतिकता 1977
1159 नैरेटिव 1979
1160 नॉम चोम्स्की 1980
1161 नॉस्टैल्जिया 1982
1162 नोबेल साहित्य पुरस्कार 1983
1163 नौटंकी 1986
1164 न्याय 1987
1165 न्याय दर्शन 1988
1166 न्यायिक सक्रियता 1989
1167 न्यूगी वा थ्योंगो 1991
1168 न्यूज एजेंसी 1992

प

1169 पंगवाली 1996
1170 पंच पीर 1996
1171 पंचकन्या 1998
1172 पंचतंत्र 1998
1173 पंचपरगनिया 2001
1174 पंचमकार 2002
1175 पंचवटी 2003
1176 पंचायत और अधिकार संरक्षण 2005
1177 पंजाबी 2006
1178 पंडवानी 2016
1179 पंडिता रमाबाई 2017
1180 पंढरपुर यात्रा 2018
1181 पटकथा 2019
1182 पढ़ना और लिखना 2022
1183 पढ़ने का दर्शन 2024
1184 पण्य 2025
1185 पतंजलि 2026
1186 पत्र साहित्य 2027
1187 पत्रकार के गुण 2028
1188 पदार्थीकरण 2029
1189 पपराजी 2031
1190 पब्लिक 2032
1191 परंपरा 2033
1192 परपीड़न 2034
1193 परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम 2035
1194 परशुराम 2035
1195 परस्परोपग्रहो जीवानाम् 2036
1196 पराभाषा 2037
1197 परिणय-सूत्र बंधन 2038
1198 परिमल 2038
1199 परी कथा 2041
1200 परीक्षित 2042
1201 पर्यटन 2043

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidyalaya
IQAC
Coordinator
Landhaura (Haridwar)

1202 पर्यवेक्षण 2044
1203 पर्यायता 2044
1204 पर्यावरण अध्ययन 2046
1205 पर्यावरण और कलाकार 2047
1206 पर्यावरण जागरूकता 2049
1207 पर्यावरण प्रदूषण और जीवन 2051
1208 पर्यावरण संकट 2053
1209 पर्यावरण संबंधी मानवाधिकार 2058
1210 पर्यावरण संरक्षण : भारतीय कानून 2060
1211 पर्यावरण सुरक्षा 2062
1212 पर्युषण पर्व 2065
1213 पर्वतीय पर्यावरण आंदोलन 2065
1214 पवारी 2070
1215 पशुकथाएं 2071
1216 पश्चिमी देशों में हिंदी 2072
1217 पश्चिमीकरण 2074
1218 पहरेदार पत्रकारिता 2075
1219 पहाड़ी 2076
1220 पांडव 2077
1221 पांडु 2078
1222 पांडुरंग वामन काणे 2079
1223 पांडुलिपि 2080
1224 पाठ 2081
1225 पाठक-केंद्रित आलोचना 2082
1226 पाठकीय प्रतिक्रिया सिद्धांत 2085
1227 पाठानुसंधान 2088
1228 पाठालोचन 2089
1229 पाणिनी 2091
1230 पारमिता 2095
1231 पारसी धर्म 2097
1232 पारसी हिंदी रंगमंच 2099
1233 पारिभाषिक शब्दावली 2103
1234 पारिस्थितिक स्त्रीवाद 2105
1235 पारिस्थितिकी संकट 2107
1236 पार्वती 2109
1237 पार्श्वनाथ 2110
1238 पालि भाषा और उसका साहित्य 2112
1239 पिंगल साहित्य 2114
1240 पिजिन और क्रियोल 2116
1241 पितृ-पक्ष 2119
1242 पितृसत्ता 2120
1243 पियरे बोर्दियो 2126
1244 पिरामिडीय 2128
1245 पीटर बर्जर 2129
1246 पीत पत्रकारिता 2131
1247 पुतली प्रदर्शन कला 2132
1248 पुदुच्चेरी 2135
1249 पुदुमैपित्तन 2137
1250 पुनरुत्थानवाद 2138
1251 पुनर्नुवाद 2141
1252 पुराजातीयता 2142
1253 पुराण 2144
1254 पुरातत्व 2150
1255 पुरानी हिंदी 2151
1256 पुरुष 2153
1257 पुरुष-केंद्रिकता 2153
1258 पुरुषार्थ 2154
1259 पुरुषोत्तम दास टंडन 2155
1260 पुलआउट पत्रकारिता 2156
1261 पुलस्त्य 2157
1262 पुलिस और मानवाधिकार 2157
1263 पुष्टिमार्ग 2159
1264 पुष्पदंत 2160
1265 पुष्यमित्र शुंग 2161
1266 पुस्तक 2161
1267 पुस्तक प्रकाशन : आरंभिक भारतीय इतिहास 2162
1268 पुस्तक प्रकाशन : नया युग 2167
1269 पुस्तक संस्कृति 2169

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

1270 पुस्तक समीक्षा 2171
1271 पुस्तकालय आंदोलन 2172
1272 पूंजीवाद 2177
1273 पूतना 2179
1274 पूरनचंद जोशी 2180
1275 पूर्णसिंह 2181
1276 पूर्व मीमांसा 2182
1277 पूर्वाग्रह 2183
1278 पृथकतावाद 2183
1279 पृथु 2185
1280 पृथ्वी दिवस 2186
1281 पृथ्वीराज चौहान 2187
1282 पृथ्वीसूक्त 2187
1283 पेटी बूर्जुआ 2188
1284 पेंटेंट 2189
1285 पेड न्यूज 2191
1286 पेरियालवार 2192
1287 पैंफलेट 2193
1288 पैरोडी 2194
1289 पैशन 2195
1290 पॉप संगीत 2196
1291 पॉप संस्कृति 2197
1292 पॉल एंथोनी सैम्युलसन 2198
1293 पॉल डे मान 2199
1294 पॉल विरिलिओ 2200
1295 पॉलिसिस्टम : अनुवाद सिद्धांत 2001
1296 पॉलो फ्रेरे 2204
1297 पोंगल 2206
1298 पोर्नोग्राफी 2207
1299 पोस्टर कविता 2208
1300 पौराणिक पशु-पक्षी 2209
1301 प्रकृतवाद 2210
1302 प्रकृति और पुरुष 2211
1303 प्रकृति पूजा 2212
1304 प्रकृति, पर्यावरण और कविता 2213
1305 प्रगति 2215
1306 प्रगतिवाद 2216
1307 प्रगतिशील काव्य 2219
1308 प्रगतिशील लेखक संघ 2222
1309 प्रगीत 2225
1310 प्रच्छन्न लेखक 2226
1311 प्रणव 2227
1312 प्रतापसाहि 2227
1313 प्रति-औपनिवेशिकता 2228
1314 प्रतिक्रियावाद 2230
1315 प्रतिनिधित्व 2231
1316 प्रतिबंधित साहित्य 2232
1317 प्रतिबद्धता 2234
1318 प्रतिभा 2236
1319 प्रतिरोध 2238
1320 प्रतिरोध का साहित्य 2240
1321 प्रति-विमर्श 2242
1322 प्रति-संस्कृति 2243
1323 प्रतीक 2244
1324 प्रतीक अपहरण 2246
1325 प्रतीकवाद 2246
1326 प्रतीत्यसमुत्पाद 2247
1327 प्रत्यक्षबोध 2249
1328 प्रत्यक्षवाद 2250
1329 प्रत्यभिज्ञा 2251
1330 प्रथम विश्वयुद्ध 2253
1331 प्रदर्शनकारी उपभोक्तावाद 2255
1332 प्रद्युम्न 2256
1333 प्रपत्ति 2257
1334 प्रपद्यवाद 2257
1335 प्रबंध काव्य 2258
1336 प्रभाव उद्विग्नता 2259
1337 प्रभाववाद 2260
1338 प्रभावान्विति 2262
1339 प्रभुत्व 2263

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

6

औद्योगिक निर्माण ; और न ही उसका व्यापार। अलग-अलग देशों के कानून के साथ पेटेंटधारी का सामंजस्य हो, यह भी जरूरी है। किसी देश का कानून उसे बाध्य कर सकता है कि उसे मिली आवश्यक समय-सीमा (7 वर्ष या 20 वर्ष) से पहले ही वह दूसरों को भी औद्योगिक निर्माण के लिए छूट दे, ताकि उस उत्पादन की मांग पूरी की जा सके। मेडिकल पेटेंटों के क्षेत्र में यह शर्त उपयोगी साबित हुई है।

पेटेंट से कुछ लोगों को फायदा होता है और कुछ लोगों को नुकसान होता है। इसलिए इसके औचित्य को लेकर बहस चलती रही है। पेटेंट के कारण बहुत-से लोग कुछ खोजों से वंचित रह जाते हैं। अमीर देश पेटेंट के बल पर गरीब देशों में अपनी खोज का लाभ पहुंचने नहीं देते और मुनाफा कमाते हैं। बौद्धिक संपदा अधिकारों का लाभ उठाने की क्षमता रखने वाले देशों को भी पेटेंट की वजह से उत्पाद से वंचित रखा जाता है। धनी विदेशी, गरीब देशों की तुलना में पेटेंट का लाभ अधिक पाते हैं। एक आंकड़े के अनुसार हर दस लाख लोगों की आबादी पर यदि धनी देशों में सात 273 पेटेंट हुए तो मध्यम दर्जे के विकसित देशों में सात पेटेंट हुए, चीन में दो पेटेंट हुए, वहीं भारत के हिस्से में सिर्फ एक पेटेंट है।

उदयराज, अविनाश कुमार सिंह

अधिक जानकारी के लिए :

1. **The Trips regime of Patent Rights** : Nunopires de Carvalho, 2002, 2. **Intellectual Property : Patents, Copyrights Trade Marks** : W R Cornish, 1996

पेड न्यूज

आर्थिक लाभ अर्जित करने के लिए किसी व्यक्ति, दल, संस्था या अन्य के पक्ष में समाचार के रूप में कोई भी प्रकाशन या प्रसारण पेड न्यूज (Paid News) की परिधि में आता है। पारिभाषिक शब्दों में कहें, 'सच की कसौटी से परे जाकर जो सामग्री किसी धनराशि के बदले प्रकाशित की गई है, वह 'पेड न्यूज' है।' न्यूज की यह श्रेणी भले नई लगती हो, लेकिन ढके-छिपे तौर पर बहुत समय से इसका अस्तित्व है।

माना जाता है कि पेड न्यूज की शुरुआत कई दशकों पहले ही व्यावसायिक प्रकाशन घरानों से शुरू हो चुकी थी। उन प्रकाशन कंपनियों के समाचार-पत्रों ने कुछ घटनाओं और उत्पादों की लॉन्चिंग कवरेज के बदले पैसे लिए। हालांकि इस कवरेज को मुख्य समाचार-पृष्ठों के बजाय खास पृष्ठों पर या पूरक पृष्ठों पर प्रकाशित किया गया। यह विज्ञापन सामग्री की विश्वसनीयता बढ़ाने की कोशिश थी। इस धंधे के शुरू होने के बाद ऐसे लोगों की संख्या बढ़ती गई, जो पैसा देकर खुद की कवरेज कराना चाहते हैं या अपने आयोजनों के लिए अखबार में मनचाहे स्थान पर जगह दिलाना चाहते हैं। देखा जा रहा है कि पेड न्यूज का मामला घटनाओं और उत्पादों से लेकर फिल्मों के प्रचार और सिने कलाकारों के कवरेज तक जा पहुंचा है। जैसी कि आशंका थी, पेड न्यूज भारत के राजनेताओं तक पहुंच गया। राजनेताओं और मीडिया माध्यमों के बीच इस धंधे को लेकर गठजोड़ भी बन गया है। यह इसलिए भी संभव हो सका क्योंकि देश में पेड न्यूज को लेकर अलग से कोई कानून नहीं है। प्रकारांतर से मीडिया माध्यमों पर यह छोड़ दिया गया कि वे नैतिकता के आधार पर पेड न्यूज से अलग रहें। लेकिन जहां व्यवसाय की बात हो, वहां महज नैतिकता के आधार पर पेड न्यूज से अलग रहने के तर्क में कोई दम नहीं रह जाता। देश में यह मान लिया गया कि राजनीति संबंधी पेड न्यूज का ताल्लुक केवल चुनावी गतिविधियों तक सीमित है, इसलिए इस मुद्दे पर जो कुछ करना है, वह चुनाव आयोग को ही करना है। लेकिन अभी तक चुनाव आयोग का दायित्व पेड न्यूज से नहीं जुड़ा है। भारत में साल 2000 से लेकर लोकसभा चुनाव 2014 तक पेड न्यूज के करीब डेढ़ हजार मामलों की शिकायत चुनाव आयोग से की जा चुकी है।

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Coordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

पेड न्यूज को रोकने की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि जो व्यक्ति पेड न्यूज के लिए पैसा दे रहा है और जो पैसा ले रहा है, इन दोनों में से कोई भी इस बात की पुष्टि नहीं करता कि उनके बीच किसी प्रकार का वित्तीय लेन-देन हुआ है। पाठक के पास कोई तरीका नहीं होता कि वह पता लगा ले कि कौन-सी खबर पेड न्यूज है।

कंपनियां अखबारों-चैनलों को विज्ञापन देने के साथ-साथ उनसे अपने उत्पादों की कवरेज भी चाहती हैं। इसके पीछे मूल वजह यही है कि पाठकों के मन में विज्ञापन के बजाय खबरों के प्रति ज्यादा गहरा भरोसा है। पेड न्यूज पर भारतीय प्रेस परिषद की रिपोर्ट, पी साईनाथ की रिपोर्ट देखी जा सकती है। मोटे तौर पर पेड न्यूज को इन हिस्सों में बांटकर देखा जा सकता है :

1. किसी समूह, राजनीतिक दल, उद्योग, संगठन या संस्थान को लाभ पहुंचाने के लिए धन लेकर एकपक्षीय समाचार प्रसारित-प्रकाशित करना।

2. किसी एक खास व्यक्ति, राजनीतिक दल या समूह अथवा उत्पाद के बारे में निरंतर सकारात्मक और प्रचारात्मक समाचार प्रसारित-प्रकाशित करना और उसी के समान अन्य मामलों की इरादतन अनदेखी करना।

3. विज्ञापनों को न्यूज की शक्ल में पाठकों के सामने रखना। न्यूज स्पेस के लिए पैसे लेकर उस स्थान पर प्रचारात्मक खबरों का प्रकाशन करना।

4. किसी एक व्यक्ति, समूह, राजनीतिक दल या कंपनी से पैसा लेकर प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ नकारात्मक खबरें प्रसारित-प्रकाशित करना।

5. किसी भी प्रकरण में एकपक्षीय और शरारतपूर्ण खबरें प्रकाशित करना और इनके बदले संबंधित पक्ष या पक्षों से पैसा लेना।

6. व्यावसायिक उत्पादों के मामले में पैसे लेकर ऐसी तुलनाएं प्रकाशित करना, जो सत्य के अनुरूप न हों।

7. ऐसी सभी खबरें जिनमें पैसा लेकर सत्य, निष्पक्षता, तटस्थता और तथ्यात्मकता की अनदेखी की गई हो।

समाचार उस रूप में उत्पाद नहीं है ... कार या चिप्स का पैकेट। समाचार के साथ ... का मूल्य और लोकतंत्र का भविष्य आबद्ध है। ... व्यक्ति की सोच को प्रभावित करने की ... रखता है और भविष्य के निर्धारण में भूमिका ... सकता है। इसलिए समाचार के संदर्भ में ... चिंता की जाती है। पत्रकारिता सिद्धांतों और ... से जुड़ा व्यवसाय है। यह व्यवसाय सत्य और ... पर टिका है, इन्हीं से उपजे विश्वास के ... इस व्यवसाय की बुनियाद कायम है। पेड न्यूज ... बुनियाद को ही धक्का पहुंचाता है।

सुशील उपाध्याय

अधिक जानकारी के लिए :
Naked Journalism : Sanjay Gaur, 2011

पेरियालवार

पेरियालवार कृष्णभक्त आलवार कवि ... मदुरई में जन्मे थे। उन्होंने तमिल साहित्य का गौरव बढ़ाया। उनकी कृति 'पेरियालवार तिरुमोलि' में 461 पद हैं। उन्होंने वैदिक दार्शनिक ... अस्वीकार कर कृष्णभक्ति का मार्ग चुना ... पेरियालवार ने कृष्ण की बाललीलाओं का ... विभोर होकर वर्णन किया है। यशोदा अपनी ... से कहती है, 'पालने पर छोड़ देने से कृष्ण ... प्रहार करते हैं कि उसके टूट जाने का डर ... गोद में उठाती हूं तो कमर तोड़ देता है। ... लगाती हूं तो पेट पर चोट करता है। मैं क्या ... (1.1.9)। पेरियालवार स्वयं यशोदा बनकर ... समय बछड़ों के पीछे भागने वाले बालक कृष्ण ... रूप-सौंदर्य निहारते हैं, 'कर्ण कुंडल से सुशोभित ... पर रक्तपुष्प धारण किए हुए, कटि पर पीतांबर ... वक्ष पर मुक्ता हार पहने नीले वर्ण वाले कृष्ण ... देखो, किस तरह बछड़े के पीछे भाग रहे हैं। ... की माता मैं ही हूं, कोई और नहीं। (3.3.1)। ... के धूलधूसरित शरीर का भी रोचक वर्णन हुआ है।

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(10)

दलित पत्रकारिता

वर्तमान दशा और दिशा

संपादक

डॉ. राम भरोसे

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(11)

दलित पत्रकारिता
वर्तमान दशा और दिशा

संपादक

डॉ. राम भरोसे

संजय प्रकाशन

नई दिल्ली (भारत)

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

संजय प्रकाशन
4378/4 बी-209, जे.एम.डी. हाउस
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 23245808, 41564415
मो. : 9313438740
E-mail : sanjayprakashan@yahoo.in

©

ISBN 978-81-946083-5-6

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : ₹ 750.00

शब्द संयोजन :
हर्ष कंप्यूटर्स
दिल्ली-110086

मुद्रक :
रोशन ऑफसेट प्रिंटर्स
दिल्ली-110053

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

12

अनुक्रम

सम्पादक की कलम से...	*5*
सवाल तो उठना ही था...	*11*
1. जातिभेद और असमानता के खिलाफ लड़ने का हथियार है आम्बेडकरी पत्रकारिता / *दामोदर मोरे*	19
2. सौ बरस की दलित पत्रकारिता / *डॉ. सुशील उपाध्याय*	26
3. सोशल मीडिया लेखन और इक्कीसवीं सदी का दलित वंचित समाज / *डॉ. कर्मानंद आर्य*	33
4. सोशल मीडिया का बहुजन समाज पर प्रभाव / *गोपाल*	44
5. निर्भीक संपादक डॉ. भीमराव अम्बेडकर और भारतीय पत्रकारिता / *डॉ. सातप्पा लहू चव्हाण*	53
6. हिंदी पत्रकारिता का दलित साहित्य के विकास में योगदान / *डॉ. उमा मीना*	61
7. दलित साहित्य, पत्रकारिता की भाव भूमि / *डॉ. नीरज कर्ण सिंह तथा प्रो. अशोक त्यागी*	72
8. दलित चिंतन का समाजवाद और पत्रकारिता / *डॉ. नीरज कर्ण सिंह तथा प्रीति सिंह*	82
9. दलित और सोशल मीडिया / *डॉ. चन्द्र प्रकाश*	93
10. मीडिया और वर्तमान बाजारवादी संस्कृति में महिलाओं की स्थिति / *डॉ. मीरा चौरसिया*	102
11. दलित पत्रकारिता द्वारा क्रांतिकारी परिवर्तन / *डॉ. श्याम मोहन पटेल*	109

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(13)

सौ बरस की दलित पत्रकारिता

डॉ. सुशील उपाध्याय

दलित पत्रकारिता का शताब्दी वर्ष है। अब से ठीक 100 साल पहले जनवरी, 1920 में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने मूकनायक अखबार का प्रकाशन आरंभ किया था। इसी प्रकाशन के साथ भारत में दलित पत्रकारिता का इतिहास विधिवत शुरू होता है। हालांकि, इससे पूर्व दलित पत्र-पत्रिकाएं 1877 से प्रकाशित हो रही थी। इन पत्र-पत्रिकाओं में निराश्रित हिंद नागरिक, मजूर पत्रिका, सोमवंशीय मित्र, अछूत, दीनमित्र, दीनबंधु आदि का प्रकाशन मूकनायक से पहले हो चुका था, लेकिन जब दलित पत्रकारिता की विधिवत पत्रकारीय धारा और परंपरा की बात करते हैं, तो वह मूकनायक से ही आरंभ मानी जाती है। वैसे, उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं ने दलित पत्रकारिता की नींव को मजबूत करने का कार्य किया।

डॉक्टर अंबेडकर ने मूकनायक के बाद बहिष्कृत भारत, जनता तथा प्रबुद्ध भारत जैसे महत्वपूर्ण अखबारों का भी प्रकाशन और संपादन किया। एक तरह से उनके द्वारा प्रकाशित एवं संपादित समाचार पत्रों ने दलित पत्रकारिता के भवन को खड़ा करना शुरू किया। यदि भारत की भाषायी पत्रकारिता के संदर्भ में देखें तो दलित पत्रकारिता लगभग 100 वर्ष बाद शुरू हुई। जिस समय दलित पत्रकारिता ने अपने शुरुआती कदम उठाने शुरू किए, उस समय भारत में भाषायी पत्रकारिता ठीक प्रकार से अपनी जड़ें जमा चुकी थी।

यदि इन दोनों प्रकार की पत्रकारिता के उद्देश्यों को देखें तो मुख्यधारा की भारतीय पत्रकारिता का उद्देश्य देश को अंग्रेजों से आजाद कराना था, जबकि दलित पत्रकारिता का पहला उद्देश्य भारत के उन करोड़ों शोषितों-वंचितों और दलितों को नागरिक होने का अधिकार दिलाना मुख्य लक्ष्य था। डॉक्टर अंबेडकर

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt Haridwar Uttarakhand

14

NATIONAL EDUCATION POLICY 2020

PERSPECTIVES AND PROSPECTS

Edited by

Dr. Yatish Vashist • Dr. Kiran Bala • Dr. Rajesh Naithani

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

15

National Education Policy 2020

(Perspectives and Prospects)

Edited by:

Dr. Yatish Vashist
Dr. Kiran Bala
Dr. Rajesh Naithani

Pacific Books International

Chaman Lal Mahavidhyalaya • I.Q.A.C. Coordinator • Landhaura (Haridwar) •

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(16)

16. National Education Policy 2020: A Holistic Approach to Education System in India 236

—Nidhi Singh

17. भारत की नई शिक्षा नीति : शिक्षण संस्थानों के लिए नए युग का आरम्भ 258

–डॉ. आश्विन फर्नांडिस

18. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं शिक्षक 266

–डॉ० आनन्द भारद्वाज

19. अनुवाद बना नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधर स्तंभ 277

–प्रोफेसर पूरनचंद टंडन

20. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य 282

–डॉ० किरन बाला

21. राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 एवं संस्कृतः एक परिशीलन 295

–डॉ. विनोद कुमार गुप्त

22. नई शिक्षा नीतिः संभावनाएं और चुनौतियां 307

–डॉ. सुशील उपाध्याय

23. भारतीय शिक्षा का बदलता स्वरूप और नई शिक्षा नीति 314

–डॉ० एम०एस० गुसांई, डॉ० अनुराधा गुसांई

24. नई शिक्षा नीति 2020 के प्रावधनों का विवेचनात्मक समीक्षा 329

–डॉ. प्रकाश लखेड़ा, डॉ. कल्पना पाटनी लखेड़ा

25. नई शिक्षा नीतिः भारत निर्माण की मजबूत आधरशिला 340

–प्रो. प्रतिभा नैथानी

26. नई शिक्षा नीति में बालकों के लिए प्रावधन पर एक सामाजिक अध्ययन 345

–डॉ. हेमलता मासीवाल

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

19

22

नई शिक्षा नीतिः संभावनाएं और चुनौतियां

डॉ. सुशील उपाध्याय

प्राचार्य, चमनलाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

लंढौरा, हरिद्वार, पूर्व उप निदेशक, उत्तराखंड भाषा संस्थान

शिक्षा अक्षर ज्ञान प्राप्त करने या डिग्रियां हासिल कर लेने से कहीं ज्यादा बड़ी अवधारणा है। शिक्षा वस्तुतः आदमी को सभ्य, जागरूक और विवेकवान मनुष्य बनाने की प्रक्रिया का नाम है। शिक्षा सतत रूप से सीखने और सीखे हुए को अपने दैनिक तथा सामाजिक जीवन में प्रयोग मे लाने की प्रक्रिया भी है। मोटे तौर पर शिक्षा का अर्थ होता है, सीखने एवं सिखाने की परिणामपरक क्रिया। लेकिन, इसके व्यापक अर्थ को देखें तो शिक्षा किसी भी समाज में निरंतर चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है, जिसका एक विशिष्ट उद्देश्य होता है। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास तथा बाह्य व्यवहार को परिष्कृत किया जाता है। प्राचीन भारत में शिक्षा को राज्य के नियंत्रण से मुक्त रखा गया था, लेकिन समय और आवश्यकताओं के बदलाव के दृष्टिगत शिक्षा को सांस्थानिक ढांचे के अंतर्गत लाया गया और इसे सरकारों के अधीन कर दिया गया। इस प्रक्रिया में शिक्षा विशिष्ट वर्गों के दायरे से निकलकर आम लोगों की पहुंच मे आ गई।

आजादी के बाद भारत में शिक्षा के स्वरूप के निर्धारण के लिए कई प्रयास हुए हैं। इन प्रयासों के माध्यम से भारतीय शिक्षा को पश्चिमी शिक्षा के अंधानुकरण से मुक्त करने और भारतीय राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप शिक्षातंत्र विकसित करने की कोशिश की गई। भारत में 1986 की शिक्षा नीति को कंप्यूटरीकरण और प्रौद्योगिकी की दिशा में आगे बढ़ने के बड़े लक्ष्य को

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidyalaya • I.Q.A.C. Coordinator • Landhaura (Haridwar)

(18)

National Education Policy 2020
(Perspectives and Prospects)

© **Dr. Yatish Vashist; Dr. Kiran Bala; Dr. Rajesh Naithani**

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer and publisher.

First Published 2021

ISBN : 978-81-949776-4-3

The opinions/views expressed in this book are solely of the authors and do not represent the opinions/standings/thoughts of Pacific Books International and Editors.

Published by :
Pacific Books International
108, First Floor, 4832/24, Prahlad Street,
Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi - 110 002
Ph.: 011-23268444, Mob.: 9212526400
e-mail: pacificbooks@rediffmail.com
pacificbooksinternational@gmail.com
Website: www.pacificbooksinternational.com

Typesetting by :
Sanya Computers
Delhi

Printed at :
Balaji Digital
Delhi

Printed in India

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

19

दक्षिण एशिया की राजनैतिक एवं सामासिक संस्कृति में भारत की भूमिका

| डॉ. नीशू कुमार |

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

20

दक्षिण एशिया की राजनैतिक एवं सामासिक संस्कृति में भारत की भूमिका

संपादक

डॉ. नीशू कुमार

सहायक आचार्य/अध्यक्ष

राजनीति विज्ञान विभाग,

चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौर,

हरिद्वार, उत्तराखण्ड

नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

२१

ISBN : 978-81-949514-7-6

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
: +9315194807, 9968082809
: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-110094

मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-110032

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने है।

Dakshin Asia Me Rajnetik Evam Samasik Sanskriti Me Bharat ka Yogdhan

by Dr. Nishu Kumar

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(22)

अनुक्रमणिका

भूमिका v

1. भारत के दक्षिण एशिया में राजनीतिक व कूटनीतिक संबंध : सार्क संगठन के संदर्भ में 1
डॉ. नीशू कुमार
अनुज कुमार भड़ाना

2. सामासिक संस्कृति के वाहक : सम्राट अशोक, अकबर एवं गाँधी 7
डॉ. प्रतीत कुमार

3. दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) में भारत की भूमिका 13
डॉ. आनन्द नन्द त्रिपाठी

4. दक्षिण एशिया में भारत की भूमिका : एक अवलोकन 18
अनुपमा तोमर

5. दक्षिण एशिया में गरीबी व अशिक्षा के शमन में भारत की भूमिका 26
बुद्धिराम
देवकरन

6. भारत में छोटे हथियारों का प्रसारः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 34
डॉ. कमलेश चन्द्र पाण्डेय

7. दक्षिण एशिया में आतंकवाद एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 42
डॉ. हिमांशु यादव
डॉ. हेमन्त कुमार सिंह

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

23

8. दक्षिण एशिया में आतंकवाद और भारतीय सुरक्षा पर इसका प्रभाव 48
महेश जगोठा

9. ''दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एवं विकास में भारत की भूमिका'' 57
तीर्थ प्रकाश
एकता चौहान

10. भारत और चीन के बीच बफर स्टेट (भूटान एवं नेपाल) के विशेष संदर्भ में 61
पंकज कुमार

11. लोकसभा चुनाव 2019 मतदान का अध्ययन, राष्ट्रीय मुद्दों के संदर्भ में 67
डॉ. प्रकाश चन्द्र

12. नागरिकता संशोधन कानून - 2019 तथ्य एवं वास्तविकता: एक अवलोकन 73
डॉ. प्रियंका अग्रवाल

13. साँझा संस्कृति का स्वप्न एवं दक्षिण एशिया बरास्ता साहित्य की परंपरा 81
डॉ. विपिन कुमार शर्मा

14. भारतीय राजनीति में महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिका (मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ में) 91
डॉ. नियाज अहमद अन्सारी
रिन्चू राय

15. भारत में महिला मानवाधिकार : एक विश्लेषण 98
डॉ. कविता पाठक

16. दक्षिण एशिया में सांस्कृतिक राजनय ही शांति का आधार 105
डॉ. राकेश राणा
नवीन कुमार

17. भारत-चीन : संभावनाएं और चुनौतियाँ 110
डॉ. उदय पाल सिंह

18. दक्षिण एशिया में आतंकवाद : कारण एवं निवारण 114
डॉ. जगमोहन सिंह नेगी

19. भारत की पड़ोसी देशों के प्रति विदेश नीति: एक अवलोकन 119
कुलदीप कुमार

20. श्रीलंका में बौद्ध धर्म के प्रसार में प्राचीन भारत का योगदान 127
अन्जू लता श्रीवास्तव

21. दक्षिण एशिया में आतंकवाद और भारतीय सुरक्षा पर इसका प्रभाव 132
महेश जगोठा

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(24)

22. दक्षिण एशिया में आतंकवाद : एक चुनौती 141
मनीष कुमार

23. भारत व भूटान के मध्य सहयोगात्मक सम्बन्धों की महत्ता का विश्लेषण 144
डॉ. निभा राठी

24. भारतीय महिला सुरक्षा में मानवाधिकारों की भूमिका:- समीक्षात्मक अध्ययन 148
प्रीति

25. भारत को महाशक्ति के रूप में स्थापित होने में निर्देशन का महत्व 153
रंजिता उनियाल

26. प्राचीन भारतीय राजनीति-प्रशासन एवं स्त्रियाँ-एक दृष्टि 159
डॉ. रेखा राजपूत

27. भारत श्रीलंका सम्बन्धों में तमिल समस्या : एक अवलोकन 168
सोनिका नागर

28. दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एवं विकास में भारत की भूमिका 173
डॉ. सुगंधा सिंह

29. वर्तमान भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में भीष्म साहनी के नाटक 179
डॉ. दीपिका शर्मा

30. वैश्वीकरण कल आज और कल 184
नैन सिंह

31. भारत के पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव 190
रमणीक कौर

32. भारत की राजनीति और साम्प्रदायिक संदरब में भीष्म साहनी का उपन्यास तमस 201
रवि कुमार

33. भीष्म साहनी के नाटक मुआवज़े में सामाजिक राजनीतिक अभिव्यक्ति 216
सईदा मेहराज

34. भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में कमलेश्वर का कितने पाकिस्तान 225
शालू जमोरिया

35. भीष्म साहनी का उपन्यास तमस और साम्राज्यवाद : एक विश्लेषण 229
शीतल बनाथिया

36. भूमंडलीकरण और राजनीति जल जीवन के परिप्रेक्ष में 237
तन्नू शर्मा

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(25)

37. भूमंडलीकरण का वर्तमान दौर और हिंदी सिनेमा 240
डॉ. कमलजीत कोर

38. वैश्वीकरण और भारत की अर्थव्यवस्था : एक अवलोकन 247
पूनम वर्मा
संदीप के. पोसवाल

39. The Politics Over Terrorism in India - India Should Circumspect Jihadist Coercions and Seek Challenges and Legislation for its Deterrence 250
Dr. Sarveshwar Pande

40. The Role of India in Political Stability and Development in South Asia 270
Saroj Joshi

41. Ramayana; as a Common Heritage Between India and Southeast Asian Nations 278
Dr. Prabhakar Tyagi

42. India Rise As A Great Power: Regional And Global Strata 285
Pooja Kishore

43. Citizenship Amendment Act: Myth and Reality 289
Dr. Manoj Kumar Tripathi
Ms. Saloni Ahalawat

44. Impact of Terrorism in South Asia 301
Kavita

45. Constitutionality of Discrimination in Favour of Women in Matter Relating to Admission and Administrative Privileged 309
Anil Kumar

46. Role of Inclusive Growth/Development in Indian Economy 316
Dr. Ajit Singh
Mukesh Masih

47. India's Presence in South Asia: as a Regional Power 322
Prerna Kainthola

48. Indian South Asian Policy: Oil Politics and New Role in Islamic Diplomacy 333
Dr. Priti

49. Sri Lankan Civil War and India: The Diplomatic Stand 340
Monica Tamta

50. Role of India in Political Stability and Development in South Asia 347
Umesh Chand

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

26

51. **The Hegemonic Assertion of India in the Making of the Asian Century** 355

Dr. Ketki Tara Kumaiyan

52. **India's Role in South Asia Trade** 364

Dr. Devpal

Dr. Kiran Sharma

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

27

52.

India's Role in South Asia Trade

Dr. Devpal*

Dr. Kiran Sharma**

Introduction

South Asia comprises Bangladesh, Bhutan, India, the Maldives, Nepal, Pakistan and Sri Lanka. Afghanistan is the newest member of the regional bloc, having joined the SAARC in 2005. Despite common heritage, history, linguistic, cultural and social practices shared by these nations, South Asia has emerged as the least integrated region in the world. South Asia is distinctly characterized by complex security issues, multiple inter-state disputes and yet a high untapped economic potential. The challenges faced by the region are based deep rooted and historic differences. Consequently political issues and conflicts have not allowed economic and strategic interests to take precedence in

*Assistant Professor, Department of Commerce, Chaman Lal Mahavidyalya, Landhaura, Roorkee District Haridwar.

** Assistant Professor, Department of Commerce, Chaman Lal Mahavidyalya, Landhaura, Roorkee District Haridwar.

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

28

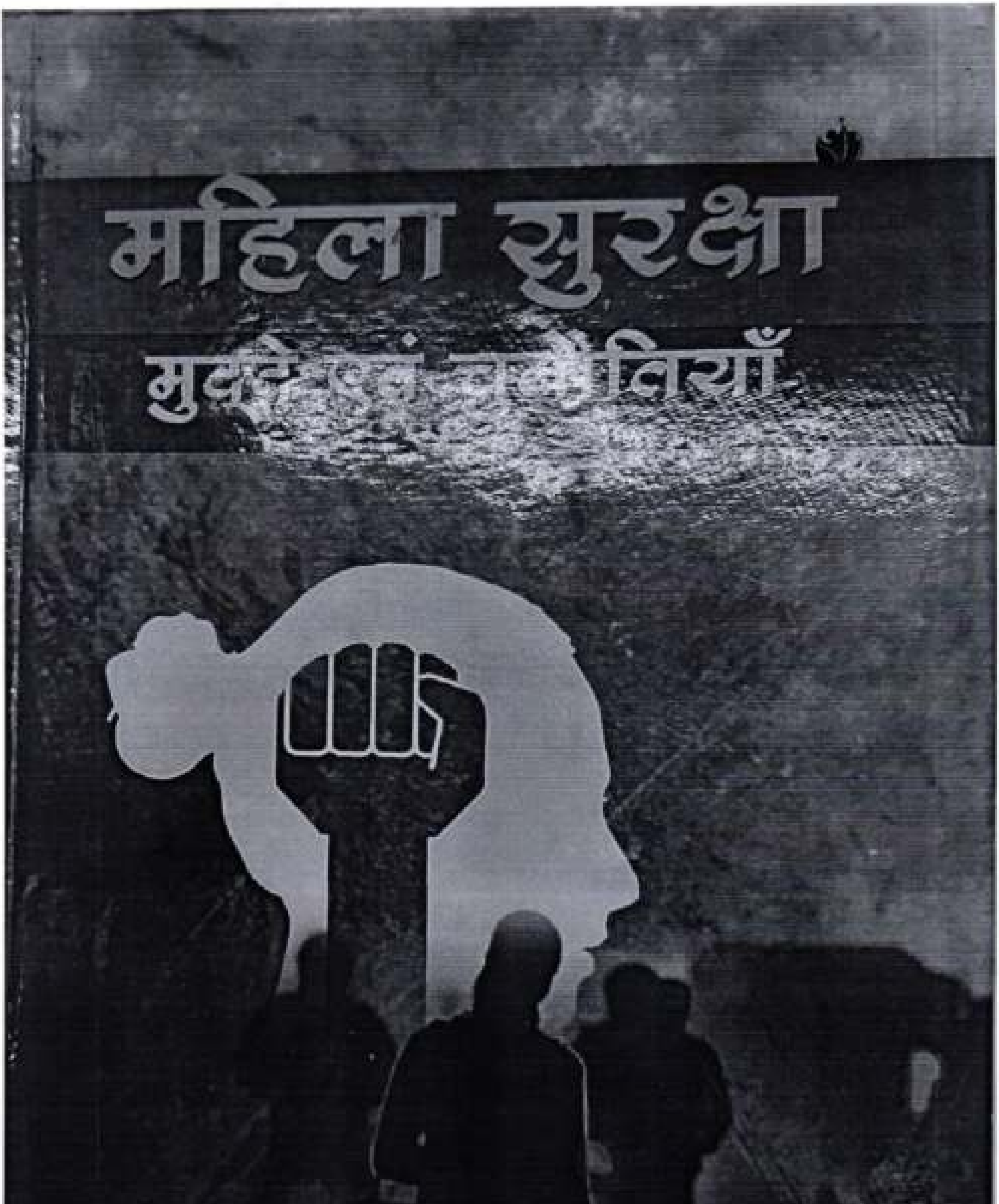

Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(29)

महिला सुरक्षा
मुद्दे एवं नीतियां

नालंदा प्रकाशन
दिल्ली

Cordinator
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt-Haridwar, Uttarakhand

30

ISBN : 978-81-940315-3-6

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
[illegible] विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : [illegible]
[illegible]@gmail.com

प्रथम संस्करण - 2019
अक्षर संयोजक
दीपिका शर्मा दिल्ली-94
मुद्रक
[illegible] दिल्ली-32

Mahila Suraksha : Mudde Evam Chunautinya
[illegible]

[illegible] Coordinator [illegible] Landhaura (Haridwar) [illegible]

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(3)

अनुक्रमणिका

1. 21वीं शताब्दी की भारतीय महिला, एक अध्ययन: सामाजिक, एवं आर्थिक सन्दर्भ में — 1
   डॉ० नीशू कुमार
   अनुज कुमार भड़ाना
2. भारत में जातिगत राजनीति के मध्य साम्प्रदायिक अन्तर्सम्बन्ध और महिलाएँ — 7
   डॉ० विक्रम सिंह
3. महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा : एक आवश्यकता — 19
   डॉ० किरन शर्मा
4. 21वीं सदी में महिलाओं के प्रतिवाद यौन अपराध व समस्यायें — 22
   डॉ० मीरा चौरसिया
5. भारतीय समाज में महिलाओं की समस्यायें बनाम सशक्तिकरण — 27
   विशाल कुमार लोधी
   अंजू त्यागी
6. महिला सुरक्षा एवं कानूनी प्रावधान — 35
   [illegible]
   [illegible]
7. [illegible] हिंसा और सामाजिक समस्या — 41
   [illegible]
8. [illegible] मानवतावादी दृष्टिकोण — 44
   [illegible]
9. [illegible] नारी जीवन : संघर्ष का पर्याय — 50
   [illegible]
10. [illegible] जीवन का सामाजिक यथार्थ — 58
   [illegible]

Cordinator
Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

32

11. स्त्री विमर्श का वैदिक स्वरूप 62
डा. दुर्गा जैन
12. कृषि में महिला सहभागिता (हरिद्वार जिले के सन्दर्भ में) 67
विमल कान्त तिवारी
डॉ० नवीन कुमार
13. कामकाजी महिलाओं की भारतीय समाज में भूमिका 71
ज्योति
14. समकालीन हिंदी कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री जीवन : समस्याएँ एवं चुनौतियाँ 76
योगेन्द्र सिंह
आशुतोष शर्मा
15. महिलाएं एवं वैधानिक प्रावधान : एक विश्लेषण (सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पक्ष) 84
पंकज कुमार
16. वर्तमान में डगमगाती महिला सुरक्षा : एक चिंतन 96
सुशील कुमार
17. भारतीय इतिहास में महिलाओं की बदलती सामाजिक स्थिति 100
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा
18. स्त्रीत्व शोषण का सशक्त दस्तावेज 'तुम्हारा सुख' 106
रवि कुमार
19. महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण : सूचना, साक्षरता की भूमिका 110
राजवीर सिंह
संदीप के. पोसवाल
20. महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण: सूचना एवं साक्षरता की भूमिका 116
महेश कुमार सहगल
21. उत्तराखण्ड राज्य में घरेलू कामकाजी महिलाओं की जीवन शैली का बदलता स्वरूप एवं संघर्षशील भूमिका 122
डॉ० जितेन्द्र कुमार
22. वर्तमान में महिलाओं के विकास में परम्परागत तर्कों की बाधाएं एवं महिलाओं का भविष्य 129
सुश्री [illegible] प्रसाद
23. वर्तमान परिदृश्य : स्त्री सुरक्षा समस्या एवं चुनौतियाँ 140
डॉ० [illegible] कुमार

Coordinator ... Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

24. कानून-व्यवस्था के संदर्भ में महानगरीय स्तर पर उभरती हुई समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में पुलिस-प्रशासन की भूमिका: पश्चिमी उ०प्र० के मेरठ महानगर का एक अध्ययन 145
ज्योति

25. महिला समस्याएं एवं अधिकार 150
डॉ० प्रताप कुमार
डॉ० नीरजा चौधरी

26. Provision of Constitutional Safeguards For Women Security And Role of Security Apps.- And Security Centres 157
Dr. Manveen kaur
Dr. Rachna Gupta

27. Domestic Violence Act 2005: A Socio Legal Step Towards Upholding The Rights of Women" 166
Dr. Devpal
Dr. Sushma Bhatt Thaledi

28. Women Empowerment In 21st Century India 172
Dr. Ananda Nand Tripathi

29. Sexual Harassment of Women at Workplace: A Bitter Consequences of 21st Century 178
Kumari Mamta
Kumar Rahul
[illegible]
[illegible]

30. The Impact of Gendered Role on Women's Mental Health 185
[illegible]

31. Women's place In Rural Indian Society 192
[illegible]

32. "Measures Of Government For Economic Empowerment Of Women" 198
[illegible]

Principal
Lal Mani Mahavidyalaya
Landhaura Distt -Haridwar, Uttarakhand
Coordinator
Landhaura (Haridwar)

27

Domestic Violence Act 2005: A Socio Legal Step Towards Upholding "The Rights of Women"

Dr. Deepak*
Dr. Sushma Bhatt Thaledi**

Violence against women from womb to tomb is well known, the place, time, age, language, culture has no bearing on it. According to the U.N. Report every 6 minutes a women is subjected to violence in India. The reasons/causes are many like domestic violence is attributed to the gender role that is expected from a woman. In India where marriage is meant to be union of souls generally also means that the women will bring dowry from her parent's home. Hence dowry related violence is always perpetuated against women the inclusion of dowry related violence as Sec. 498A and 304B of the Indian Penal Code is a proof how once a custom of an Indian Society can chance into a crime. Another example of gender related offence is adultery under section 497 of India Penal Code, which is crime against the husband of the women involved, and the wife cannot be held as an abettor. When crime assumes the character of being gender biased the chances of it being abuse increases. The Act is significant because for the first time, the term 'Domestic Violence' has been widened in the meaning and scope from culture specific restriction of dowry deaths and penal provision to positive civil rights of protection. The passing of the Domestic Violence Act is an important marker in the history of women's movement in India, which has confronted the problem of violence for well over two decades. Domestic Violence is a widely prevalent and universal problem power relationship more than the culture specific phenomenon called 'Dowry Death'.

From these experiences many concluded that what was the needed were stringent laws. By comparison, for less importance was given to figuring out

* Assistant Prof. Deptt. of Commerce Chuman lal PG College Landhura Roorki
** Assistant Prof. Deptt. B.Ed Kot Dwara PG College

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

दक्षिण एशिया की राजनैतिक एवं सामासिक संस्कृति में भारत की भूमिका

डॉ. नीशू कुमार

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

38

दक्षिण एशिया की राजनैतिक एवं सामासिक संस्कृति में भारत की भूमिका

संपादक
डॉ. नीशू कुमार
सहायक आचार्य/अध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग,
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा,
हरिद्वार, उत्तराखण्ड

नालंदा प्रकाशन
दिल्ली

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

39

ISBN : 978-81-949514-7-6

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
[illegible] दिल्ली-110053
[illegible]
[illegible]

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर संयोजक
[illegible] दिल्ली-110094

मुद्रक
[illegible] दिल्ली-110032

[illegible] लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग [illegible] किसी भी रूप में [illegible] इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने हैं।

[illegible] Asia Me Rajnetik Evam Samasik Sanskriti Me Bharat ka Yogdban

Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

40

अनुक्रमणिका

भूमिका — *v*

1. भारत के दक्षिण एशिया में राजनीतिक व कूटनीतिक संबंध : सार्क संगठन के संदर्भ में — 1
   डॉ. नीशू कुमार
   अनुज कुमार भड़ाना
2. सामासिक संस्कृति के वाहक : सम्राट अशोक, अकबर एवं गाँधी — 7
   डॉ. प्रतीत कुमार
3. दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) में भारत की भूमिका — 13
   डॉ. [illegible] चन्द्र त्रिपाठी
4. दक्षिण एशिया में भारत की भूमिका : एक अवलोकन — 18
   [illegible]
5. दक्षिण एशिया में गरीबी व अशिक्षा के शमन में भारत की भूमिका — 26
   [illegible]
   [illegible]
6. भारत में छोटे हथियारों का प्रसार: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन — 34
   [illegible]
7. दक्षिण एशिया में आतंकवाद एक विश्लेषणात्मक अध्ययन — 42
   [illegible]
   [illegible]

Cordinator
Landhaura (Haridwar)
Principal
…Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Handwar, Uttarakhand

41

8. दक्षिण एशिया में आतंकवाद और भारतीय सुरक्षा पर इसका प्रभाव 48

महेश जगोठा

9. ''दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एवं विकास में भारत की भूमिका'' 57

तीर्थ प्रकाश

एकता चौहान

10. भारत और चीन के बीच बफर स्टेट (भूटान एवं नेपाल) के विशेष संदर्भ में 61

पंकज कुमार

11. लोकसभा चुनाव 2019 मतदान का अध्ययन, राष्ट्रीय मुद्दों के संदर्भ में 67

डॉ. प्रकाश चन्द्र

12. नागरिकता संशोधन कानून - 2019 तथ्य एवं वास्तविकता: एक अवलोकन 73

डॉ. प्रियंका अग्रवाल

13. साँझा संस्कृति का स्वप्न एवं दक्षिण एशिया बरास्ता साहित्य की परंपरा 81

डॉ. विपिन कुमार शर्मा

14. भारतीय राजनीति में महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिका (मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ में) 91

डॉ. नियाज अहमद अन्सारी

रिन्नू राय

15. भारत में महिला मानवाधिकार : एक विश्लेषण 98

डॉ. कविता पाठक

16. दक्षिण एशिया में सांस्कृतिक राजनय ही शांति का आधार 105

डॉ. [illegible]

[illegible]

17. भारत-चीन : संभावनाएँ और चुनौतियाँ 110

डॉ. [illegible] सिंह

18. दक्षिण एशिया में आतंकवाद : कारण एवं निवारण 114

डॉ. [illegible] सिंह नेगी

19. भारत की पड़ोसी देशों के प्रति विदेश नीतिः एक अवलोकन 119

[illegible]

20. श्रीलंका में बौद्ध धर्म के प्रसार में प्राचीन भारत का योगदान 127

[illegible]

21. दक्षिण एशिया में आतंकवाद और भारतीय सुरक्षा पर इसका प्रभाव 132

[illegible]

Principal

[illegible]

Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

42

22. दक्षिण एशिया में आतंकवाद : एक चुनौती — 141
मनीष कुमार

23. भारत व भूटान के मध्य सहयोगात्मक सम्बन्धों की महत्ता का विश्लेषण — 144
डॉ. निभा राठी

24. भारतीय महिला सुरक्षा में मानवाधिकारों की भूमिका:- समीक्षात्मक अध्ययन — 148
प्रीति

25. भारत को महाशक्ति के रूप में स्थापित होने में निर्देशन का महत्व — 153
रजिता उनियाल

26. प्राचीन भारतीय राजनीति-प्रशासन एवं स्त्रियाँ-एक दृष्टि — 159
डॉ. रेखा राजपूत

27. भारत श्रीलंका सम्बन्धों में तमिल समस्या : एक अवलोकन — 168
सोनिका नागर

28. दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एंव विकास में भारत की भूमिका — 173
डॉ. सुगंधा सिंह

29. वर्तमान भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य मैं भीष्म साहनी के नाटक — 179
डॉ. दीपिका शर्मा

30. वैश्वीकरण कल आज और कल — 184
नैन सिंह

31. भारत के पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव — 190
रमणीक कौर

32. भारत की राजनीति और साम्प्रदायिक संदर्भ में भीष्म साहनी का उपन्यास — 201
[illegible]

33. भीष्म साहनी के नाटक मुआवज़े में सामाजिक राजनीतिक अभिव्यक्ति — 216
[illegible]

34. भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में कमलेश्वर का कितने पाकिस्तान — 225
[illegible]

35. भीष्म साहनी का उपन्यास तमस और साम्राज्यवाद : एक विश्लेषण — 229
[illegible]

36. [illegible] और राजनीति जल जीवन के परिप्रेक्ष्य में — 237
[illegible]

Coordinator IQAC, Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

43

37. भूमंडलीकरण का वर्तमान दौर और हिंदी सिनेमा 240
डॉ. कमलजीत कौर

38. वैश्वीकरण और भारत की अर्थव्यवस्था : एक अवलोकन 247
पूनम वर्मा
सदीप के. पोसवाल

39. The Politics Over Terrorism In India - India Should Circumspect Jihadist Coercions and Seek Challenges and Legislation for its Deterrence 250
Dr. Sarveshwar Pande

40. The Role of India in Political Stability and Development in South Asia 270
Saroj Joshi

41. Ramayana; as a Common Heritage Between India and Southeast Asian Nations 278
Dr. Prabhakar Tyagi

42. India Rise As A Great Power: Regional And Global Strata 285
Pooja Kishore

43. Citizenship Amendment Act: Myth and Reality 289
Dr. Manoj Kumar Tripathi
Ms. Saloni Ahalawat

44. Impact of Terrorism in South Asia 301
Kavita

45. Constitutionality of Discrimination in Favour of Women in Matter Relating to Admission and Administrative Privileged 309
Anil Kumar

46. Role of Inclusive Growth/Development in Indian Economy 316
Dr. Ajit Singh
Mukesh Masih

47. India's Presence in South Asia: as a Regional Power 322
Prerna Kainthola

48. Indian South Asian Policy: Oil Politics and New Role in Islamic Diplomacy 333
Dr. Jyoti

49. Sri Lankan Civil War and India: The Diplomatic Stand 340
Monica Tamta

50. Role of India in Political Stability and Development in South Asia 347
Umesh Chand

Cordinator
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

44

51. The Hegemonic Assertion of India in the Making of the Asian Century 355
Dr. Keiki Tara Kumaiyan

52. India's Role in South Asia Trade 364
Dr. Devpal
Dr. Kiran Sharma

53. India Leadership Skills in South Asia 375
Dr. Alka Tomer

54. Sino-India Relations and the Role of Buffer States: A Critical Study 384
Rahul Singh

Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

45

52.

India's Role in South Asia Trade

Dr. Devpal*

Dr. Kiran Sharma**

Introduction

South Asia comprises Bangladesh, Bhutan, India, the Maldives, Nepal, Pakistan and Sri Lanka. Afghanistan is the newest member of the regional bloc, having joined the SAARC in 2005. Despite common heritage, history, linguistic, cultural and social practices shared by these nations, South Asia has emerged as the least integrated region in the world. South Asia is distinctly characterized by complex security issues, multiple inter-state disputes and yet a high untapped economic potential. The challenges faced by the region are based deep rooted and historic differences. Consequently political issues and conflicts have not allowed economic and strategic interests to take precedence in

* Assistant Professor, Department of Commerce, Chaman Lal Mahavidyalya, Landhaura, Roorkee District Haridwar.

** Assistant Professor, Department of Commerce, Chaman Lal Mahavidyalya, Landhaura, Roorkee District Haridwar.

IQAC Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

46

Landhaura (Haridwar)
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(45)

वीर सावरकर

व्यक्तित्व और कृतित्व : एक विश्लेषण

नालंदा प्रकाशन
दिल्ली

Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(48)

वीर सावरकर

व्यक्तित्व और कृतित्व : एक विश्लेषण

संपादक

डॉ. नीशू कुमार

सहायक आचार्य/अध्यक्ष

राजनीति विज्ञान विभाग,

चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा

हरिद्वार, उत्तराखण्ड

नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

Cordinator

Landhaura (Haridwar)

Principal

Chaman Lal Mahavidhyalaya

Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

49

ISBN : 978-81-949514-1-4

© संपादक

प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

☎ : +9315194807, 9968082809

✉ : nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण - 2021

अक्षर संयोजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-110094

मुद्रक

[illegible] इंटरप्राइजेज, दिल्ली-110032

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में प्रकाशित विचार लेखक के अपने हैं।

Veer Savarkar Vlyaktitv aur Kratitiv : Ek Vishleshan

by- Dr. Nishu Kumar

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Cordinator

अनुक्रमणिका

भूमिका [illegible]

1. वीर सावरकर का चिन्तन पृष्ठभूमि एवं प्रासंगिकता के आधार : एक विश्लेषण — 1
   डॉ. नीशू कुमार
2. क्रान्तिकारी आन्दोलन में वीर सावरकर की भूमिका — 8
   डॉ. पूनम
3. सावरकर : एक राजनीतिक विमर्श स्वीकृति एवं प्रासंगिकता — 14
   डॉ. तीर्थ प्रकाश
4. सावरकर का हिन्दुत्व चिंतन : व्यापक सांस्कृतिक तत्वों का समावेश — 20
   डॉ. संतोष कुमार सिंह
5. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में वीर सावरकर के योगदान का मूल्यांकन — 26
   डॉ. प्रशान्त कुमार
   डॉ. [illegible] कुमार राय
6. [illegible] के व्यक्तित्व और कृतित्व का समग्रता में मूल्यांकन — 37
   [illegible]
7. [illegible] का हिन्दुत्व : एक अवलोकन — 45
   [illegible]
8. [illegible] : हिन्दुत्व और हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा — 49
   [illegible]
9. [illegible] — 54
   [illegible]

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

51

10. वीर सावरकर और महात्मा गांधी : एक तुलनात्मक अध्ययन 58

डॉ. देवपाल

डॉ. अनुराग शर्मा

11. विनायक दामोदर सावरकर की राष्ट्रवाद की अवधारणा : एक विश्लेषण 64

डॉ. विक्रम सिंह

डॉ. मीनू देवी

12. विनायक दामोदर सावरकर : एक आदर्श चरित्र 70

डॉ. अनुपम त्यागी

13. हिन्दुत्व के पुरोधा एवं स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर 75

विशाल कुमार लोधी

14. राष्ट्रीय आंदोलन में वीर सावरकर का योगदान 82

महेन्द्र कुमार

15. वीर सावरकर : एक महानतम् क्रांतिकारी 88

आशीष रावत

16. सावरकर और हिन्दुत्व, हिन्दू और राष्ट्रत्व की संकल्पना 92

डॉ. प्रकाश चन्द

17. भारतीय बहुलवादी समाज में सावरकर के विचारों का पक्ष – विपक्ष में एक अध्ययन 95

प्रीति कुमारी

18. सावरकर : राष्ट्रवादी एवं क्रान्तिकारी विचारक 105

प्रमोद कुमार

19. प्रखर राष्ट्रवादी वीर सावरकर : एक अध्ययन 111

डॉ. सुरेखा सिंह

20. सावरकर का हिन्दुत्व : एक अध्ययन 114

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

21. सावरकर की सामाजिक – राजनीतिक चेतना में हिन्दुत्व बोध 118

गौरव सिंह

22. सावरकर एवं हिन्दू राष्ट्रवाद की अवधारणा 127

ज्योति

23. स्वा. वि. दा. सावरकर जी द्वारा लिखित कविताओं में विविध विषयों की समीक्षा 131

डॉ. केदार रविंद्र [illegible]

Coordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

24. सावरकर एक समाज सुधारक एवं भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों का परम्पराओं एवं रूढ़िवादिता के सन्दर्भ में मूल्यांकन 138

उमेश चन्द

25. वीर सावरकर : वैचारिक दर्शन एवं प्रासंगिकता 146

विवेक मिश्र

26. विनायक दामोदर सावरकर अवसरगामी नायक के रूप में : एक अध्ययन 152

डॉ. शिखा जैन

27. राष्ट्रीय आन्दोलन में वीर सावरकर का कृत्यावलोकन 159

डॉ. संदीप कुमार

28. महामानव वीर सावरकर एवं सन् सत्तावन 164

डॉ. रुकमेश चौहान

29. विनायक दामोदर सावरकर एवं हिन्दू राष्ट्रवाद की अवधारणा 168

डॉ. एम.एस. गुँसाई

संजय गिरि

30. राष्ट्रवाद के अग्रदूत वीर सावरकर : एक अवलोकन 172

नवीन कुमार

शीतल

31. वीर सावरकर : विचार और दर्शन 176

पंकज कुमार

32. वीर सावरकर के उपन्यासों का अध्ययन 182

डॉ. मीरा चौरसिया

विपिन कुमार

33. वीर सावरकर : एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व 189

गंगादास सिंह

34. सावरकर के राष्ट्र दर्शन का सांस्कृतिक अध्ययन 198

[illegible]

35. वीर सावरकर का दार्शनिक मूल्यांकन 205

[illegible]

36. सावरकर : एक राजनीतिक एवं सामाजिक विमर्श 210

[illegible] प्रदीप

37. स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर एक क्रान्तिकारी : अण्डमान निर्वासन (काला पानी) 215

[illegible] शर्मा

Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(53)

38. वीर सावरकर कुछ अनछुए पहलू 221
डॉ. मोनू सिंह

39. विनायक दामोदर सावरकर एक हिन्दुत्ववादी बौद्धिक नेतृत्व के रूप में 227
डॉ. निभा राठी

40. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में विनायक दामोदर सावरकर का योगदान : हिन्दुत्व के सन्दर्भ में 233
डॉ. राखी सिंह

41. विनायक दामोदर की हिन्दुत्व अवधारणा के सम्बन्ध में विचार 239
डॉ. शशी प्रभा

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

10.

वीर सावरकर और महात्मा गाँधी : एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. देवपाल*

डॉ. अनुराग शर्मा**

परिचय

वीर सावरकर और महात्मा गाँधी स्वातंत्र्य के दो ऐसे नायक हैं, जिनका अपना-अपना महत्व है। गाँधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सत्य, अहिंसा, प्रेम और बंधुत्व को आधार बनाकर आगे बढ़ना चाहते थे। निश्चित रूप से उनके ये गुण अत्यंत पवित्र थे और कुछ ऐसे थे कि जिन पर अमल करते हुए गाँधी को देखकर सारे विश्व को ही गौरव होना चाहिए था। गाँधी की इस सोच के विपरीत सावरकर इतिहास के विद्वान थे, उन्होंने भारतीय इतिहास की पुनः व्याख्या की और क्रांतिकारी, बलिदानी और गौरवमयी पक्ष अपने लोगों के सामने कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया कि उसे पढ़कर लोगों के दिल देशभक्ति से भर जाते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में वीर सावरकर और महात्मा गाँधी पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

वीर सावरकर का परिचय

वीर सावरकर भारत की आजादी के संघर्ष में एक महान ऐतिहासिक क्रांतिकारी थे। वह एक महान वक्ता, विद्वान, विपुल लेखक, इतिहासकार, कवि, दार्शनिक और सामाजिक कार्यकर्ता थे। वीर सावरकर का वास्तविक नाम विनायक दामोदर सावरकर था। वीर सावरकर का जन्म 28 मई 18[illegible] को नासिक के समीप भागुर गाँव में हुआ था। उनके बड़े भाई गणेश, उनके जीवन

*असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

**असिस्टेंट प्रोफेसर, [illegible] विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

34

Women in the Workplace Issues and Solution

Dr. Deepa Agarwal
Dept. of English
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Roorkee
Haridwar (U.K.)

Abstract

The streamlining issue of time portion is compelled by an extensive number of individual particular factors, for example, work timetables, rest and family obligations. As a general rule on account of working lady, society and family put a few imperatives which have delivered its effect upon her physical and psychological wellness. Working lady faces such a large number of issues related with her opportunity designation while participating in salary gaining outside. It incorporates issues identified with wellbeing or physical, mental, social and familial issues and so forth. This paper is divided into two segments: the first part of this paper focused on the challenges and problems of working women and other is the solution and suggestion to overcome on these problems of working environment. The aim of this paper is just bring the light upon the working women issues with solutions.

Introduction

Anybody will reveal to you that the working environment is intense. For women, there's an added complication. Workplace problems are not a figment of one's imagination

62

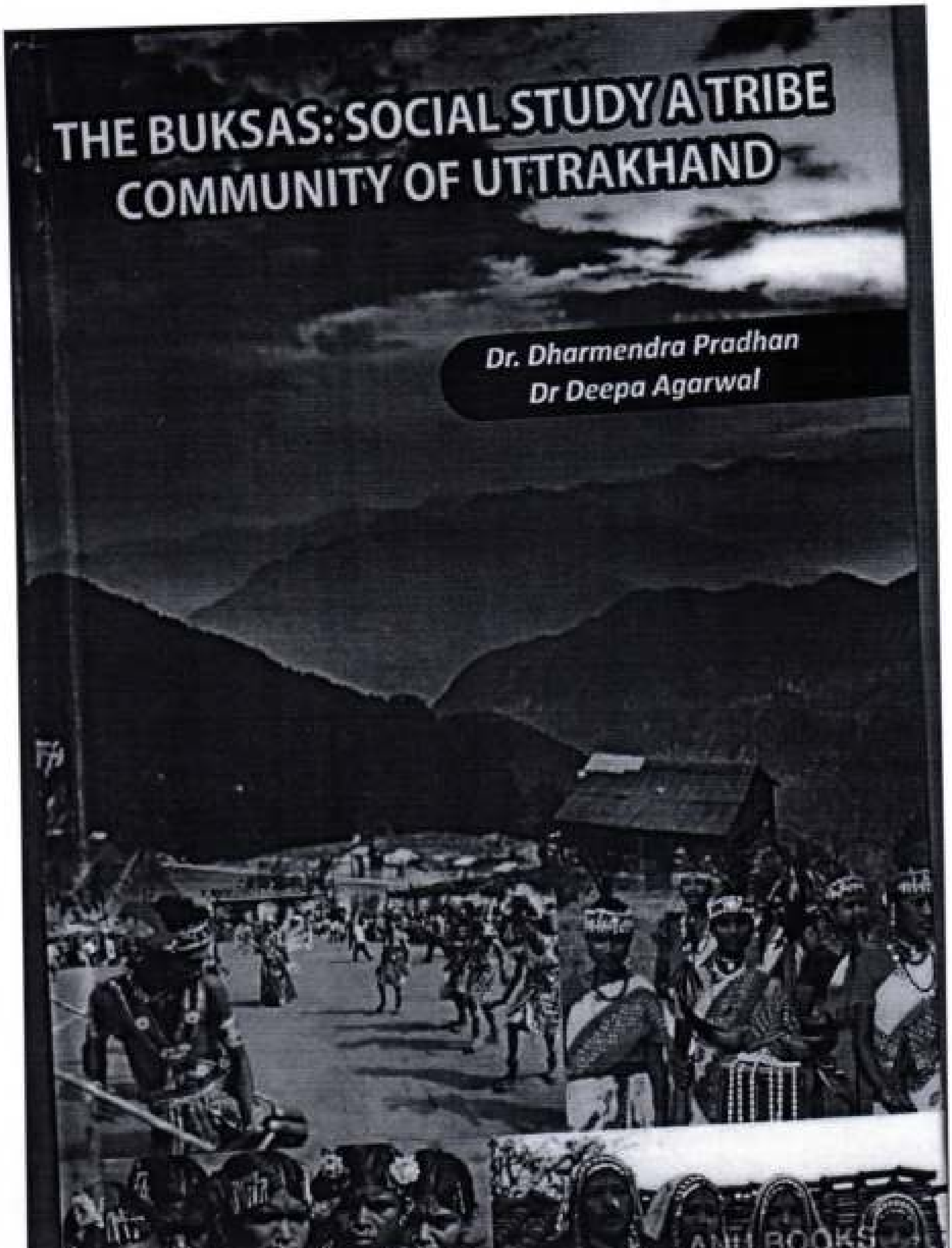

Chaman Lal Mahavidyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Hari

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

The Buksas: Social Study A Tribe Community of Uttarakhand

Editor:
Dr. Dharmendra Kumar Pradhan
Assistant Prof., Dept. of Political Science,
Chaman Lal Mahavidhayalya,
Landhaura, Haridwar

Sub-Editor:
Dr. Deepa Agarwal
Assistant Prof., Dept. of English,
Chaman Lal Mahavidhayalya,
Landhaura, Haridwar

Published By :
ANU BOOKS
Delhi Meerut Glasgow (UK)
Visit us: www.anubooks.com

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar)
I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(64)

The Buksas: Social Study A Tribe Community of Uttarakhand

First Published

ISBN: 978-93-90115-24-2

Book Code: AB148-N20

Price : 500 /-

© Editors

'Authors/contributors are solely responsible for the originality/ authenticity/accuracy of the ideas/ information/views/content/ data produced in their respective papers. Publisher and the Editor shall not be responsible for any liability arising on account of any civil or criminal proceeding(s) in any court/tribunal/judicial body under any law for the time being in force.'

All rights including copyrights and rights of translation etc are reserved and vested exclusively with the editor. No part of this publication shall be reproduced or transmitted in any form or by any means, including electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise or stored in any retrieval system of any nature without the express permission of the editor.

Published by :
Ms. Kavita Mithal
Anu Books
Publishers & Distributors
H.O. Shivaji Road, Meerut, 01214007472, 8800688996
Branch : Green Park Extension, New Delhi 110016, 9997847837
Glasgow (UK)+447586513591
E-mail: anubooks123@gmail.com
Composing and Printing in India

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Content

1. The Struggling Buksas: Socio-Cultural Study of a Primitive Tribe
Dr. Dharmender Kumar Pradhan 1

2. Buksa Tribe of Uttarakhand: General Introduction
Dr. Deepa Agarwal 7

... Life Style of Scheduled

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar) I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(66)

2

Buksa Tribe of Uttarakhand: General Introduction

Dr. Deepa Agarwal
Assistant Professor
Department of English
Chaman Lal Mahavidyalaya,
Landhaura Roorkee, Distt. Haridwar.

Abstract

Tribes of Uttarakhand mainly involve five significant groups specifically Jaunsari tribe, Tharu tribe, Raji tribe, Buksa tribe and Bhotiyas. Regarding population Jaunsari tribe is the biggest tribal group of the state. Tribes of Uttarakhand represent the ethnic groups living in the state. Every region of Uttarakhand has more or less a moderate level of tribal population. In the province of Uttarakhand, the primary concentration of tribal population is in the rural territories. The present paper aims to focus on Buksa Tribe. The Bhoksa or Buska are a tribal people who live in the foothills of the Himalayas in north central India.

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

67

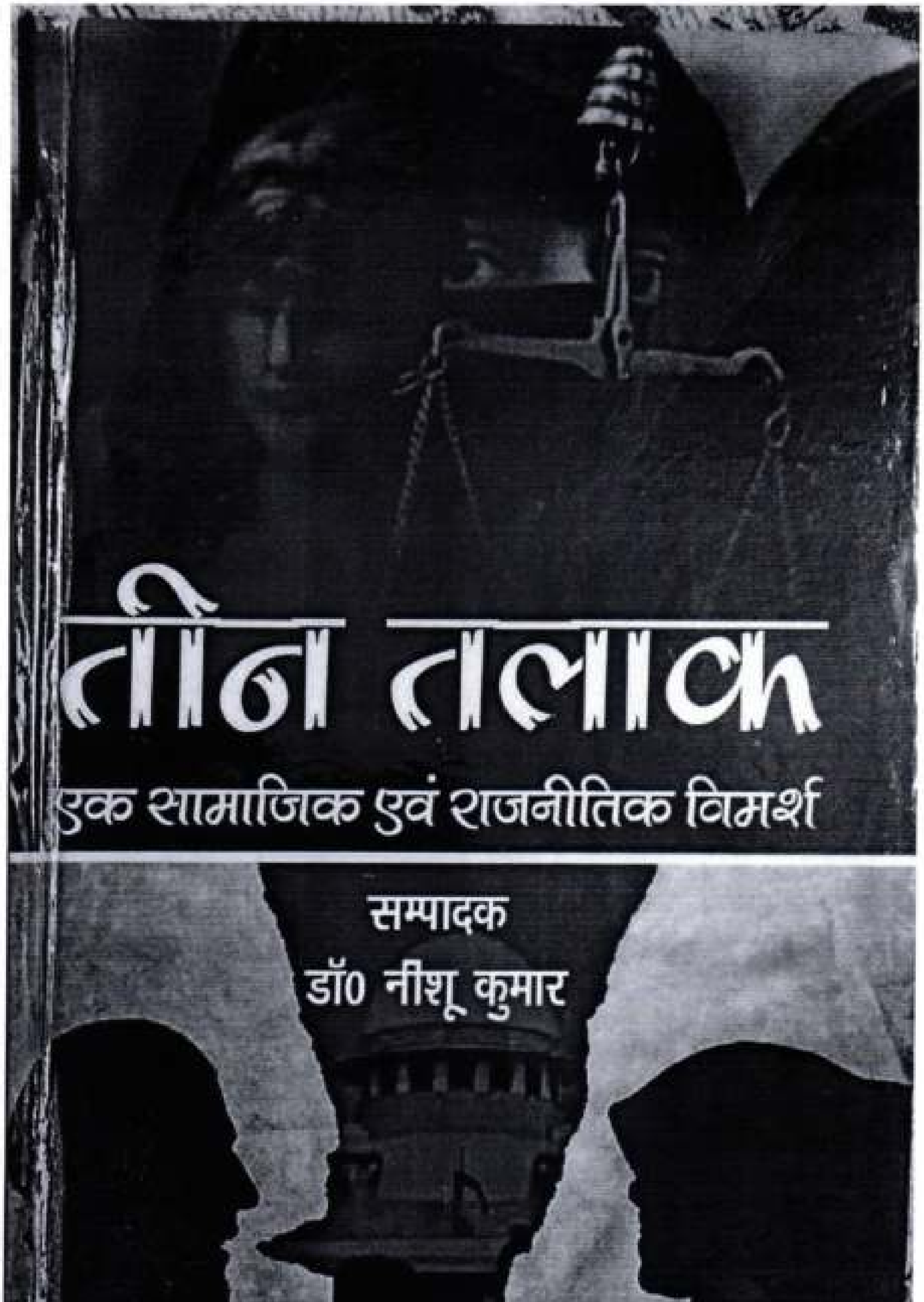

I.Q.A.C. Cordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

प्रकाशकः
प्रशांत पब्लिशिंग हाउस
28 फुटा रोड, गली नं. 3,
पश्चिमी करावल नगर, दिल्ली-53
मो. 9810396373
Email: prashantpublishinghouse@gamail.com

तीन तलाक एक सामाजिक एवं राजनीतिक विमर्श

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: 2018

आई.एस.बी.एन: 987-93-80565-59-5

मुद्रकः बालाजी आफसेट, दिल्ली

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

47. तीन तलाक सर्वोच्च न्यायालय और यूनिफार्म सिविल कोर्ट — 354
डॉ. सुधीर कुमार

48. ''भारतीय समाज में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति का अध्ययन : तीन तलाक के सन्दर्भ में'' — 359
सुजीत पायला

49. ''तीन तलाक, मुस्लिम महिलाएँ और कुरान'' — 369
सुनील सत्यम

50. भारत एवं अन्य देशों में तीन तलाक का एक सामाजिक अवलोकन — 373
सन्नी गिरी

51. तीन तलाक और भारतीय राजनीति — 380
सुरिन्दर कुमार

52. '1857 की क्रान्ति में मुस्लिम महिलाओं का योगदान' — 384
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

53. तीन तलाक: एक सामाजिक एवं राजनीतिक विमर्श — 392
डॉ. सुशील कुमार

54. मानवाधिकारों के लिए संघर्षरत मुस्लिम महिलाएँ — 399
डॉ. तीर्थ प्रकाश

55. ''तीन तलाक बनाम भारतीय मुस्लिम महिला'' — 404
विशाल कुमार लोधी
विक्रान्त गिर

56. भारत में मुस्लिम महिलाएँ एवं मानवाधिकार — 414
योगेन्द्र सिंह

57. तीन तलाक एवं सामाजिक आयाम : मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में — 423
डॉ. उदय पाल सिंह

58. सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का मुस्लिम महिलाओं के ऊपर क्या प्रभाव पड़ा — 428
एकता भारती

59. तीन तलाक: एक सामाजिक एवं राजनीतिक विमर्श — 434
रीना रानी

Chaman Lal Mahavidhyalaya • I.Q.A.C. Cordinator • Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

52

'1857 की क्रान्ति में मुस्लिम महिलाओं का योगदान'

डा. सूर्यकान्त शर्मा
सहायक आचार्य इतिहास विभाग
चमनलाल महाविद्यालय,
लण्ढौरा, हरिद्वार

पुरूष तथा स्त्री मानव समाज के दो अविभाजित अंग है जिन्होंने सदियों से दुख तथा सुख का साथ अनुभव किया है। भारत का इतिहास महापुरूषों के साथ साथ ऐसी महिलाओं की गाथाओं से भरा हुआ है जिन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष का इतिहास ऐसी-वीरांगनाओं की गाथा से भरा हुआ है।

प्राचीन काल से ही भारत में महिलाओं को सम्मानित स्थान प्राप्त है। भारत में महिलाओं को दुर्गा, सरस्वती तथा काली के रूप में देखा जाता है जो मानव सभ्यता की उत्पत्ति, पालक तथा उसके विनाश का द्यातीक है। द्याचीन काल में भी भारतीय महिलाओं ने समाज उत्थान में योगदान दिया। परन्तु मध्यकाल आते आते महिलाओं की स्थिति में धीरे-धीरे गिरावट आ गई।

ब्रिटिश शासन के भारत में आने से यहां के समाज में पुनर्सक्रंमण होना शुरू हुआ। पश्चिमी शिक्षा तथा विचारों ने भारत की जनता को द्याभावित करना पुरू कर दिया। 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी तथा उनके साहस को देखकर ब्रिटिश शासक भी हतप्रभ रह गए। सर ह्यूरोज ने झांसी की

I.Q.A.C. Cordinator
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

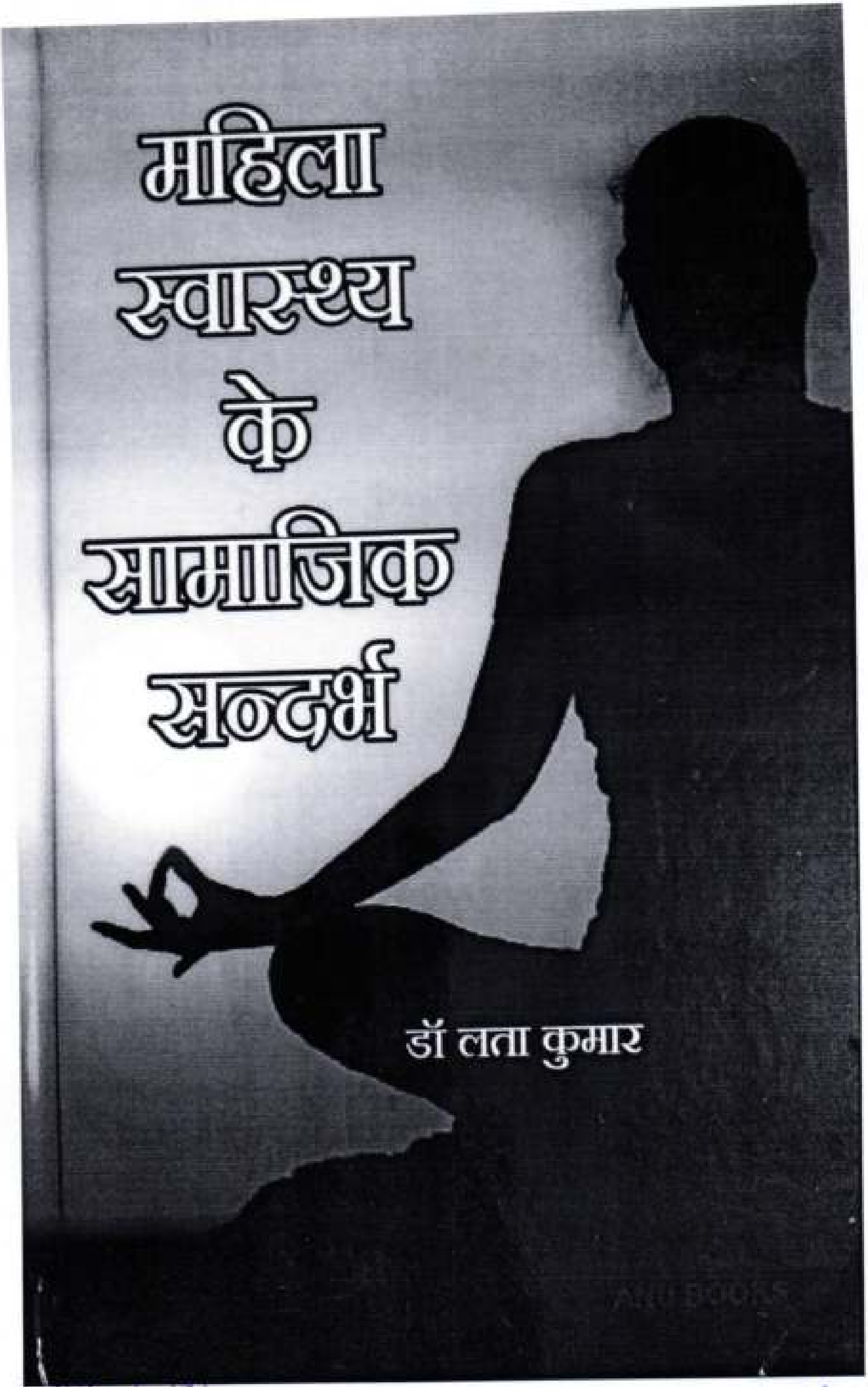

Scanned with CamScanner

I.Q.A.C. Cordinator Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar Uttarakhand

(72)

Name : महिला स्वास्थ्य के सामाजिक संदर्भ
First Published
2018

ISBN :
978-93-87922-37-2

Price : ₹ 450/-

Copyright © Editor

Contributors are solely responsible for the ideas expressed in their submitted articles for publication. Editors and publisher are not resonsible for it. Contributors are also responsible for the cases of plagiarism.

Printed by :
D.K. Fine Art Printers Pvt. Ltd.,
New Delhi

Published by :
Anu Books
H.O. Shivaji Road, Meerut, 0121-2657362, 01214007472
Branch : H-48, Green Park Extension, New Delhi. 9997847837
Glasgow (UK)+447586513591

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

- महिलाओं का स्वास्थ्य और उत्पीड़न

  डॉ0 रजनी श्रीवास्तव, सुश्री ऋतु रानी 61

- महिला स्वास्थ्य शिक्षा – एवं सशक्तिकरण

  सुश्री संगीता जुयाल 67

- राजस्थान राज्य के टोंक जिले में परिवार नियोजन व गर्भनिरोधक साधनों के प्रयोग में नारी की भूमिका

  डॉ० शिल्पी चौहान , सुश्री निशा सिंह 75

- मध्यकाल में परदा का महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव

  डॉ० सूर्यकान्त शर्मा 85

- महिलाओं के लिए रामबाण औषधि है योग

  डॉ० स्वर्ण लता कदम 88

- स्वस्थ महिलाएं : देश के विकास की नींव

  डॉ0 उर्वशी 92

- ग्रामीण विकास के संदर्भ में ग्रामीण महिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा : एक सशक्त माध्यम

  डॉ0 विक्रम सिंह 97

- कैरियर और मातृत्व के मध्य उभरते नूतन समाजशास्त्रीय प्रतिमान

  डॉ0 विशेष गुप्ता 103

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya • I.Q.A.C. Cordinator • Landhaura (Haridwar)

मध्यकाल में परदा का महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव

डॉ० सूर्यकान्त शर्मा
सहायक आचार्य–इतिहास
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछले कुछ सदियों में बड़े बदलावों का सामना किया है। प्राचीन काल में जहां महिलायें पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति में थीं वहीं मध्यकाल के दौरान समाज में भारतीय महिलाओं की स्थिति में अधिक गिरावट आयी। भारतीय उपमहाद्वीप में मुगलों की जीत ने परदा प्रथा को भारतीय समाज में ला दिया।

'परदा प्रथा' वह प्रथा है जिसमें कुछ समुदायों में महिलाओं को अपने तन को इस प्रकार से ढ़कना जरूरी होता है कि उनकी त्वचा और रंग रूप का किसी को अंदाजा न लगे। यह महिलाओं के क्रिया कलापों को सीमित कर देता है, आजादी से मिलने–जुलने के उनके अधिकार को सीमित करता है और यह महिलाओं की अधीनता के एक प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है।

परदे की प्रथा ने महिलाओं के स्वास्थ्य पर हमेशा नकारात्मक प्रभाव डाला। एफ०एच०दास के अनुसार परदे की प्रथा का हानिकारक परिणाम लड़कियों का कम आयु में विवाह कर दिया जाना भी था। अराजक तत्वों से बचने के लिए हिन्दू व गरीब मुस्लिम अपनी छोटी उम्र की पुत्रियों का विवाह कर दिया करते थे और बाल विवाह के कारण उन्हें ससुराल में अपने बड़ों से परदा करना पड़ता था। इस प्रथा के कारण वे शुद्ध हवा व सूर्य की रोशनी से भी मोहताज हो जाया करती थीं फलतः वे अधिक बीमार होती थीं। उनके रहने के जनानखानों को उस समय संक्रमण का मुख्य केन्द्र माना जाता था।[1]

बिहार राज्य में परदे की कैद में रहने वाली स्त्री की दुरावस्था का वर्णन करते हुये ब्रह्मदेव प्रसाद जी ने लिखा है कि–परदे की कठोरता का ताण्डव नृत्य देहातों में देखने को मिलता है। मैं अपनी आँखों से देख रहा हूँ कि स्त्रियाँ शुद्ध वायु और स्वास्थ्यकर भोजन के अभाव में बहुत तेजी से क्षयरोग का शिकार हो रही हैं। आप गाँव–गाँव जाकर देख लें सर्वनाश के इस भयानक दृश्य को देखकर आपका कलेजा दहल उठेगा। समाज में स्त्रियों की मृत्यु साधारण सी बात मानी जाती है। यह एक प्रत्यक्ष सत्य है कि बिहार के गांवों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ दस गुना अधिक मरती हैं। देहातों में बड़े–बड़े महल बने है। छोटे बड़े सभी मकानों के ऊपर छत में एक छोटा सा छिद्र तो बनाया जाता है पर खिड़कियाँ नदारद रहती हैं। दिन में भी उन घरों में बिना लैम्प के जाने की हिम्मत

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

75

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता

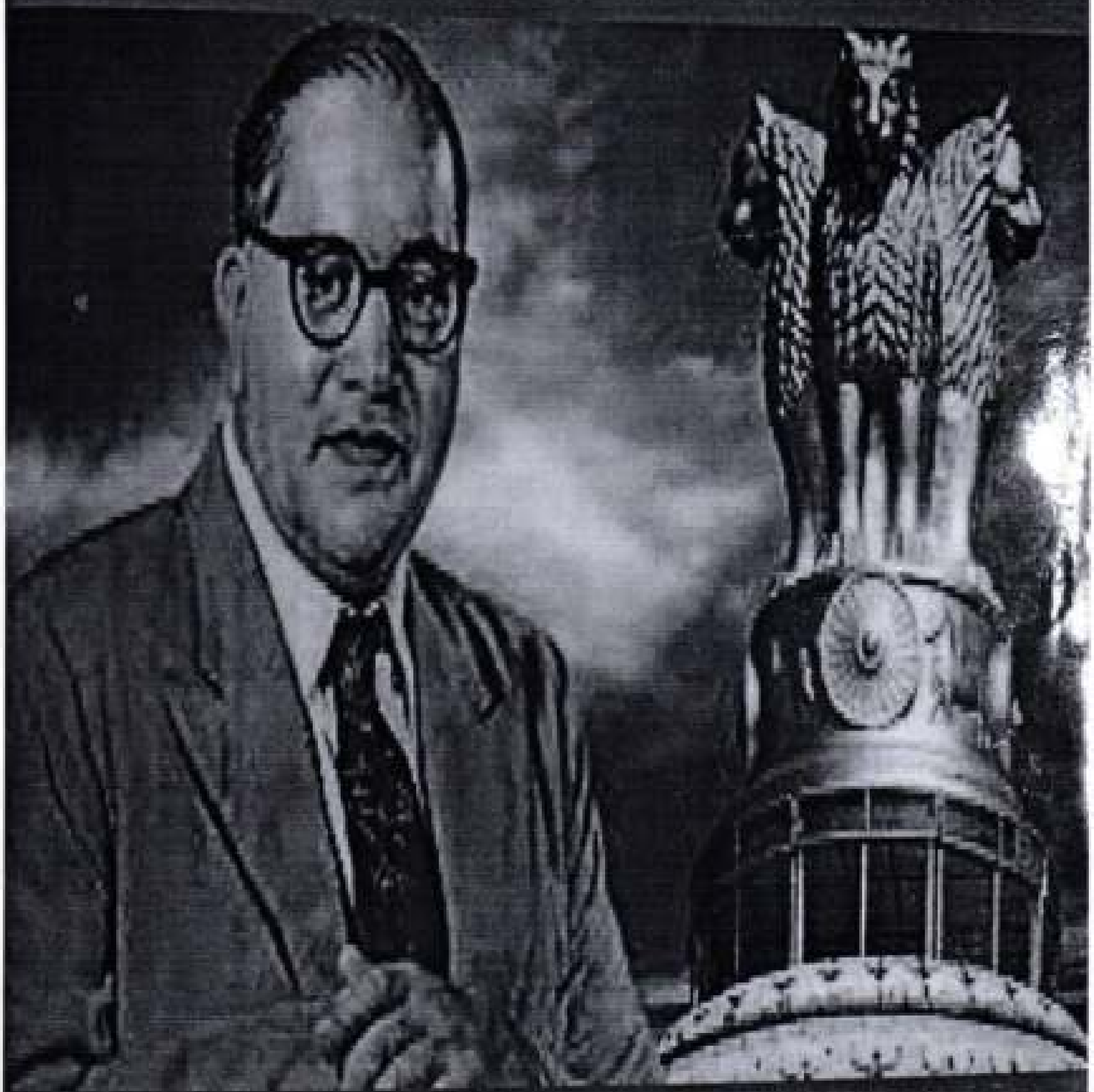

संपादक
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

सह संपादक
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

76

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-86246-84-4

प्रकाशकः
प्रगतिशील प्रकाशन
एन-3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 (भारत)
दूरभाषः 09899665801
ई-मेल : pragatisheelprakashan@yahoo.in

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर
के विचारों की प्रासंगिकता

मूल्य : ₹ 700.00
प्रथम संस्करण : 2018
© सुरक्षित

भारत में प्रकाशित-

'प्रगतिशील प्रकाशन', नई दिल्ली के लिए प्रकाशित। सत्यम् प्रिंटोग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, द्वारा मुद्रित।

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

IQAC Coordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura (Haridwar)

77

(vii)

21. डॉ. अंबेडकर.....देश और सामाजिक एकता के महान रक्षक
कु. प्रवीन 159

22. अम्बेडकर के चिन्तन में सामाजिक व धार्मिक अवस्थिति
प्रभात कुमार सिंह 168

23. **A literateic Dissuasion on Ambedkar's View on Social and Political Perspectives**
Dr. Surya Kant Sharma 179

24. **The Relevance of the Ideas of Dr. B. R. Ambedkar in Modern India-A Study**
Manoj Kumar & Varsha Tamta 186

25. **Dr. B.r. Ambedkar And Women Empowerment in India**
Anamika Chauhan 193

26. **Relevance of Dr. Babasaheb Ambedkar In Economics**
Kanika Rawat 197

27. **Dr. Ambedkar's Vision of Indian Constitution**
Dr. Aparna Sharma 204

28. **Ambedkar : A Study**
Mahnaz Fatma 209

29. **Role of Ambedkar in Women Rights of India**
Dr. Neetu Gupta 217

30. **Dr. Ambedkar's Contribution Towards Woman's Rights in India**
Shivani 220

31. **Untouchability A Thesis By Ambedkar**
Mrs. Priyanka Agarwal 224

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(78)

23

A literateic Dissuasion on Ambedkar's View on Social and Political Perspectives

Dr. Surya Kant Sharma
Asst. Prof.
Dept. of History
Chamanlal Mahavidhalaya Landhaur

Literature review refers to more collection of materials on a particular topic. Literatuse review shows that the researehes knows the field, classify the reason for theoretical framework and methoddogical focus. The literature review os commonly seen as the springboard to the book.

A literature review discusses information in a particular subject area, and sometimes a wide information in a particular subject area within a particular time period. A literature is a source that can review of a simple summary of all related resources, but it usually has an organizational patter and combines both summary and synthesis. A literature might give a new interpretation of old material or combine new with old interpretations. Or it can be trace the intellectual progression of the field, including major debates. The main thing of an academic research paper is to support one's argument. For professionals, they are useful reports that keep them up to date with what is current in the field. Literature reviews also provides a solid background for a research paper is investigation. A comprehensive knowledge of the literature of the field is essential to most research papers.

Though the literature on Ambedkar is enormously available, particularly after the celebration of is birth century. Despite there are Doctoral studies on his social Democratic ideology and the social and economic movements led by him. Academic world's survey is based on this observation that the Investigator surveyed the related literature and presented a review of Ambedkar's social and education thoughts as constructed by scholars.

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

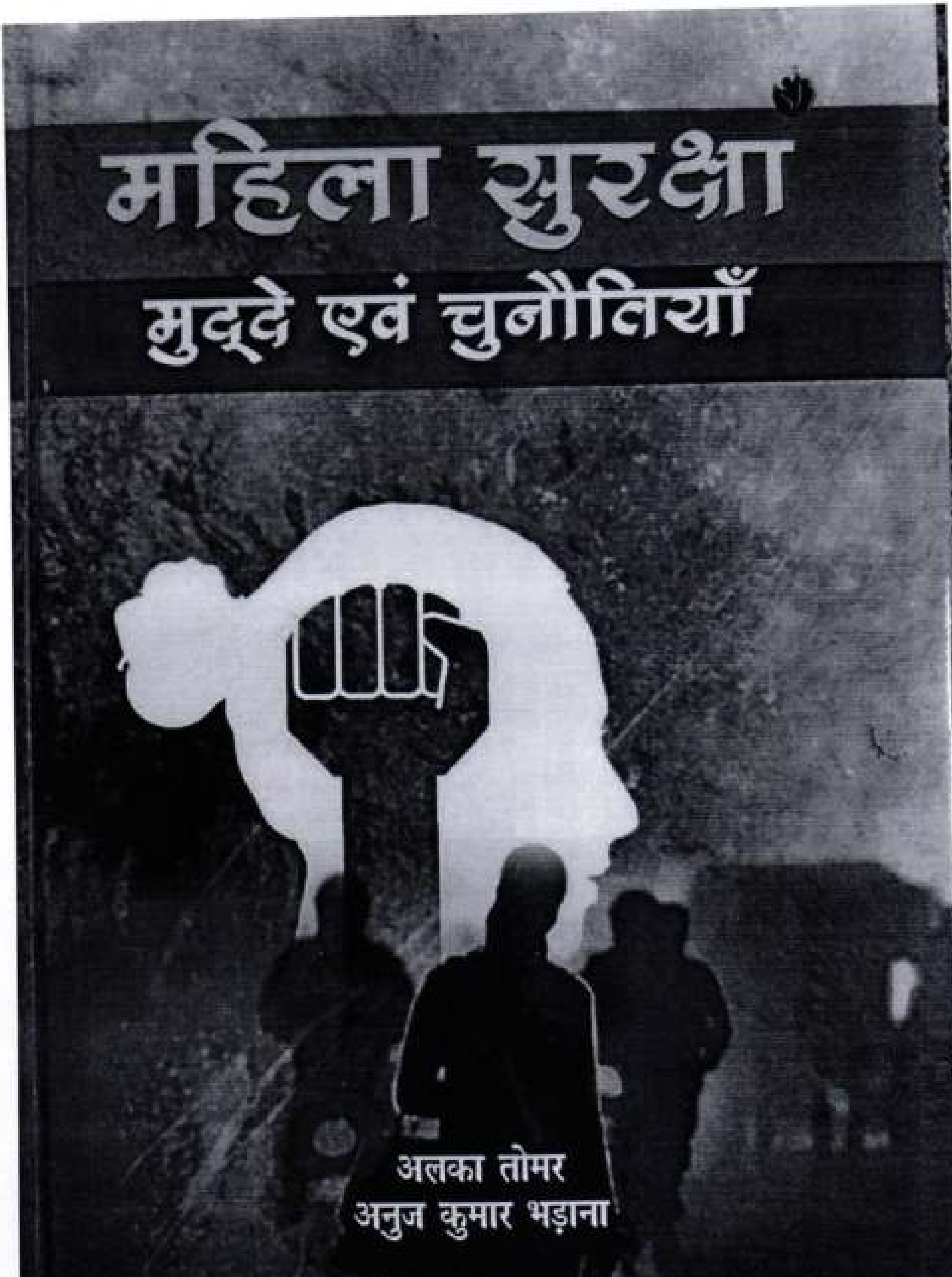

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar Uttarakhand

80

ISBN : 978-81-940315-3-6

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : +9315194807
ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा दिल्ली-94

मुद्रक
ट्राईडेंट इटरप्राइजेज दिल्ली-32

Mahila Suraksha : *Mudde Evam Chunoutinya*

by Dr. Alka Tomar
Anuj Kumar Bhadana

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • IQAC Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with CamScanner

11. स्त्री विमर्श का वैदिक स्वरूप
डा. दुर्गा जैन 62

12. कृषि में महिला सहभागिता (हरिद्वार जिले के सन्दर्भ में)
विमल कान्त तिवारी 67
डॉ० नवीन कुमार

13. कामकाजी महिलाओं की भारतीय समाज में भूमिका
ज्योति 71

14. समकालीन हिंदी कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री जीवन : समस्याएँ एवं चुनौतियाँ 76
योगेन्द्र सिंह
आशुतोष शर्मा

15. महिलाएं एवं वैधानिक प्रावधान : एक विश्लेषण (सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पक्ष)
पंकज कुमार 84

16. वर्तमान में डगमगाती महिला सुरक्षा : एक चिंतन
सुशील कुमार 96

17. भारतीय इतिहास में महिलाओं की बदलती सामाजिक स्थिति 100
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

18. स्त्रीत्व शोषण का सशक्त दस्तावेज 'तुम्हारा सुख' 106
रवि कुमार

19. महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण : सूचना, साक्षरता की भूमिका 110
राजबीर सिंह
संदीप के. पोसवाल

20. महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण: सूचना एवं साक्षरता की भूमिका 116
महेश कुमार सहगल

21. उत्तराखण्ड राज्य में घरेलू कामकाजी महिलाओं की जीवन शैली का बदलता स्वरूप एवं संघर्षशील भूमिका 122
डॉ० जितेन्द्र कुमार

22. वर्तमान में महिलाओं के विकास में परम्परागत तर्कों की बाधाएं एवं महिलाओं का भविष्य 129
सुश्री अंजलि प्रसाद

23. वर्तमान परिदृश्य : स्त्री सुरक्षा समस्या एवं चुनौतियाँ 140

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

17

भारतीय इतिहास में महिलाओं की बदलती सामाजिक स्थिति

डॉ. सूर्यकान्त प्र.•

भारत विश्व का प्राचीनतम देश एंव जीवित राष्ट्र है। यह सर्वमान्य है कि किसी भी प्राचीन सभ्यताओं मे नारी को इतना गौरव, गरिमा तथा उच्चतम सम्मान नहीं दिया गया, जितना भारत ने। यह भी नितांत सत्य है कि कोई भी धर्मग्रन्थ, दर्शन, शिक्षाशास्त्र, साहित्य, भाषा तथा इतिहास नारी का इतना ऋणी अनुभव नहीं करता, जितना भारतीय जनमानस। नारी अपने विभिन्न रूपों माँ पत्नी, बहिन तथा पुत्री- में सर्वदा पूजनीया तथा श्रद्धा की पात्र रही है। नारी को साक्षात् शक्ति तथा भक्ति का अवतार माना गया है। नर को नारी से ही माना गया है। उसे सृष्टि का आधार माना गया है। अतीत से वर्तमान तक भारत के ऋषियों-मुनियों ने दार्शनिको एंव लेखकों, जिन्होंने उसे निर्मला, अत्यंत पवित्र तथा श्रद्धा कहा है।

वैदिक काल मे नारी की स्थिति सर्वोत्तम थी। स्त्री-पुरुष संबंध 'सखा' भाव के होते थे। ऐतरेय ब्राहमण तथा महाभारत मे प्रखरता से इन संबधों को माना गया है। दोनो के समान अधिकार होते थे। ऋग्वेद मे उन दोनो को समान शिक्षा के अधिकार थे। लडकियों का उपनयन-संस्कार होता था। वे चाहे तो आजीवन ब्रहाचर्य जीवन बिता सकती थी। लड़कियों की गतिशीलता मे कोई रुकावट न थी। विधवा-विवाह होते थे। अनेक नारियाँ मन्त्रद्रष्टा तथा ब्रहमवादिनी थी, जैसे- घोषा, लोपमुद्रा, शाश्वती, अपाला, इन्द्राणि, सिकता निवानरी आदि। इसमे अनेक वैदिक मन्त्रों तथा श्लोकों की रचयिता थी। एक विदुषी इतिहासकार ने हिन्दु समाज मे दाम्पत्य संबधो के बदलते रुपो का सूक्ष्म विश्लेषण करते समय, समाज की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप इसके विकास क्रम को तीन भागो मे बाँटा, जिन्हे क्रमशः सखा-युग, गुरु-युग तथा देवता-युग कहा है। यद्यपि इसकी विभाजक-रेखा निश्चित करना संभव नही है, परन्तु यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता था। कि वैदिक युग की स्थिति एक-सी न रही। नारी के लिए पति का सखा-भाव निरन्तर कम होता गया। बदलती हुई परिस्थिति मे नारी की स्थिति मे अन्तर आता गया। इसे निरन्तर तथा सामाजिक परिवर्तन के रुप मे देखा जा सकता है। पुरुष तथा स्त्री मे सखा भाव के स्थान पर पुरुष का वर्चस्व बढता गया। शिक्षा के क्षेत्र मे नारी-शिक्षा का दायरा धीरे-धीरे सीमित हो

• इतिहास विभाग, चमन लाल महाविद्यालय लण्ढौरा, हरिद्वार

Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura (Haridwar) I.Q.A.C. Cordinator
Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand
Scanned with CamScanner

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गुरुकुल शिक्षापद्धति का महत्व

डॉ. नीशू कुमार
अनामिका चौहान

I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

84

ISBN : 978-81-942838-2-9

© सम्पादक

प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

मोबाइल : +9315194807

ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर सयोंजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉ सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Adhunik Paripekshya Me Gurukul Shiksha Paddati Ka Mahtava

by Dr. Nishu Kumar

Anamika Chauhan

I.Q.A.C. Coordinator

Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

26. प्राचीन भारत की नीति-शिक्षा एवं उसकी आधुनिक शिक्षा में उपयोगिता 156
प्रीति आर्या

27. गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति नैतिकता, मूल्य, चरित्र निर्माण राष्ट्र निर्माण- एक विमर्श 162
प्रकृति

28. परंपरा एवं आधुनिकता के मध्य शिक्षा पद्धति 170
डॉ. उदय पाल सिंह

29. गुरुकुल शिक्षा पद्धति नैतिकता मूल्य, चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण : एक विमर्श 174
डॉ. विक्रान्त गिर
डॉ. अजयपाल सिंह

30. गुरूकुल शिक्षा पद्धति व आधुनिक परिवेश में इसकी उपयोगिता 180
डॉ. रवीन्द्र कुमार

31. भारतीय संस्कृति के आधार पर आधुनिक शिक्षा की अवधारणा: एक अध्ययन 184
डॉ. रूचि सिंह

32. आधुनिक शैक्षिक परिदृष्य के सन्दर्भ में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली में स्थापित गुरू शिष्य सम्बन्धों का महत्व 190
संजीव कुमार
डॉ. सुशील कुमार

33. गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की भूमिका 195
देव प्रकाश

34. ''नैतिक मूल्य'' ह्रास के कारणों का अध्ययन 201
डॉ. अनिता चौहान

35. गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन 208
सुमन लता तिरूवा

36. 'गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं प्राचीन विश्वविद्यालय' 213
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

37. प्राचीन भारत में गुरूकुल शिक्षा पद्धति का महत्व- 221
ववीता सिंह

38. नैतिक मूल्य परक शिक्षा की अनिवार्यता और महत्व 225
विलियम

39. उदारीकरण के दौर में निजीकरण का दबाव एवं विकल्प की अवधारणा : सन्दर्भ शिक्षा एवं गुरूकुल पद्धति 230
डॉ. विपिन कुमार शर्मा

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

36.

'गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं प्राचीन विश्वविद्यालय'

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा *

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति का एक प्रमुख तत्व गुरुकुल व्यवस्था है। इसमें विद्यार्थी अपने घर से दूर गुरू के घर पर निवास कर शिक्षा प्राप्त करता था। कभी-कभी वह शिक्षा केन्द्रों से सम्बद्ध छात्रावासों में निवास करता था। इस प्रकार के विद्यार्थियों को अंतेवासी अथवा आचार्य कुलवासी कहा गया है। धर्मग्रन्थों में हित है कि विद्यार्थी उपनयन संस्कार के साथ ही गुरुकुल में निवास करें तथा विविध विषयों की शिक्षा प्राप्त करें। गुरू के समीप रहते हुए विद्यार्थी उसके परिवार का एक सदस्य हो जाता था तथा उसके साथ पुत्रवत व्यवहार करता था। गुरुकुल में ब्रह्मचर्य पूर्वक रहते हुए विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करता था। वहाँ उसे गुरू के पहले उठना तथा उसके सो जाने पर सोना पड़ता था। गुरू की सेवा करना उसका परम कर्त्तव्य था उसकी सेवाओं के बदले में गुरू भी उसके ऊपर व्यक्तिगत ध्यान रखता था तथा पूरी लगन के साथ उसे विविध विद्याओं और कलाओं की शिक्षा प्रदान करता था।

प्राचीन व्यवस्थाकारों ने गुरू के साथ विद्यार्थी के सानिध्य के महत्व को समझा था और इसी कारण गुरुकुल पद्धति पर बल दिया। गुरू के चरित्र तथा आचरण का शिष्य के मस्तिष्क पर सीधा प्रभाव पड़ता था तथा वह उसका अनुकरण करता था। परिवार के वातावरण से दूर रहने

* सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(87)

STATUS OF UPCOMING TRENDS IN BIODIVERSITY CONSERVATION

Editor
Dr. Richa Chauhan

I.Q.A.C. Cordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar)

Scanned with CamScanner

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(88)

The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the author/editor. The publisher bears no responsibility for them whatsoever.

ISBN : 978-93-86541-78-9

Published by:
Educational Book Service
N3/25 D.K. Road, Mohan Garden,
Uttam Nagar New Delhi-110059
Contact: +91-9968277749
E-mail: ebs.2012@yahoo.in

Status of Upcoming Trends in Biodiversity

Price : 700/-
© Reserve
First Edition : 2019

Printed in India

Published by R. D. Pandey for 'Educational Book Service', New Delhi.
Layout by Satyam Printographics, New Delhi and Printed at *Vishal Kaushik Printer*, Shahdra, Delhi.

Chaman Lal Mahavidhyalaya IQAC Coordinator Landhaura (Haridwar)

Scanned with CamScanner

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

... and health trends

Pooja Mishra 74

12. **Tiger: Near The Age of Extinction**
*Praveen Dhama, Pradeep Sirohi** 79

13. **Ghaggar Water Pollution and Its Impact On Human Health**
Ravi Kant Pareek[1], Dr. Ambrina S. Khan[2], Dr. Parteek Srivastva[3], Dr. Surendra Roy[4]* 84

14. **Ecological Fortification Through Biodiversity**
Capt. Dr. Satendra Kumar 92

15. **A Review on Green Manufacturing It's important, Methodology and Applications** 104
Naveen Kumar, Suryakant Sharma

16. **"Testing the water quality of irrigation water of different sub-canals of Gurukul Narsan (Roorkee) and nearby areas"** 112
Vaishali, Dr. Manjul Dhiman

17. **Bio-control Potential and Efficacy of Entomopathogenic Nematodes Aagainst Their Target Insect Pests** 118
Vidhi Tyagi

18. **Simulated Acid Rain Effect on Some Growth Responses of Legumes** 126
Vinita Singh

19. **Environmental Politics : A Global Perspective** 137
Dr. V.K. Gupta

20. **Multi-drug Resistance In Bacteria Isolated From Drinking Water** 153
Gunja

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C. Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Scanned with CamScanner

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(90)

15

A REVIEW ON GREEN MANUFACTURING IT'S IMPORTANT, METHODOLOGY AND APPLICATIONS

Naveen Kumar,
Suryakant Sharma,
Chaman Lal Mahavidalya, Landhora,Roorkee

ABSTRACT

The paper contains wide description of green manufacturing with the needs and eliminates the waste. This paper tells about design of green environment system with conservation of energy. The development of final product with elimination of wastages. The Paper entitled about the reuse of the product. The Main focus of this paper on green manufacturing is to reduce the cost and save the environment.

Keywords: Green Manufacturing, Operation Management, Waste etc.

1. INTRODUCTION

Resources and Population are major problems in the environment. Environment is the important factor to change in climate to imbalance of the earth. The ISO has already proposed the new quality management system for products and for Environment management system. The main objective is to minimize the environmental pollution which is produced due to industries. There is a need arise of new manufacturing process which can reduce the environmental damage i.e. Green Manufacturing, which is suitable for sustainable development strategy. The cost of energy and resources are constantly increasing due to more demand and less supply of products. The aim of companies is to successfully produce the product within large price ranges of energy and resources. One strategy is to hold the price fluctuations up to the

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

91

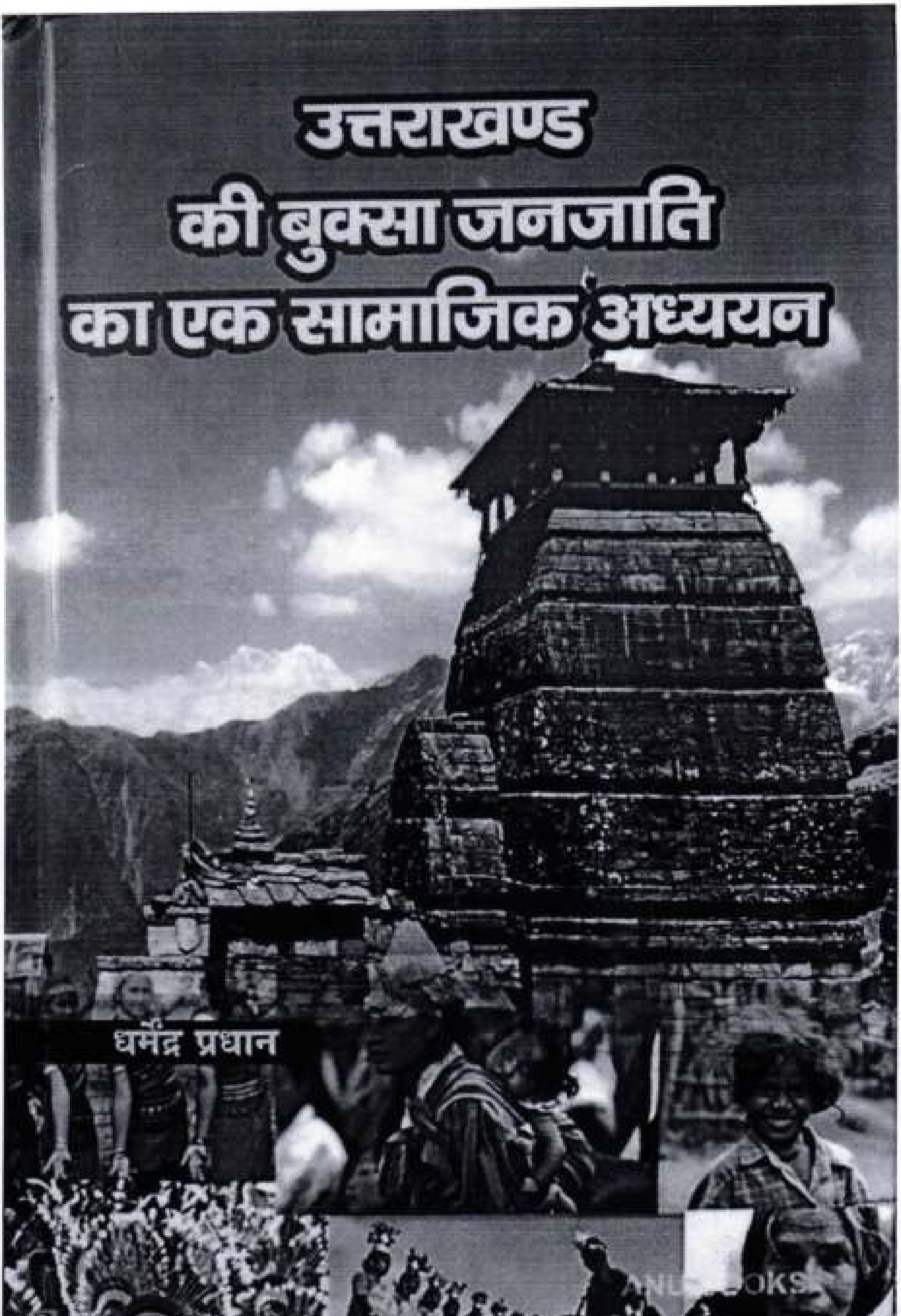

Coordinator
Landhaura (Haridwar)
Scanned with CamScanner
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

92

उत्तराखण्ड की बुक्सा जनजाति का एक सामाजिक अध्ययन

First Published: **2020**

ISBN: **978-93-90115-25-9**

Book Code: **AB144 - F21**

© Editors

'Authors/contributors are solely responsible for the originality/authenticity/accuracy of the ideas/ information/views/content/data produced in their respective papers. Publisher and the Editor shall not be responsible for any liability arising on account of any civil or criminal proceeding(s) in any court/tribunal/judicial body under any law for the time being in force.'

All rights including copyrights and rights of translation etc are reserved and vested exclusively with the editor. No part of this publication shall be reproduced or transmitted in any form or by any means, including electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise or stored in any retrieval system of any nature without the express permission of the editor.

Published by :

Ms. Kavita Mithal

Anu Books

Publishers & Distributors

H.O. Shivaji Road, Meerut, 01214007472, 8800688996

Branch : Green Park Extension, New Delhi 110016, 9997847837

Glasgow (UK)+447586513591

E-mail: anubooks123@gmail.com

Printed by:

AnVi Composers, New Delhi

I.Q.A.C. Coordinator, Landhaura (Haridwar)

Principal

Chaman Lal Mahavidhyalaya

Landhaura, Distt -Haridwar Uttarakhand

13. बुक्सा जनजाति की शैक्षिक स्थिति : एक अवलोकन
कुलदीप कुमार 85

14. जनजातीय महिलाएं : सशक्तिकरण एवं शिक्षा
ममता गंगवार 91

15. उत्तराखण्ड की बुक्सा जनजाति का सामाजिक और आर्थिक अध्ययन
पूजा गुप्ता, भावना गुप्ता 97

16. उत्तराखण्ड की बोक्सा जनजाति की धार्मिक मान्यताएं एवं परम्पराएं
विशाल कुमार लोधी, डॉ0 विक्रान्त गिर 106

17. उत्तराखण्ड राज्य के बोक्सा जनजाति की वर्तमान स्थिति उनकी समस्यायें एवं उपयुक्त सुझावः
डॉ0 अजय कुमार 126

18. उत्तराखण्ड की जनजातियों का सामाजिक परिवेष
डॉ० सुशील उपाध्याय, नीलम देवी 137

19. थारू जनजातिः चुनौतियां एवं समाधान
डा. संतोष कुमार सिंह 144

20. बुक्सा जनजाति : महिला, समाज एंव संस्कृति
परमजीत कौर 158

21. जनजातीय संस्कृति को समझिए तो......
डॉ० राकेश राणा 167

22. भारत में अनुसूचित जनजातीयों की स्थिति : एक विश्लेषण
डॉ० दिनेश कुमार, डॉ० हेमलता वर्मा, राजेन्द्र सिंह 173

23. उत्तराखण्ड सरकार द्वारा आदिवासी समुदाय का सम्पोषित
विकास एक विश्लेषणात्मक अध्ययनः बुक्सा समुदाय के संदर्भ में
डॉ0 नीशू कुमार 187

24. आदिवासी और हम : जरूरत एक दूसरे की
डॉ0 तीर्थ प्रकाश 193

25. बुक्सा जनजाति एक ऐतिहासिक अध्ययन
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा 199

26. उत्तराखण्ड की बुक्सा जनजाति की उत्पत्ति एवं भौगोलिक परिवेष
डॉ० टीना भड़ाना, डॉ० विक्रान्त गिर 205

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)

Scanned with CamScanner

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

25

बुक्सा जनजाति एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा

भारत वर्ष के उत्तरी सीमान्त हिमालय में अवस्थित उत्तराखण्ड प्रदेश जिसे देवभूमि, स्वर्गभूमि, हिमवत, केदारखण्ड, मानसखण्ड, कूर्मांचल आदि नामों से अभिहित किया गया है। यहां की प्राकृतिक सुषमा व स्वस्थ एवं सुगन्धित आध्यात्मिक वातावरण ने पौराणिक काल से ही ऋषियों, मुनियों, प्रकृति–प्रेमियों एवं अनेक मानव जातियों को अपनी ओर आकर्षित किया है।

पौराणिक एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों में उत्तराखण्ड की प्राचीनता का विस्तृत वर्णन मिलता है। स्कन्दपुराण में वर्णित उत्तराखण्ड, केदारखण्ड के भूक्षेत्र की प्राचीनता के बारे में भगवान शिव ने स्वंय उदघोष किया है कि जैसे मैं सबसे प्राचीन हूँ उसी प्रकार यह केदारखण्ड भी प्राचीन है। सर्वप्रथम मैनें इसी स्थान पर सृष्टि की रचना की।"

प्राचीन काल से अनेक मानव जातियां हिमालय के उत्तराखण्ड में निवास कर चुकी थी। रामायण, महाभारत एवं प्राकृत बौद्ध ग्रन्थों, संस्कृत साहित्य के प्रमाणों, अभिलेखों, राजवंशों के विवरणों, मध्यएशिया एवं तिब्बत के इतिहास एवं पुरातात्विक साक्ष्यों व क्षेत्रीय खोजों से प्राचीन मानव जाति की विस्तृत जानकारी उपलब्ध होती है।

I.Q.A.C. Coordinator Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand
Scanned with CamScanner

(95)

INDIAN COUNCIL OF WORLD AFFAIRS

दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एंव विकास में भारत की भूमिका

डॉ. नीशू कुमार

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar)
I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Scanned with CamScanner

ISBN : 978-81-945976-0-5

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
: +91-315194807, 91-9968082809
: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुर्नत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने है।

Dakshin Asia Me Rajnitik Isthirta Evam Vikas Me Bharat Ki Bhumika

By - Dr. Nishu Kumar

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura • I.Q.A.C. Coordinator

22. मालद्वीव, बांग्लादेश, श्रीलंका की आंतरिक राजनीति और भारत 150

चन्द्रभान सिंह

23. दक्षिण एशिया में भारत की नई सामरिक चुनौतियाँ 154

कु. प्रवीन

24. श्रीलंका और दक्षिण एशिया की सुरक्षा चिंता : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 159

धीरज कुमार

25. दक्षिण एशिया में इस्लामिक स्टेट का खतरा 170

अनुपमा तोमर

26. दक्षिण एशिया में आतंकवाद की चुनौती 179

ज्योति

27. आतंकवाद से अपनी वैश्विक चुनौतियाँ 182

डॉ. कविता पाठक

28. सार्क देशों में महिला विकास एवं सशक्तिकरण 190

निशा रानी

29. दक्षिण एशिया के विकास एवं स्थायित्व में सार्क की भूमिका 198

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

30. भारत आसियान संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 203

डॉ. शिखा जैन

31. भारतीय शान्ति सेना की श्रीलंका में भूमिका का विश्लेषण 207

डॉ. मनेन्द्र कुमार

32. दक्षिण एशियाई देशों के साथ भारत का संबंध 215

डॉ. प्रियंका अग्रवाल

33. दक्षिण एशिया में मुक्त व्यापार की चुनौतियां 222

डॉ. जया नैथानी

34. भारत-नेपाल सम्बन्ध : एक अवलोकन 227

डॉ. तीर्थ प्रकाश

डॉ. सुधीर कुमार

35. जम्मू कश्मीर का पूर्ण एकीकरण एवं पड़ोसी देशों से सम्बन्ध 232

डॉ. पूनम देवी

36. भारतीय महिला सुरक्षा में मानवाधिकारों की भूमिका 239

कु. राधा आर्या

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(98)

29.

दक्षिण एशिया के विकास एवं स्थायित्व में सार्क की भूमिका

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा*

दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के साथ आर्थिक सहयोग के रूप में क्षेत्रीय संगठनों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। किसी भी देश का विकास पड़ोसी देशों के मध्य मैत्रीपूर्ण संबन्धों और क्षेत्रीय विकास पर अधिक निर्भर करता है। इसलिये इस उप-महाद्वीप में स्थायित्व को बढ़ावा देने तथा शान्ति स्थापित करने के लिये ऐसे संगठनों का निमार्ण आवश्यक है। क्षेत्रीय विकास वर्तमान जीवन की अनिर्वायता है। मानव जीवन और मानव चेतना का विकास दोनो ही क्षेत्रीय विकास से जुडे हुये है। यदि क्षेत्रीय विकास की सम्भावनाये क्षीण है या पूर्णतः अनुपस्थित है तो चेतना का विकास भी अवरूद्ध हो जाता है।

एशिया के राष्ट्र आपस में वंश जाति, भाषा, संस्कृति आदि के द्वारा आपस में जुड़े हुये है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण दक्षिण एशिया सैनिक और सुरक्षा की दृष्टि से एक है। यदि यह पूरा क्षेत्र अपने सुरक्षा संगठन को एक विशेष स्वरूप न दे तो यह क्षेत्र आक्रमणकारियों का शिकार हो सकता है। वर्तमान परिदृश्य में दक्षिण एशिया के इन देशों के लिये क्षेत्रीय सहयोग की अति आवश्यकता है। ये सभी देश विकासशील देशों के अन्तर्गत आते है आर्थिक विकास के अध्ययन से इन छः देशों में जनसंख्या तथा आर्थिक एवं सामाजिक विकास के प्रतिरूप और उपनीतियों में व्यापक अन्तर है। फिर भी ये सभी देश क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से आसानी से

*सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष, इतिहास विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार उत्तराखण्ड.

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with CamScanner

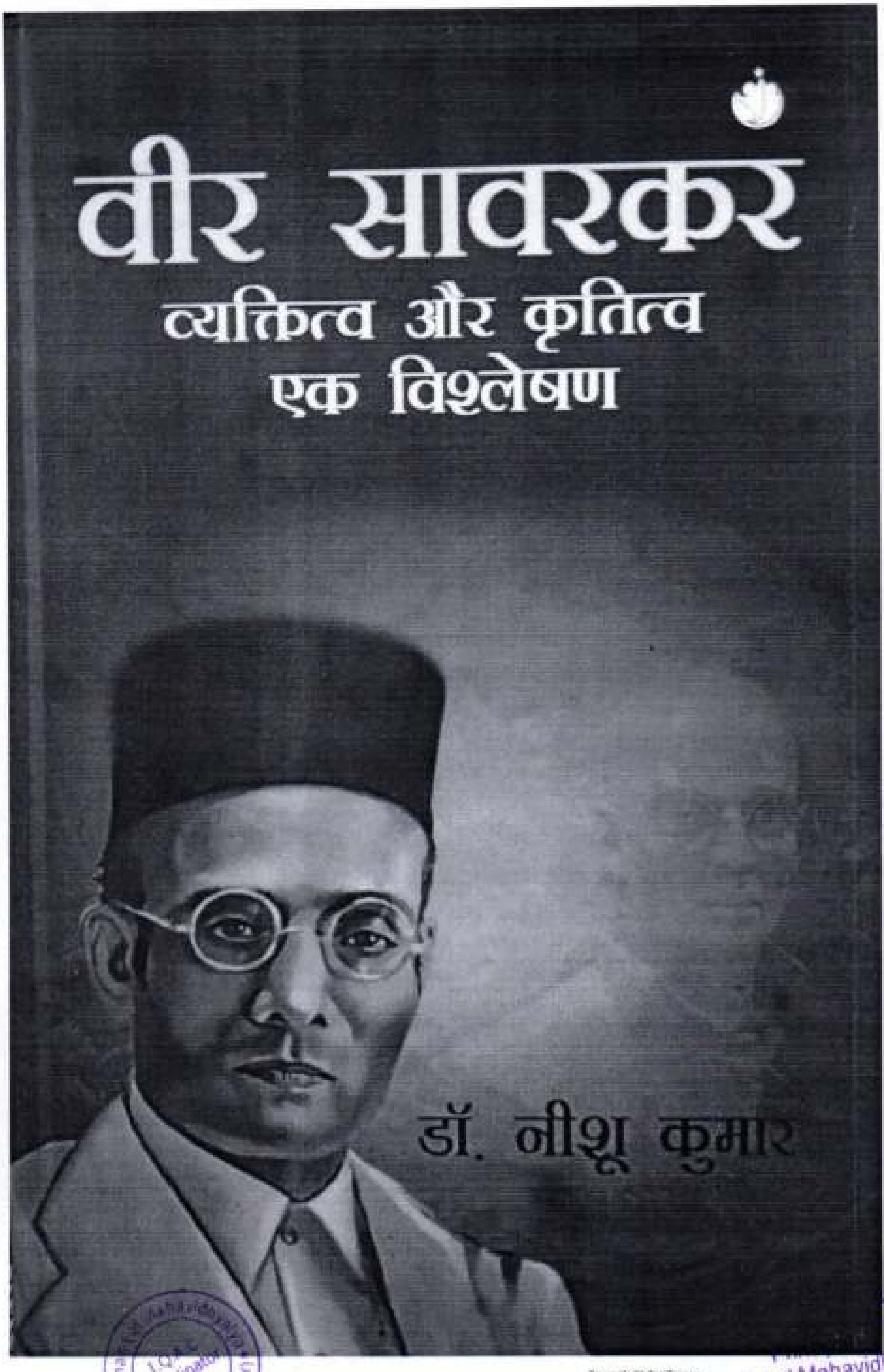

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

ISBN : 978-81-949514-1-4

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
: +9315194807, 9968082809
: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर संयोजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-110094

मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-110032

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने हैं।

Veer Savarkar Viyaktitv aur Kratitiv : Ek Vishleshan

by Dr. Nishu Kumar

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar) IQAC Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

10. वीर सावरकर और महात्मा गाँधी : एक तुलनात्मक अध्ययन — 58
डॉ. देवपाल
डॉ. अनुराग शर्मा

11. विनायक दामोदर सावरकर की राष्ट्रवाद की अवधारणा : एक विश्लेषण — 64
डॉ. विक्रम सिंह
डॉ. मीनू देवी

12. विनायक दामोदर सावरकर : एक आदर्श चरित्र — 70
डॉ. अनुपम त्यागी

13. हिन्दुत्व के पुरोधा एवं स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर — 75
विशाल कुमार लोधी

14. राष्ट्रीय आंदोलन मे वीर सावरकर का योगदान — 82
नरेन्द्र कुमार

15. वीर सावरकर : एक महानतम् क्रांतिकारी — 88
आशीष रावत

16. सावरकर और हिन्दुत्व, हिन्दू और राष्ट्रत्व की संकल्पना — 92
डॉ. प्रकाश चन्द

17. भारतीय बहुलवादी समाज में सावरकर के विचारों का पक्ष – विपक्ष में एक अध्ययन
प्रीति कुमारी — 95

18. सावरकर : राष्ट्रवादी एवं क्रान्तिकारी विचारक
प्रमोद कुमार — 105

19. प्रखर राष्ट्रवादी वीर सावरकर : एक अध्ययन
डॉ. सुगंधा सिंह — 111

20. सावरकर का हिन्दुत्व : एक अध्ययन
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा — 114

21. सावरकर की सामाजिक – राजनीतिक चेतना में हिन्दुत्व बोध
गौरव सिंह — 118

22. सावरकर एवं हिन्दू राष्ट्रवाद की अवधारणा
ज्योति — 127

23. स्वा. वि. दा. सावरकर जी द्वारा लिखित कविताओं में विविध विषयों की समीक्षा
प्रो. केदार रविंद्र कोंडेकर — 131

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura • I.Q.A.C. Coordinator
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

20.

सावरकर का हिन्दुत्व : एक अध्ययन

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा*

इस धरा पर कुछ लोग जन्म भूमि का उद्धार करने के लिये उत्पन्न होते हैं, तो कुछ लोग संसार मे अपने देश का गौरव बढाने के लिए, और कुछ लोग स्वर्ग से भी श्रेष्ठतर माने जाने वाली जन्म भूमि के उद्धार के लिये अपने प्राणों को राष्ट्र सेवा एवं राष्ट्रवाद की साधना मे स्वाहा कर देते हैं। क्रान्तिवीर विनायक दामोदर सावरकर एक ऐसे ही महापुरूष थे जिन्होंने अपने शरीर का एक-एक कण राष्ट्र सेवा मे सोई भारतीय जनता के कानों में संघर्ष का बिगुल बजाकर उनमें राष्ट्रवाद की भावना के उदय हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

महाराष्ट्र के भंगूर ग्राम के चितपावन ब्राह्मण परिवार में वीर सावरकर का जन्म हुआ जिन्हें अपने क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी विचारों के कारण हुतात्मा भी कहा गया। यूरोपीय राजनीतिज्ञों ने भी उन्हें उनके राष्ट्रवादी विचारो के कारण मैजिनी, गैरीबाल्डी, आदि उपाधियो से विभूषित किया।

सावरकर महान देशभक्त राष्ट्रोद्धारक, दिशानायक तथा राष्ट्र को दिशा देने वाले, राष्ट्रवादी एव कुशल संगठन वादी थे। वे महाराष्ट्र की धरती पर पैदा जरूर हुये थे लेकिन वह भारत माता के सच्चे सपूत थें उन्होनें जाति पाँति, छुआ-छूत से दूर समस्त भारतवासियो के दिल में प्रेम ,त्याग एवं स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करने की लौ जलाकर एक पथ-प्रदर्शक का कार्य किया।

सावरकर जो कि एक नास्तिक थें हिन्दूत्व को एक सजातीय, सास्कृतिक तथा राजनैतिक पहचान

---

*सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार।

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

103

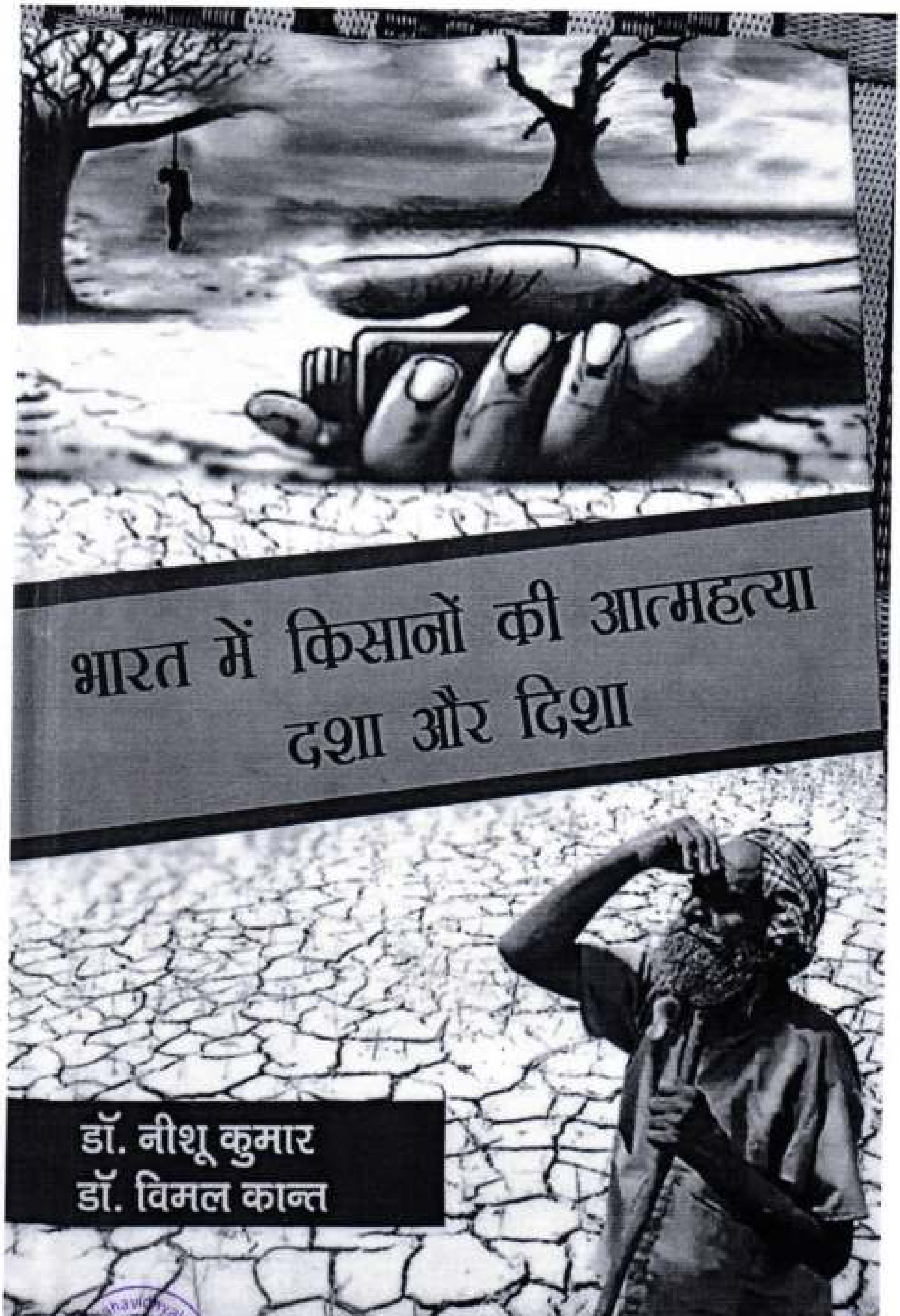

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(104)

ISBN : 978-81-949514-6-9

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
✆ : +9968082809, 9315194807
✉: nalandaaprakashan@gmail.com
प्रथम संस्करण- 2021
अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94
मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Bharat Me Kisano Ki Aatmhatya : Dasha Aur Disha

by Dr. Nishu Kumar
Dr. Vimal Kant

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura • I.Q.A.C. Coordinator

Scanned with CamScanner

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

27. ''स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख किसान आंदोलन : एक अवलोकन''
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा 154

28. WTO भारतीय किसानों की बर्बादी का रास्ता
जगतार सिंह 159
डॉ. ईमरान खान

29. ब्रिटिश शासन से ही भारतीय किसान बर्बाद हो रहे हैं 164
नवीन कुमार
डॉ. प्रशान्त कुमार

30. भारतीय मजदूर और कृषक की आवाज : प्रेमचन्द 170
डॉ. राखी उपाध्याय

31. हरित क्रान्ति किसानों की बर्बादी का कारण 176
डॉ. विक्रम सिंह
डॉ. अतुल कुमार दुबे

32. विश्व बैंक का भारतीय बीज क्षेत्र पर प्रभाव 184
डॉ. देवपाल
संदीप के. पोसवाल

33. WTO का कृषि पर प्रभाव 192
अमिताभ भट्ट
अलका तोमर

34. प्रेमचंद का उपन्यास गोदान और आज का किसान 200
डॉ. कमलजीत कौर

35. वेदों में कृषि और आज का किसान 203
तन्नू शर्मा

36. आज का समय और प्रेमचंद के उपन्यास गोदान का होरी 208
दीपिका शर्मा

37. किसानों की त्रासदी और संजीव का उपन्यास फांस 212
पूनम वर्मा

38. किसान जीवन की जिंदगानी 'पूस की रात' कहानी की जुबानी 232
रमणीक कौर

39. किसान जीवन की करुण गाथा और संजीव का उपन्यास 'फाँस' 238
शालू जमोरिया

40. वर्तमान किसान और प्रेमचंद चिंतन 247
शीतल बनाथिया

41. प्रेमचंद का किसान साहित्य और आज का किसान 251
सईदा मेहराज

IQAC Coordinator
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

27.

"स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख किसान आंदोलन : एक अवलोकन"

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा*

कृषक आंदोलन का इतिहास बहुत पुराना है और विश्व के सभी भागों में अलग-अलग समय पर किसानों ने कृषि नीति में परिवर्तन करने के लिए आन्दोलन किए है ताकि उनकी दशा सुधर सके। भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में अंग्रेजों की शोषणकारी व दमनकारी नीतियों से सबसे ज्यादा किसान प्रभावित हुए, इसलिए आजादी के पहले भी इन नीतियों ने किसान आन्दोलनों की नीव डाली। 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम को अंग्रेजों ने देसी रियासतों की मदद से दबा तो दिया, लेकिन देश में कई स्थानों पर संग्राम की ज्वाला लोगों के दिलों में धधकती रही। इस बीच अनेक स्थानों पर एक के बाद एक कई किसान आन्दोलन हुए। वास्तव में जितने भी किसान आन्दोलन हुए उनके अधिकांश आन्दोलन अंग्रेजी के खिलाफ थे। उस समय के समाचार पत्रों ने किसानों के शोषण, सरकारी अधिकारियों के पक्षपातपूर्ण व्यवहार और किसानों के संघर्ष को प्रमुखता से प्रकाशित किया।

अंग्रेजों की उपनिवेशवादी शोषण का कहकर भारतीय किसानों पर ही सबसे ज्यादा बरपा। औपनिवेशिक आर्थिक नीतियाँ, भूराजस्व की नई प्रणाली और उपनिवेशवादी प्रशासनिक व न्यायिक व्यवस्था ने किसानों की कमर तोड़ दी। फिर दस्तकारी उद्योग के तबाह हो जाने से इन उद्योगों में लगे लोग भी खेती की तरफ वापस लौटने पर मजबूर हुए, जिससे खेती लायक जमीन

*सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar) I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Scanned with CamScanner

107

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

108

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी ...
की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी ...

जम्मू-कश्मीर : पाक प्रायोजित आतंकवाद

ISBN : 978-93-85981-90-6

प्रथम संस्करण : 2018

© सुरक्षित

प्रकाशक
सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-110059 मो. 09899665801
ई-मेल : satyampub_2006@yahoo.com

भारत में प्रकाशित

आर.डी. पाण्डेय द्वारा 'सत्यम् पब्लिशिंग सोल्यूशन', नई दिल्ली के लिए प्रकाशित
कॉन्वेक्स पब्लिशिंग सोल्यूशन, नई दिल्ली द्वारा टाईप सेटिंग तथा ...
प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

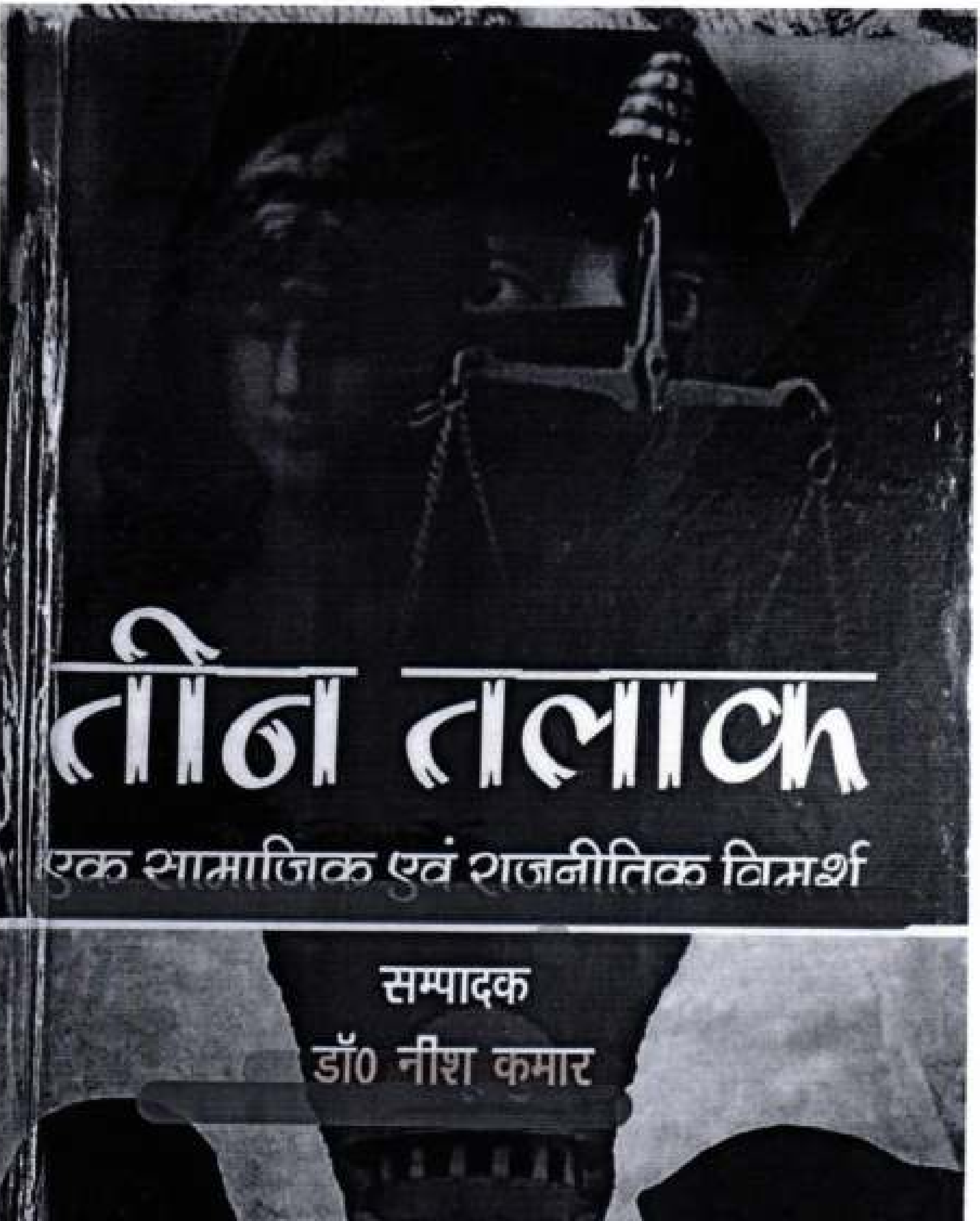

I.Q.A.C. Cordinator
Chaman ... Landhaura (Haridwar)

Scanned with CamScanner

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

ISBN : 978-81-940315-3-6

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
[illegible] दिल्ली-110053
मो०नं० : +9318194007
[illegible]@gmail.com
प्रथम संस्करण- 2019
शब्द संयोजक
[illegible] दिल्ली-94
मुद्रक
[illegible] दिल्ली-32
[illegible]

IQAC Coordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

अनुक्रमणिका

1. 21वीं शताब्दी की भारतीय महिला, एक अध्ययन: सामाजिक, एवं आर्थिक सन्दर्भ में — 1
   डॉ० नीरज कुमार
   अनुज कुमार मडाना
2. भारत में जातिगत राजनीति के मध्य साम्प्रदायिक अन्तर्सम्बन्ध और महिलाएं — 7
   डॉ० विक्रम सिंह
3. महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा : एक आवश्यकता — 19
   डॉ० किरन शर्मा
4. 21वीं सदी में महिलाओं के प्रतिवाद यौन अपराध व समस्यायें — 22
   डॉ० मीरा चौरसिया
5. भारतीय समाज में महिलाओं की समस्यायें बनाम सशक्तिकरण — 27
   विशाल कुमार लोधी
   [illegible] त्यागी

[illegible] सुरक्षा एवं कानूनी प्रावधान — 35
[illegible]

[illegible] सामाजिक समस्या — 41

[illegible] दृष्टिकोण — 44

[illegible] नारी जीवन [illegible] संघर्ष का पर्याय — 50

[illegible] सामाजिक प्रभाव — 58

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

IQAC Coordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar)

11. स्त्री विमर्श का वैदिक स्वरूप 62
डा. दुर्गा जैन
12. कृषि में महिला सहभागिता (हरिद्वार जिले के सन्दर्भ में) 67
विमल कान्त तिवारी
डॉ० नवीन कुमार
13. कामकाजी महिलाओं की भारतीय समाज में भूमिका 71
ज्योति
14. समकालीन हिंदी कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री जीवन : समस्याएँ एवं चुनौतियाँ 76
योगेन्द्र सिंह
आशुतोष शर्मा
15. महिलाएं एवं वैधानिक प्रावधान : एक विश्लेषण (सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पक्ष) 84
पंकज कुमार
16. वर्तमान में डगमगाती महिला सुरक्षा : एक चिंतन 96
सुमित कुमार
17. भारतीय इतिहास में महिलाओं की बदलती सामाजिक स्थिति 100
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा
18. स्त्रीत्व शोषण का सशक्त दस्तावेज 'तुम्हारा सुख' 106
रवि कुमार
19. महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण : सूचना, साक्षरता की भूमिका 110
रणवीर सिंह
प्रदीप के. पोसवाल
20. महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण: सूचना एवं साक्षरता की भूमिका 116
[illegible]
21. [illegible] राज्य में घरेलू कामकाजी महिलाओं की जीवन शैली का बदलता स्वरूप एवं [illegible] भूमिका 122
[illegible] कुमार
22. [illegible] में महिलाओं के विकास में परम्परागत [illegible] की बाधाएं एवं महिलाओं का [illegible] 129
[illegible]
23. [illegible] स्त्री सुरक्षा समस्या एवं चुनौतियाँ 140
[illegible] कुमार

I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar Uttarakhand

110

प्रकाशक:
प्रशांत पब्लिशिंग हाउस
28 फुटा रोड, गली नं. 3,
पश्चिमी करावल नगर, दिल्ली-53
मो. 9810396373
Email: prashantpublishinghouse@gamail.com

तीन तलाक एक सामाजिक एवं राजनीतिक विमर्श

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: 2018

आई.एस.बी.एन: 987-93-80565-59-5

मुद्रक: बालाजी आफसेट, दिल्ली

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with CamScanner

(111)

I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

112

दुनिया में पुरुष और स्त्री के बीच असंतुलन बहुत [illegible] हुआ है। स्त्री को [illegible] तमाम जिम्मेदारियों के बोझ से नीचे दबा दिया गया है, जबकि पुरुष [illegible] सत्ता की ताकत से बराबर ऊपर रखा गया है। सच तो यह है कि हमारे समाज में अब तक पुरुष द्वारा स्त्री के प्रति क्रूरता दिखाने का पुरुषत्व की एक शैली ही माना और समाज-स्वीकृति अभिव्यक्ति का दर्जा दिया जाता रहा है जैसा कि पुरुष द्वारा पिटने और दबे रहने को स्त्रीत्व का दर्जा दिया जाता है।

इस पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री जाति को स्वतंत्रता कभी नहीं मिली। इसलिए जीवन यापन की छोटी से छोटी जरूरतों के लिए भी वे मजबूर होती हैं। कोई पिता के पास, कोई पति के पास, कोई पुत्र के पास रहकर अपने जीवन का सहारा ढूंढती है। यदि स्त्री को किसी तरह की मजबूरी न रहे, यदि सभी प्रकार की मजबूरी से स्त्री मुक्त हो सके तो किसी की हिम्मत नहीं होगा कि स्त्री को जंजीरों से बांध सके। इसके लिए स्त्रीवादी विमर्श की आवश्यकता है कि स्त्री को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना चाहिए।

डॉ. नीशू कुमार का जन्म 01 जनवरी 1988 ग्राम [illegible], जिला हापुड़, उत्तर प्रदेश में एक किसान परिवार में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा यहीं से हुई व एम०ए०, एम०फिल०, पीएच०डी० की उपाधि चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के राजनीति विज्ञान विभाग से प्राप्त की। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित यू०जी०सी० नेट परीक्षा उत्तीर्ण की। युवा राजनीति विज्ञानी के रूप में लगभग 20 राष्ट्रीय संगोष्ठी, 5 अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शिरकत, एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक, एक प्रस्तावित राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजक सचिव। भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की डाक्टरल फैलोशिप प्राप्त और एक प्रोजेक्ट बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ मूल्यांकन / [illegible] में। आप विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षिक समिति सदस्य के साथ साथ ही भारतीय राजनीतिक विज्ञान परिषद के आजीवन सदस्य की सक्रिय भूमिका के रूप में कार्यरत [illegible] तथा भिन्न-भिन्न शोध पत्रिकाओं, जर्नल व सम्पादित पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके हैं। आप राजनीति विज्ञान विषय के सहायक आचार्य के रूप में चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, रुड़की, हरिद्वार में कार्यरत हैं और महाविद्यालय में निरन्तर सेवाएँ दे रहे हैं।

AP

AARTI PRAKASHAN
4561/16, Ansari Road, Darya Ganj
New Delhi- 110002
Mob. : 9811068537, 8958394215
e-mail : surendrapublications@gmail.com

₹ [illegible]/-

I.Q.A.C. Cordinator
Chaman [illegible] Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

113

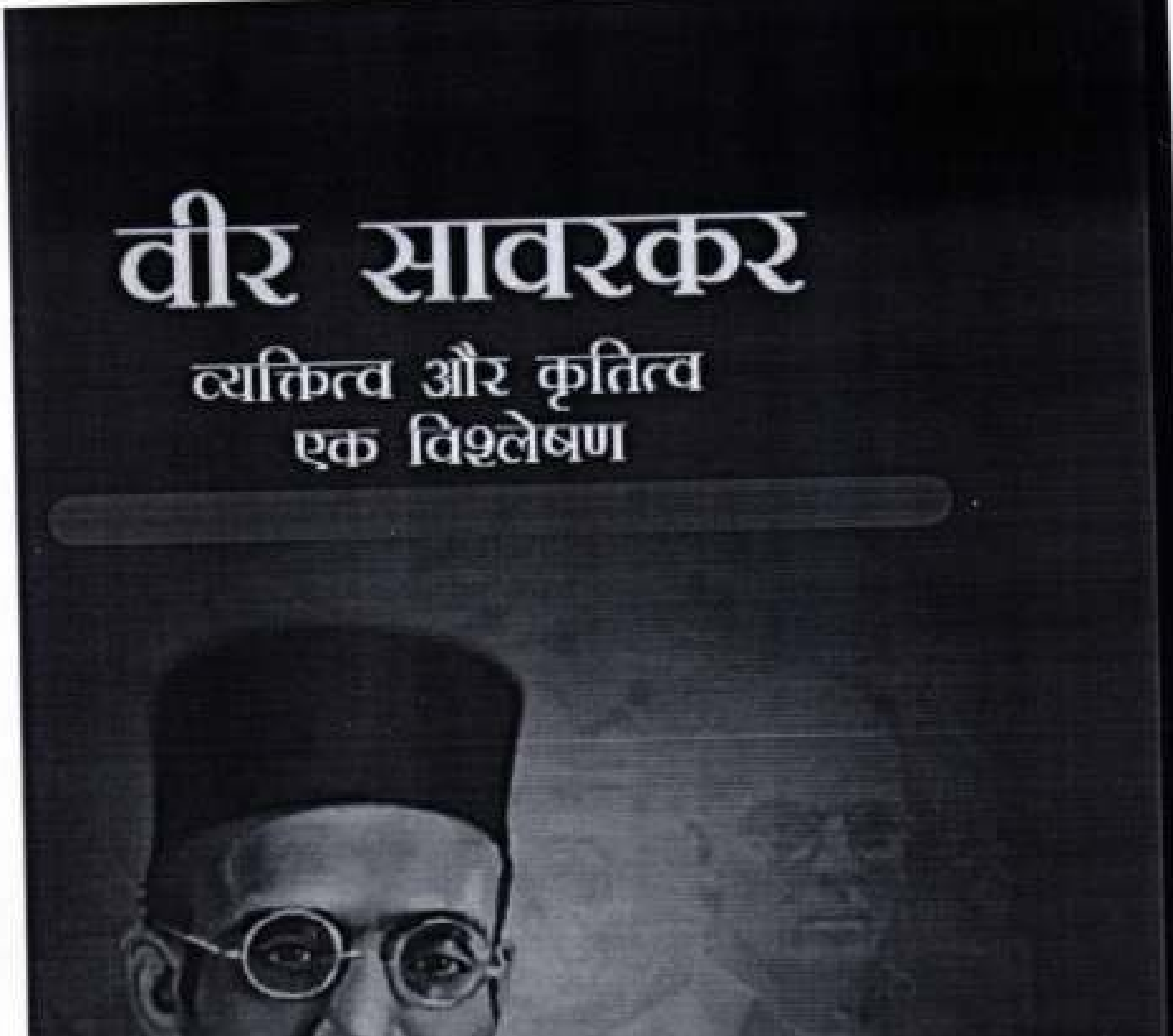

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

114

वीर सावरकर

व्यक्तित्व और कृतित्व : एक विश्लेषण

संपादक

डॉ. नीशू कुमार

सहायक आचार्य/अध्यक्ष

राजनीति विज्ञान विभाग,

चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा

हरिद्वार, उत्तराखण्ड

नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

I.Q.A.C. Co-ordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(115)

ISBN : 978-81-949514-1-4

© संपादक

प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

: +9315194807, 9968082809

: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर संयोजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-110094

मुद्रक

ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-110032

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने है।

Veer Savarkar Viyaktitv aur Kratitiv : Ek Vishleshan

by Dr. Nishu Kumar

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C. Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

116

INDIAN COUNCIL OF WORLD AFFAIRS

दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एंव विकास में भारत की भूमिका

डॉ. नीशू कुमार

Chaman Lal Mahavidyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(147)

दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एवं विकास में भारत की भूमिका

संपादक

डॉ. नीशू कुमार

सहायक आचार्य/अध्यक्ष

राजनीति विज्ञान विभाग

चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा,

हरिद्वार उत्तराखण्ड

नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(118)

ISBN : 978-81-945976-0-5

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
✆ : +91-315194807, 91-9968082809
✉: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021
अक्षर सर्योजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनंप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनंत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने है।

Dakshin Asia Me Rajnitik Isthirta Evam Vikas Me Bharat Ki Bhumika
By - Dr. Nishu Kumar

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

119

भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण सम्पूर्ण समाज का उत्थान

डॉ. नीशू कुमार
डॉ. तीर्थ प्रकाश

भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण सम्पूर्ण समाज का उत्थान
डॉ. नीशू कुमार डॉ. तीर्थ प्रकाश

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(120)

भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण सम्पूर्ण समाज का उत्थान

संपादक

डॉ. नीशू कुमार

सहायक आचार्य

राजनीति विज्ञान विभाग

चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा

हरिद्वार, उत्तराखण्ड

डॉ. तीर्थ प्रकाश

एसोसिएट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

राजकीय महाविद्यालय मंगलौर

हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt-Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

121

ISBN : 978-93-91018-06-1

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
: +9315194807, 9968082809
: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर संयोजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-110094

मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-110032

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने हैं।

Bhartye Samaj Me Mahila Sashktikaran Sampurn Samaj ka Utthan

by Dr. Nishu Kumar
Dr. Tirth Parkash

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

122

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

(123)

ISBN : 978-81-949514-6-9

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
✆ : +9968082809, 9315194807
✉: nalandaaprakashan@gmail.com
प्रथम संस्करण- 2021
अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94
मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनुप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Bharat Me Kisano Ki Aatmhatya : Dasha Aur Disha

by Dr. Nishu Kumar
Dr. Vimal Kant

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(124)

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता

संपादक
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

सह संपादक
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

Cordinator

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

125

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

के विचारों की प्रासंगिकता

संपादक

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

चमनलाल महाविद्यालय लन्ढौरा (हरिद्वार)

सह संपादक

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग

चमनलाल महाविद्यालय लन्ढौरा (हरिद्वार)

प्रगतिशील प्रकाशन

नई दिल्ली (भारत)

Chaman Lal Mahavidhyalaya • I.Q.A.C. Coordinator • Landhaura (Haridwar)

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(126)

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-86246-84-4

प्रकाशक:
प्रगतिशील प्रकाशन
एन-3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 (भारत)
दूरभाष: 09899665801
ई-मेल : pragatisheelprakashan@yahoo.in

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर
के विचारों की प्रासंगिकता

मूल्य : ₹ 700.00
प्रथम संस्करण : 2018
© सुरक्षित

भारत में प्रकाशित-

'प्रगतिशील प्रकाशन', नई दिल्ली के लिए प्रकाशित। सत्यम् प्रिंटोग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, द्वारा मुद्रित।

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar) I.Q.A.C. Cordinator

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

1279

विषय–सूची

आभार (iii)

भूमिका (iv)

1. 21वीं सदी में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता व प्रभाव
✍ डॉ. धमेन्द्र कुमार 1

2. हिंदू राष्ट्रवाद, संविधान और डॉ. अंबेडकर
✍ डॉ सुशील उपाध्याय 10

3. अस्मिताओं का सहअस्तित्व
✍ डॉ. रूचि सिंह 17

4. भारत में दलित सामाजिक आज़ादी और समावेशन : समय की मांग
✍ डॉ. तीर्थ प्रकाश 23

5. महिलाओं के विकास में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का चिंतन
✍ डॉ. नीशु कुमार 28

6. महिला सशक्तिकरण में अम्बेडकर की भूमिका
✍ Km. Hemlata verma 40

7. बाबा साहेब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के सामाजिक न्याय की झलक
✍ गुंजन जैन 45

8. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के आर्थिक विचार-एक समीक्षा
✍ डॉ. किरण शर्मा 49

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar) I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

8

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के आर्थिक विचार –एक समीक्षा

[redacted]

डॉ. किरण शर्मा
सहायक आचार्य
वाणिज्य संकाय
चमन लाल महाविद्यालय
[redacted]

"डॉ. अम्बेडकर उन चन्द आर्थिक सिद्धान्तकारों में से एक थे जिनका आर्थिक नीतियों और योजनाओं के प्रति दृष्टिकोण व्यवहारिक और लोक हितकारी था। 'सामाजिक अर्थव्यवस्था' पर उनका जोर उन्हें आर्थिक चितकों में एक अनूठा स्थान प्रदान करता है।

– सिंथिया स्टीफेन

शोध सारांश

डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचार धारा का नाम है जो अपने तीव्र वेग में जातिप्रथा, साम्प्रदायिकता, अज्ञानता, अशिक्षा, भेदभाव की गंदगी को बहा ले जाने के लिए तत्पर है। डॉ. अम्बेडकर एक ऐसे विद्वान समाजसुधारक के रुप में नजर आते है जिन्होंने अपने ज्ञान का उपयोग सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि पूरे समाज के विकास के लिए किया। इस बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति ने समस्याओं को जड़ से उखाड़ने के लिए अपने सम्पूर्ण ज्ञान का बहुत ही बेहतर तरीके से उपयोग किया है जिनमें उनके आर्थिक विचार भी महत्वपूर्ण है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर केवल एक राजनीतिज्ञ ही नहीं थे वे एक महान शिक्षाविद् और अर्थशास्त्री भी थे। वे अपने समय के एक मात्र सांसद थे जो भारतीय अर्थव्यवस्था और बैंकिंग से सम्बन्धित आधिकारिक आँकड़े और उनकी सुस्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत करने में सक्षम थे। (प्रो. एस. के. नाथन, द रेवोल्यूशनरी बी. आर. अम्बेडकर एण्ड ह्यूमन राइट्स) उपरोक्त पंक्तियां अम्बेडकर के

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • I.Q.A.C. Coordinator

129

गुरुकुल शिक्षापद्धति एवं आधुनिक परिवेश मे इसकी प्रासंगिकता

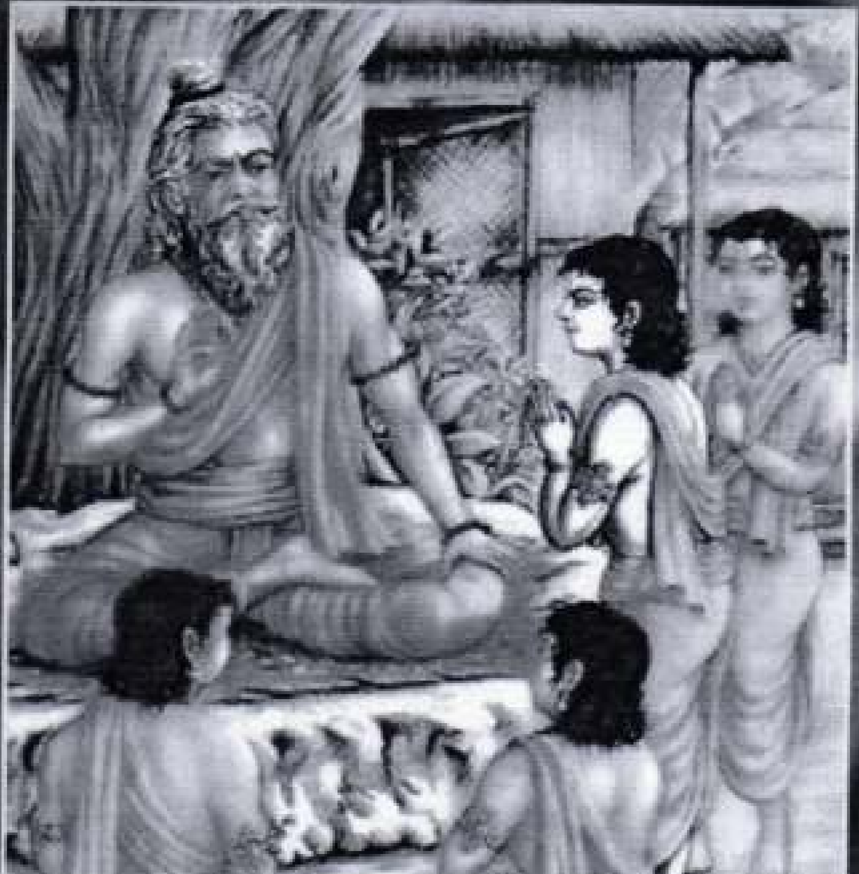

डॉ. नीशू कुमार

अनामिका चौहान

I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(130)

गुरूकुल शिक्षा पद्धति
एवम्
आधुनिक परिवेश में इसकी प्रासंगिकता

संपादक

डॉ. नीशू कुमार

अनामिका चौहान

नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

IQAC Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(131)

ISBN : 978-81-942838-0-5

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : +9968082809, 9315194807
ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक
ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

Gurukul Shiksha Padhatti Evam Adhunik Parivesh Me Iski Prasangikta

by Dr. Nishu Kumar
Anamika Chauhan

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura • I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

132

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

भूमिका

1. आधुनिक शिक्षा पद्धति एवं गुरुकुल व्यवस्था: एक अध्ययन 1

डॉ. नीशू कुमार

2. गुरूकुल शिक्षा पद्धति बनाम आधुनिक शिक्षा पद्धति : एक विश्लेषण 10

डॉ. मोनू सिंह

3. प्राचीन भारत में शिक्षा का स्वरूप 19

डॉ. प्रतीत कुमार

4. आधुनिक शिक्षा या मानवीय शिक्षा 24

दीपक राठी

5. गुरूकुल शिक्षा पद्धति के सन्दर्भ में योग शिक्षा का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन 29

संजीव कुमार

डॉ. एस. के. लखेड़ा

6. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं उसमें गुरू की भूमिका 35

सुनील कुमार तोमर

डॉ. राकेश कुमार शर्मा

7. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता 41

संजीव कुमार

8. भारत में गिरता शैक्षणिक स्तर : कारण और निदान 45

पंकज कुमार

9. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसका महत्व 53

डॉ. अम्बिका प्रसाद ध्यानी

Principal

Chaman Lal Mahavidhyalaya

Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(133)

10. गुरूकुल शिक्षा पद्धति में भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं अध्यात्म का महत्व 62
डॉ. निधि शर्मा

11. आधुनिक शिक्षा पद्धति में त्रिऋण बनाम बैंक ऋण एक विश्लेषण 69
अरूणा यादव
डॉ. अल्का तोमर

12. भारत में वितीय समावेशन एक अध्ययन :शिक्षा की जागरुकता के संदर्भ में 77
शीलम भड़ाना
सचिन कुमार

13. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक परिवेश में इसकी उपादेयता 87
विशाल कुमार लोधी
डॉ. दीप्ती कौशिक

14. प्राचीन भारत में गुरुकुल प्रणाली 98
राम गुलाब सिंह

15. गुरूकुल शिक्षा पद्धति में अर्थशास्त्र: एक अवलोकन 102
के. संदीप पोरवाल
ललिता कुमारी

16. वर्तमान समय में गुरूकुल शिक्षा पद्धति की उपयोगिता 112
डॉ. राकेश चन्द्र
डॉ. संजय कुमार

17. प्राचीन भारत में गुरूकुल शिक्षा पद्धति : एक ऐतिहासिक विश्लेषण 118
जितेन्द्र कुमार

18. आधुनिक शिक्षा पद्धति और गुरूकुल शिक्षा पद्धति में शिक्षक की भूमिका 122
डॉ. प्रताप सिंह बिष्ट

19. शैक्षिक गुणवत्ता में ह्रास: कारण एवं निदान 127
प्रो. दिनेश चमोला
रीना अग्रवाल

20. गुरूकुल शिक्षा पद्धति का ऐतिहासिक संदर्भ
उमेश चन्द 133

21. आधुनिक शिक्षा में सूचना, संचार तकनीकी की भूमिका 145
डॉ. रीना चौरसिया

22. गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं भारतीय संस्कृति का अन्त संबंध 149
शालिनी शोधार्थिनी
डॉ. हिमांशु कुमार

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

134

23. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन — 155
ज्योति

24. प्राचीनकाल में उच्च शिक्षा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन — 159
डॉ. प्रियंका अग्रवाल

25. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक विवेचन — 166
रेनू

26. गुरूकुल शिक्षा के विविध सन्दर्भ — 174
सुप्रिया रावत

27. गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक संदर्भ — 178
प्रो. आशा राणा

28. प्राचीन ग्रामीण व्यवस्था एवं महात्मा गांधी — 184
आशुतोष शर्मा
सरवला सार्वधान

29. ''वर्तमान समय में गुरूकुल शिक्षा-व्यवस्था की ओर लौटते विश्वविद्यालय: एक विमर्श'' — 193
बबीता रानी

30. बिहार में शैक्षणिक पतन के राजनीतिक एवं प्रशासनिक पहलू — 198
डॉ. बीरेन्द्र कुमार

31. प्राचीन गुरूकुल बनाम आधुनिक विश्वविद्यालय — 206
प्रविन्द्र कुमार
दीपक राठी

32. आधुनिक शिक्षा प्रणाली बनाम प्राचीन शिक्षा प्रणाली: एक दृष्टिकोण — 214
डॉ. दीर्घपाल सिंह भण्डारी

33. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की भूमिका — 217
डॉ. हेमा देवी

34. गुरूकुल शिक्षा पद्धति बनाम आधुनिक शिक्षा प्रणाली संक्षिप्त परिचय — 222
डॉ. मयंक मोहन

35. ''गुरूकुल शिक्षा पद्धति का ऐतिहासिक सन्दर्भ'' — 227
निर्मला

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(135)

36. गुरुकुल शिक्षा पद्धति की सार्वकालिक उपादेयता 232
डॉ. ओमपाल सिंह

37. प्राचीन शिक्षा और वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अन्तर 236
प्रो. ओमप्रकाश बरबड़े

38. भारत में महिलाएँ : एक बदलती तस्वीर 240
कु. प्रवीन

39. साम्प्रतिक संदर्भ में बदलती सामाजिक परिस्थिति और नैतिक मूल्यों का ह्रास : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण 246
डॉ. शेफाली शुक्ला

40. भूमण्डलीकरण, मीडिया और भारतीय महिला 252
डॉ. शालिनी

41. उच्च प्राथमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन 260
शंकर सिंह
प्रो.रमा मैखुरी
अनित कौर

42. भारत में शिक्षा का गिरता स्तर पर: संछिप्त अध्ययन 268
डॉ. शरद कुमार

43. **Applicability of Gurukul Education System in Present Circumstance** 274
Anamika Chauhan

44. **Gurukul System And Role Of Guru In Man Making** 279
Dr.Anita Moral

45. **Benefits Of Gurukul Yoga Education** 286
Prof. j.s. Bhardwaj
km. Pooja Saini

46. **Gurukul Education System And Modern Education System: A Comparative Study** 294
Bhawna Gupta

47. **Declining Moral Values in Indian Education System** 300
Dr. Chanchal Garg

48. **Ancient Gurukula Education And Modern Education Of Values** 304
Neha Sharma

49. **Employment Versus Gurukul Education System: A Review** 307
Dr. Kiran Sharma
Pallavi Bhardwaj

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

T36

49.

"Employment Versus Gurukul Education System: A Review"

Dr. Kiran Sharma*
Pallavi Bhardwaj**

In the present competitive world, education is a basic necessity for human beings after food, clothing and shelter. Education gives us knowledge of the world around us and changes it into something better. It develops a perspective to see the world. It is said, "A man without education is like a building without foundation."

Our first teachers are our parents. They teach us how to walk, speak our native tongue and many other things. After that a child gets enrolled into a school, where teachers play a vital role. They teach us various important topics and specialised subjects.

It is rightly said that, "School is the second home for a child."

A school is an educational institution designed to provide learning space and learning environment for the teaching of students under the direction of teachers. Most countries have systems of formal education, which is commonly compulsory. In these systems, students

* Assistant Professor , Chaman Lal Mahavidyalaya , Landhaura.
**Assistant Professor, Brd College, Roorkee.

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • I.Q.A.C. Cordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

137

STATUS OF UPCOMING TRENDS IN BIODIVERSITY CONSERVATION

Editor

Dr. Richa Chauhan

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal ... Landhaura (Haridwar)

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

138

STATUS OF UPCOMING TRENDS IN BIODIVERSITY CONSERVATION

Editor
Dr. Richa Chauhan

EDUCATIONAL BOOK SERVICE
NEW DELHI (INDIA)

Chaman Lal Mahavidyalaya
I.Q.A.C. Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(139)

The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the author/editor. The publisher bears no responsibility for them whatsoever.

ISBN : 978-93-86541-78-9

Published by:
Educational Book Service
N3/25 D.K. Road, Mohan Garden,
Uttam Nagar New Delhi-110059
Contact: +91-9968277749
E-mail: ebs.2012@yahoo.in

Status of Upcoming Trends in Biodiversity

Price : 700/-
© Reserve
First Edition : 2019

Printed in India

Published by R. D. Pandey for '**Educational Book Service**', New Delhi.
Layout by Satyam Printographics, New Delhi and Printed at *Vishal Kaushik Printer*, Shahdra, Delhi.

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

140

CONTENTS

1. Modern Systems of Classification and Characterization of Diversified Crude Drugs 1
   Vipin Kumar Sharma

2. Assessment of Pollution by Physicochemical Water Parametersof Ram Ganga River at Moradabad, India 12
   Animesh Agarwal, Nitin Kumar Agrawal

3. Ground Water Pollution by Arsenic 19
   Akbare Azam

4. Removal of Methylene Blue Dye from Aqueous Solution Using Leaves Powdered as Sorbent 26
   Amita Sharma

5. Environment and Wordsworth's Poetry 30
   Dr Deepa Agarwal

6. Honeybee: A Good Pollinator of Important Plants 37
   Deepesh Saini, Shivalika Sharma And P.C. Joshi

7. Operations Strategy in a Global Environment 42
   Dr. Naveen Kumar, Dr. Vikas Kumar

8. Physico-chemical Studies of Tannery Waste and Sewage Sludge To Estimate Toxic Level And Organic Content In Amended Soil 52
   Neeraj Kumar[1], Radhey Shyam[2] And Surekha Kannaujia[3]

9. Human Health issues Due to Smoke From Wood fire 65
   Dr. Neetu Gupta

10. Necessity for Biodiversity Conservation 67
    Dr. Swati Vats

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(P41)

11. **Role of Plant microbial diversity in future biocontrol and health trends** 74
Pooja Mishra

12. **Tiger: Near The Age of Extinction** 79
*Praveen Dhama, Pradeep Sirohi**

13. **Ghaggar Water Pollution and Its Impact On Human Health** 84
Ravi Kant Pareek[1], Dr. Ambrina S. Khan[2], Dr. Parteek Srivastva[3], Dr. Surendra Roy[4]*

14. **Ecological Fortification Through Biodiversity** 92
Capt. Dr. Satendra Kumar

15. **A Review on Green Manufacturing It's important, Methodology and Applications** 104
Naveen Kumar, Suryakant Sharma

16. **"Testing the water quality of irrigation water of different sub-canals of Gurukul Narsan (Roorkee) and nearby areas"** 112
Vaishali, Dr. Manjul Dhiman

17. **Bio-control Potential and Efficacy of Entomopathogenic Nematodes Aagainst Their Target Insect Pests** 118
Vidhi Tyagi

18. **Simulated Acid Rain Effect on Some Growth Responses of Legumes** 126
Vinita Singh

19. **Environmental Politics : A Global Perspective** 137
Dr. V.K. Gupta

20. **Multi-drug Resistance In Bacteria Isolated From Drinking Water** 153
Gunja

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

142

21. Ecological Consciousness in the Poetry of William Wordsworth 159
Aprana Sharma

22. Effect of Climate Change on Planktonic Growth And Abundance 166
Dr. Deepika Saini

23. जैव विविधता: एक अवलोकन 168
डॉ. नीशू कुमार

24. पर्यावरण तथा आर्थिक विकास मे सन्तुलन 174
डॉ. किरण शर्मा

182

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

24

पर्यावरण तथा आर्थिक विकास मे सन्तुलन

डा. [illegible] किरन शर्मा
सहायक आचार्य
चमन लाल महाविद्यालय
लण्ढौरा

शोध सारांश

पर्यावरण को हम विकास के साथ नहीं बल्कि उसके विरूद्व समझ कर चलते है हम सभी के दिमाग में यह द्वन्द सदा चलता रहता है कि यदि विकास को महत्व दिया जायेगा तो पर्यावरण को खतरा है और यदि पर्यावरण की और ध्यान दिया तो देश का विकास बाधित होगा।

औद्योगिक विकास के कारण लोग गाँवों से शहरो की ओर रूख कर रहे है जिस कारण शहरों मे जनसंख्या का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है और साथ मे बढ़ती जा रही है उनके रहने के लिए सुख-सुविधाओं की माँग। इस सुख सुविधाओं को पूरा करने के लिए अनियन्त्रित विदोहन होता है प्रकृति का और इस अनियन्त्रित विदोहन के कारण प्रदूषण दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

महानगरों का द्रीव गति से विस्तार हो रहा है। जहाँ आवागमन के साधन दिन रात हवा को जहरीला बना रहे हैं वही कल कारखाने जहरीला रसायन रसायन धरती मे पहुँचा रहे है। नदियों को गंदगी प्रवाहित करने का जरिया समझ लिया गया है। भूमिगत जल के अंधाधुत विदोहन के कारण वह रसातल मे पहुँच चुका है।

उपभोग की प्रवृति लगातार बढ़ती जा रही है, जिससे कचरा बढ़ता जा रहा है। जरूरतों को पूरा करने के लिए वनों का सफाया किया जा रहा है जो पर्यावरण को स्वच्छ रखने में बड़ी भूमिका निभाते है।

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

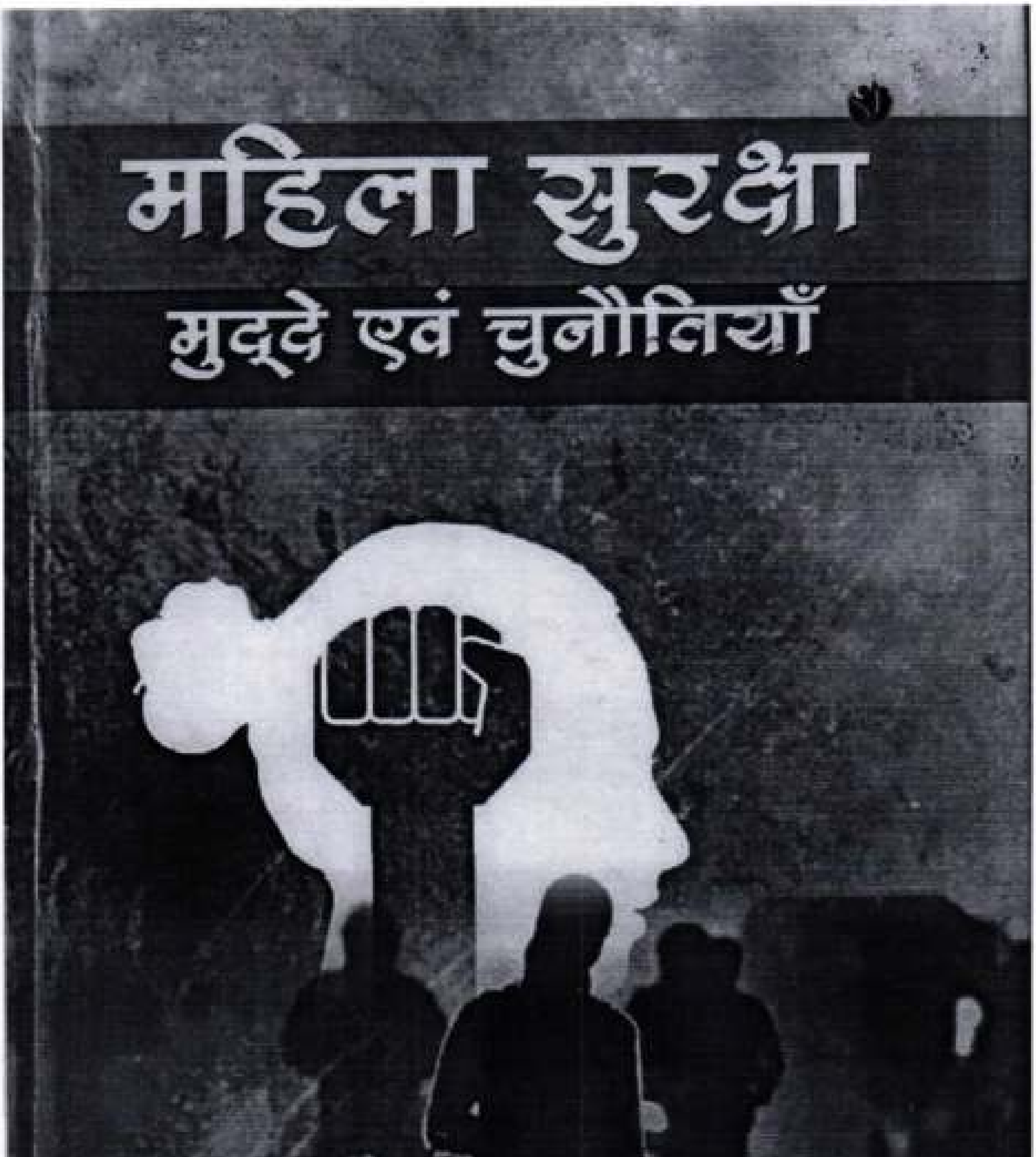

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

145

महिला सुरक्षा
मुद्दे एवं नीतियां

संपादक
डॉ. अलका तोमर
एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विभाग
बी. एस.एम पी.जी. कॉलेज रूड़की
एवं
अनुज कुमार भडाना

नालंदा प्रकाशन
दिल्ली

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

ISBN : 978-81-940315-3-6

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : +9315194807
ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा दिल्ली-94

मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज दिल्ली-32

Mahila Suraksha : *Mudde Evam Chunoutinya*

by Dr. Alka Tomar
Anuj Kumar Bhadana

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(147)

अनुक्रमणिका

1. 21वीं शताब्दी की भारतीय महिला, एक अध्ययनः सामाजिक, एवं आर्थिक सन्दर्भ में — 1

डॉ० नीशू कुमार

अनुज कुमार भड़ाना

2. भारत में जातिगत राजनीति के मध्य साम्प्रदायिक अन्तर्सम्बन्ध और महिलाएँ — 7

डॉ० विक्रम सिंह

3. महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा : एक आवश्यकता — 19

डॉ० किरन शर्मा

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

148

3

महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा : एक आवश्यकता

डॉ० किरन शर्मा•

"मैं किसी समुदाय की प्रगति, महिलाओं ने जो प्रगति हासिल की है उससे मापता हूं।

\- डॉ० भीमराव अम्बेडकर

महिलाएँ कहने को किसी भी समाज का आधा हिस्सा कहलाती हैं क्या वास्तव में वे आधा हिस्सा होने का अधिकार रखती हैं यह एक पक्ष प्रश्न है। महिलाओं को बचपन पिता के साये तले गुजारना है तो किशोरावस्था भाई के दबाव में जीनी होती है, जवानी पति की आज्ञा में गुजरती है और बुढ़ापा गुजरता है बेटों की इच्छा पर। परिवार की आन-बान-शान को बनाये रखने की जिम्मेदारी भी महिलाओं के कंधे पर ही होती है। सारे रिवाज एवं रवायतें निभाने का दायित्व भी महिलाओं का ही होता है। सारी बंदिशे सारी टोकाटाकी सिर्फ महिलाओं के हिस्से में ही आती है। शादीशुदा दिखने का दायित्व भी महिलाओं का है तो विधवा दिखने का कर्तव्य भी उन्हीं का क्या-क्या परेशानियाँ नहीं होती हैं महिलाओं के जीवन में क्या कुछ नहीं करना पड़ता है स्वयं को आदर्श नारी दिखाने बनाने के लिए क्या हमेशा नारी ऐसी ही थी नहीं यह हम सभी जानते हैं कि वैदिक युग में नारी की ऐसी खराब स्थिति नहीं थी। वैदिक युग में महिलाओं को बराबर का स्थान मिला हुआ था। उनकी शिक्षा दीक्षा में कोई भेदभाव नहीं था, घूमने-फिरने पर कोई रोक-टोक नहीं थी। उनके लिए स्वयंवर की व्यवस्था थी जो कि एक ऐसी व्यवस्था थी जिसमें उसे अपने लिए उपयुक्त वर का चुनाव करने की आजादी थी। महिलाओं को उस समय में सम्पत्ति में बराबर का अधिकार दिया जाता था। शस्त्र एवं शास्त्र दोनों पर समान अधिकार महिलाओं को प्राप्त था जितनी सहजता से शास्त्र का ज्ञान हासिल करती थी उतनी सहजता से युद्ध कला में प्रवीणता प्राप्त करती थी। वेदों में "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" का उद्घोष सुनायी देता था। देवी का स्थान देकर उसे महिमामंडित किया जाता था। किसी धार्मिक कार्य में पत्नी का साथ होना अनिवार्य होता था।

तभी तो अश्वमेध यज्ञ में सीता की सोने की मूर्ति बनाने का उदाहरण सामने आता है। वैदिक काल एवं उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की दशा सम्मानजनक थी किन्तु धीरे-धीरे स्त्रियों का स्थान दोयम दर्जे की ओर खिसकने लगा और यह स्थान रसातल में चला गया उस समय जब विदेशी

• सहायक आचार्य वाणिज्य संकाय चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

I.Q.A.C. Coordinator Chaman Lal Mahavidyalaya • Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(149)

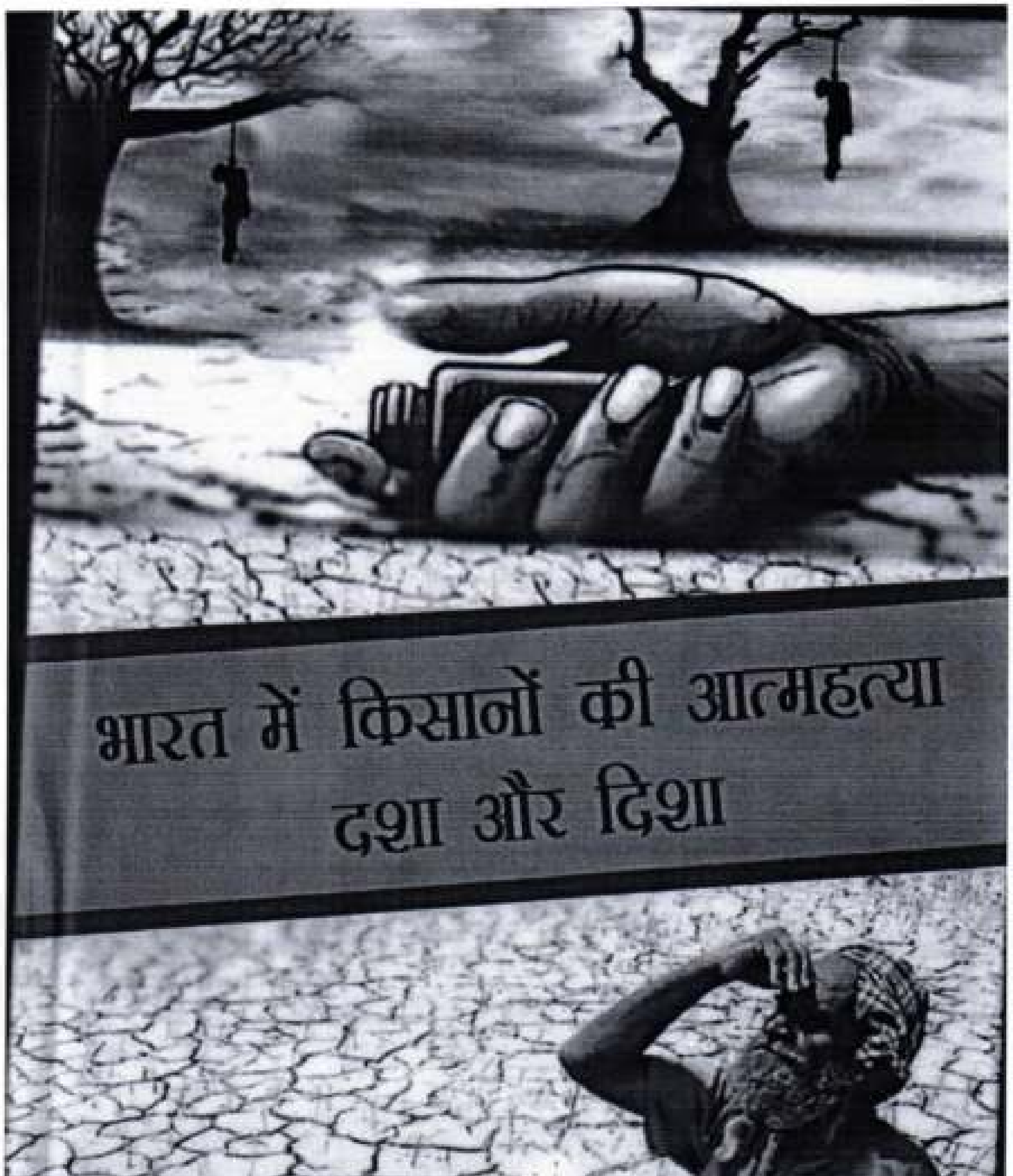

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

भारत में किसानों की आत्महत्या : दशा और दिशा

संपादक

डॉ. नीशू कुमार

सहायक आचार्य/अध्यक्ष

राजनीति विज्ञान विभाग

चमनलाल महाविद्यालय, लण्ढौरा

(हरिद्वार), उत्तराखण्ड।

डॉ. विमल कान्त

सहायक आचार्य/अध्यक्ष

अर्थशास्त्र विभाग

चमनलाल महाविद्यालय, लण्ढौरा

(हरिद्वार), उत्तराखण्ड।

नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

Principal

Chaman Lal Mahavidhyalaya

Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(151)

ISBN : 978-81-949514-6-9

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
✆ : +9968082809, 9315194807
✉: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक
ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डि सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रू में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Bharat Me Kisano Ki Aatmhatya : Dasha Aur Disha

by Dr. Nishu Kumar
Dr. Vimal Kant

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

152

अनुक्रमणिका

भूमिका

1. कृषक आत्महत्या के कारण एवं सुझाव सहित समाधानों का मूल्यांकन — 1
डॉ. नीटू कुमार

2. भारत में किसान आत्महत्याः समस्या एवं समाधान — 8
डॉ. आनन्द नन्द त्रिपाठी

3. मर रहा खेतों में किसान, कैसे कह दूं कि मेरा भारत महान — 12
जगदीश रावत

4. हिन्दी साहित्य में किसानः समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण — 19
कुठियाल

5. बाजारवाद के समय में किसान आत्महत्याः 'हलफनामे' उपन्यास के सन्दर्भ में — 26
दीपा रानी

6. भारतीय किसान और कर्जमाफी : एक समीक्षात्मक अध्ययन — 30
दीपक राणा
एकता चौहान

7. भारत को किसान रहित करने की साजिश — 34
रवि पोसवाल
कमल कान्त कौशिक

8. किसानों की आत्महत्या का कारण चीनी — 40
डॉ. दीपक खाटी
डॉ. मनोज कुमार

9. भारत एक कृषि आधारित उद्योग प्रधान देश था : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन — 46
डॉ. दीपक राठी

10. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में किसानों की भूमिका — 53
डॉ. हिमांशु यादव

11. भारत में किसान आन्दोलनः एक दृष्टि — 63
डॉ. कविता पाठक

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

153

12. ''कर्जदार किसानों की आत्महत्या -एक अध्ययन'' 70

डॉ. किरन शर्मा [redacted]

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • I.Q.A.C. Coordinator

12.

"कर्जदार किसानों की आत्महत्या -एक अध्ययन"

डॉ. किरन शर्मा*

"भारतीय किसान कर्ज में जन्म लेता है कर्जों में ही रहता है तथा कर्ज में ही मर जाता है।"

श्री एस एल डार्लिंग

"जय जवान जय किसान" जो हां यही नारा दिया था हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने क्योंकि वे जानते थे सुरक्षा के महत्व को खेती की महत्व को किंतु बाद के वर्षों में किसान की आत्महत्या की खबरों ने इस नारे की ओजस्विता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। ऐसा क्या हो गया है कि पूरे देश का पैर बनने वाला किसान अपनी दो वक्त की रोटी जुटाने में असमर्थ है।

जैसा की ज्ञात है भारत की राष्ट्रीय आय का 15.3 फीसदी हिस्सा किसानों की मेहनत से प्राप्त होता है। अगर विकसित देशों की राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान देखे तो यह एक फीसदी मात्र है। भारत में कृषि रोजगार में लगभग 46.2 फीसदी जनसंख्या संलग्न है जबकि विकसित देशों में यह आँकड़ा 5 फीसदी तक भी नहीं पहुँच पाता है भारत में कृषि औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। छोटे उद्योगों तथा कुटीर उद्योग के लिए कच्चे माल के रूप में योगदान हो या बड़े उद्योग में कच्चे माल की तौर पर अनाज, लाख, कपास, रबड़, जूट,

*सहायक आचार्य, वाणिज्य संकाय, चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

155

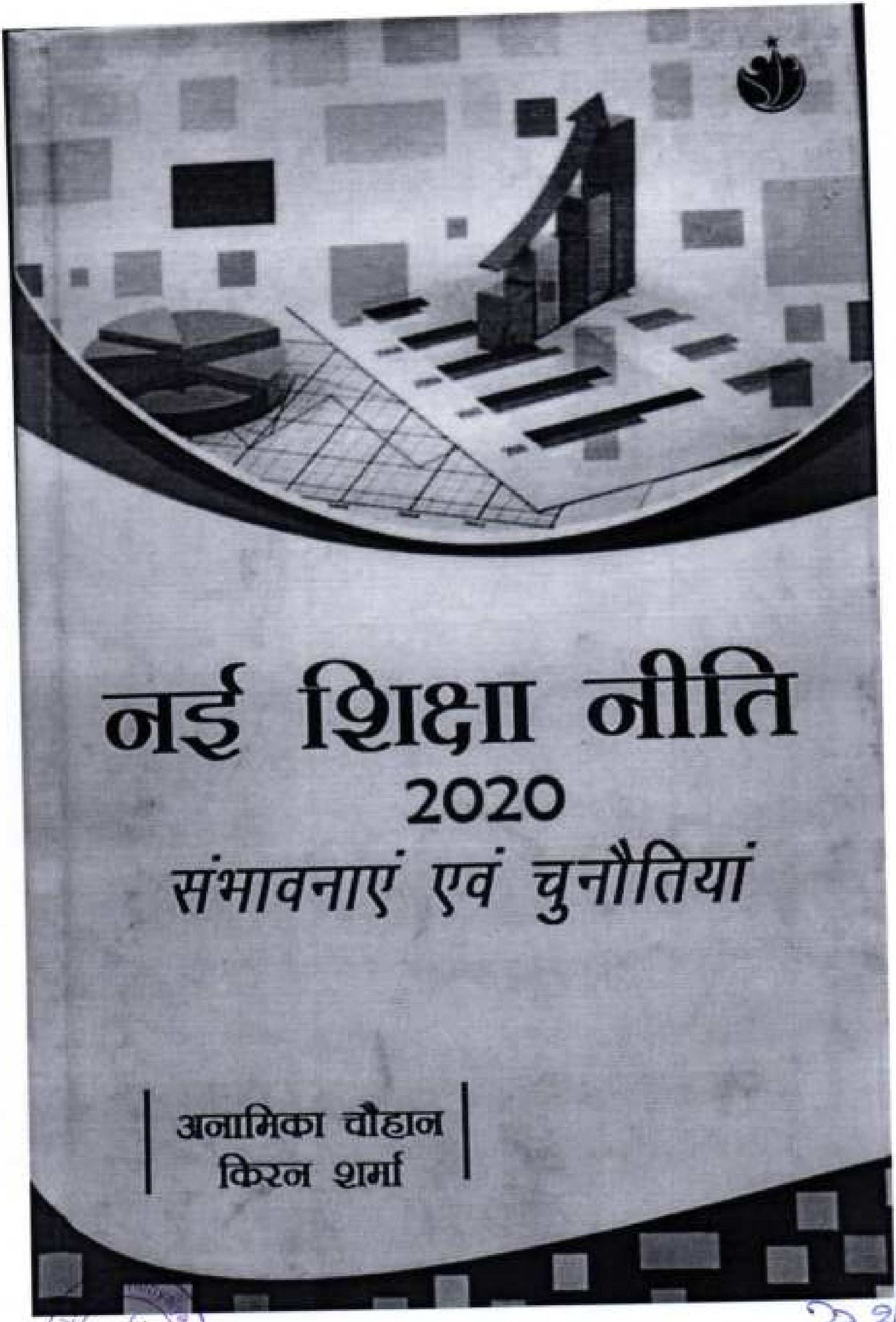

I.Q.A.C.
Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

156

नई शिक्षा नीति 2020 : संभावनाएं एवं चुनौतियां

संपादक

अनामिका चौहान

सहायक आचार्या

गृहविज्ञान विभाग

चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा,

हरिद्वार उत्तराखण्ड

डॉ. किरन शर्मा

सहायक आचार्या

वाणिज्य विभाग

चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा,

हरिद्वार उत्तराखण्ड

नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

Chaman Lal Mahavidhyalaya • I.Q.A.C. Coordinator • Landhaura

Principal

Chaman Lal Mahavidhyalaya

Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(157)

ISBN : 978-81-949514-5-2

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
: +91-315194807, 91-9968082809
: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनर्त्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने है।

Nai Siksha Niti 2020 : Sambhavnae Avam Chunotiya

By - Anamika Chauhan
Dr. Kiran Sharma

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(158)

अनुक्रमणिका

भूमिका 1

1. नई शिक्षा नीति से शिक्षा के माध्यम में परिवर्तन की सम्भावनाएं
विशाल कुमार लोधी
अमिताभ भट्ट 9

2. महिला सशक्तिकरण एवं नई शिक्षा नीति
डॉ. विक्रम सिंह 13

3. नई शिक्षा नीति 2020 : नीति, नीयत और नियम
डॉ. कृष्णा भारती 17

4. भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : संभावनाएँ और चुनौतियाँ
डॉ. देवपाल
एकता चौहान 24

5. प्रारम्भिक राष्ट्रीय शिक्षा नीति : एक अवलोकन
प्रो. जगेन्द्र सिंह रावत 29

6. सुरक्षा ई-लर्निंग और क्रिप्टोग्राफी
विपिन कुमार 40

7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : नव भारत निर्माण की मजबूत आधारशिला
पंकज कुमार 49

8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और चुनौतियाँ
डॉ. सत्यवीर सिंह
श्रीमती मिनाक्षी

9. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और आज की जमीनी सत्यता का एक अध्ययन 55
विमलेश
डॉ. हरीश कुमार

10. नयी शिक्षा नीति 2020 : संभावनाएं और चुनौतियाँ 61
प्रियंका शर्मा

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

159

11. नई शिक्षा नीति 2020 : सम्भावनाएँ और चुनौतियाँ 65

निशा रानी

नवीन कुमार

12. नई शिक्षा नीति-2020 समग्र और बहुविषक शिक्षा की ओर बढ़ते कदम 73

उमेश चन्द

13. नई शिक्षा नीति 2020 : सम्भावनाएँ और चुनौतियाँ 81

शुभ सेजवार

14. **Analysis of the National Education Policy 2020 : Opportunities and Challenges** 91

Anamika Chauhan

Prof. Preeti Kumari

15. **How New National Education Policy 2020 Can Help National Development** 99

Dr. Kiran Sharma

Principal

Chaman Lal Mahavidhyalaya

Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • I.Q.A.C. Cordinator

160

15.

How New National Education Policy 2020 Can Help National Development

Dr. Kiran Sharma*

Introduction

Kishore Kumar, Ajai Prakash and Krishanveer Singh, in their paper stated that "National Education Policy 2020 is a lodestar to remodel future generation". Now what does this word 'lodestar' mean? Lodestar has two meanings. Scientifically lodestar refers to a star that's want to guide the course of a ship, especially the pole star; second meaning of lodestar could be a general meaning i.e. person or thing that is a plan or guide. So, if we talk to general meaning of lodestar and connect this with the statement of Kishore Kumar et.al then they wanted to spotlight that National Education Policy can work as an idea and inspiration to vary and upgrade the youth and also the next generation of India.

In the book "Politics, policy and better education in India", by Sunandan Roy Chowdhury, the author reviewed six major policy documents released by the Indian government after independence in 1947. they're the policies or propositions of University Education

*Assistant Professor, Department of Commerce, Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura, Haridwar.

I.Q.A.C. Coordinator Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

पुस्तक परिचय

चमनलाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार के द्वारा 'तीन तलाकः एक सामाजिक एवं
राजनीतिक विमर्श' पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उपलक्ष्य में जो शोधपत्र
वाचन हेतु आए और उनका संकलन, जोकि इस पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है,
एक समसामयिक प्रयास है। तीन तलाक का मुद्दा न केवल एक समुदाय विशेष की महिलाओं
के साथ सम्बन्ध रखता है बल्कि यह उनके मानवीय पहलू को भी प्रभावित करता है। महिला
मानव है या नहीं? इस विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने विचार
विमर्श किया है और यह निष्कर्ष निकाला है कि महिलाएँ भी पुरुषों के समान बल्कि उनसे भी
अधिक क्षमतावान है। इस प्रकार से उनके साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव न केवल
संवैधानिक प्रावधानों के विरुद्ध है बल्कि प्राकृतिक समानता के सिद्धान्त को भी धता बताता
है। तीन तलाक जैसे गंभीर एवं समसामयिक मुद्दे पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर और
उसके शोध-पत्रों को पुस्तक रूप में प्रकाशित कर आयोजकों ने स्तुत्य प्रयास किया है। यह
प्रयास न केवल सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करेगा, बल्कि
महिलाओं के प्रति अभी तक हो रहे भेदभाव का परिमार्जन भी करेगा। मैं इस कार्य के लिए
आयोजकों को साधुवाद देता हूँ।-

डॉ. संजीव कुमार शर्मा
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

लेखक परिचय

डॉ० नीशू कुमार का जन्म 01 जनवरी 1968 ग्राम लडपुरा, जिला हापुड़, उत्तर प्रदेश में एक किसान परिवार में हुआ आपकी प्रारम्भिक शिक्षा वहीं से हुई व एम०ए०, एम०फिल०, पी०एच०डी० की उपाधि चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के राजनीति विज्ञान विभाग से प्राप्त की। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित यू०जी०सी० नेट परीक्षा उत्तीर्ण की। युवा राजनीति विज्ञानी के रूप में सक्रियता 20 राष्ट्रीय संगोष्ठी, 5 अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शिरकत, एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक, एक प्रस्तावित राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजक सचिव। भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की डॉक्ट्रल फेलोशिप प्राप्त और एक प्रोजेक्ट बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ चलायमान/विभिन्न वर्कशॉप में प्रतिभाग। आप विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षिक समिति सदस्य के साथ साथ ही भारतीय राजनीतिक विज्ञान परिषद् के आजीवन सदस्य की सक्रिय भूमिका के रूप में कार्यरत हैं। आपके लेख भिन्न-भिन्न शोध पत्रिकाओं, जर्नल व संकलित पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके हैं। आप राजनीति विज्ञान विषय के सहायक आचार्य के रूप में चमन लाल महाविद्यालय लण्ढौरा, रूड़की, हरिद्वार में कार्यरत हैं।

प्रशांत पब्लिशिंग हाउस
38 फुटा रोड गली न.3
पश्चिमी करावल नगर
ई-मेल: prashantpublishinghouse@gmail.com
मो.न. 9810396373

₹ 1295/-

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Coordinator

तीन तलाक
एक सामाजिक एवं राजनीतिक विमर्श
डॉ० नीशू कुमार
PPH

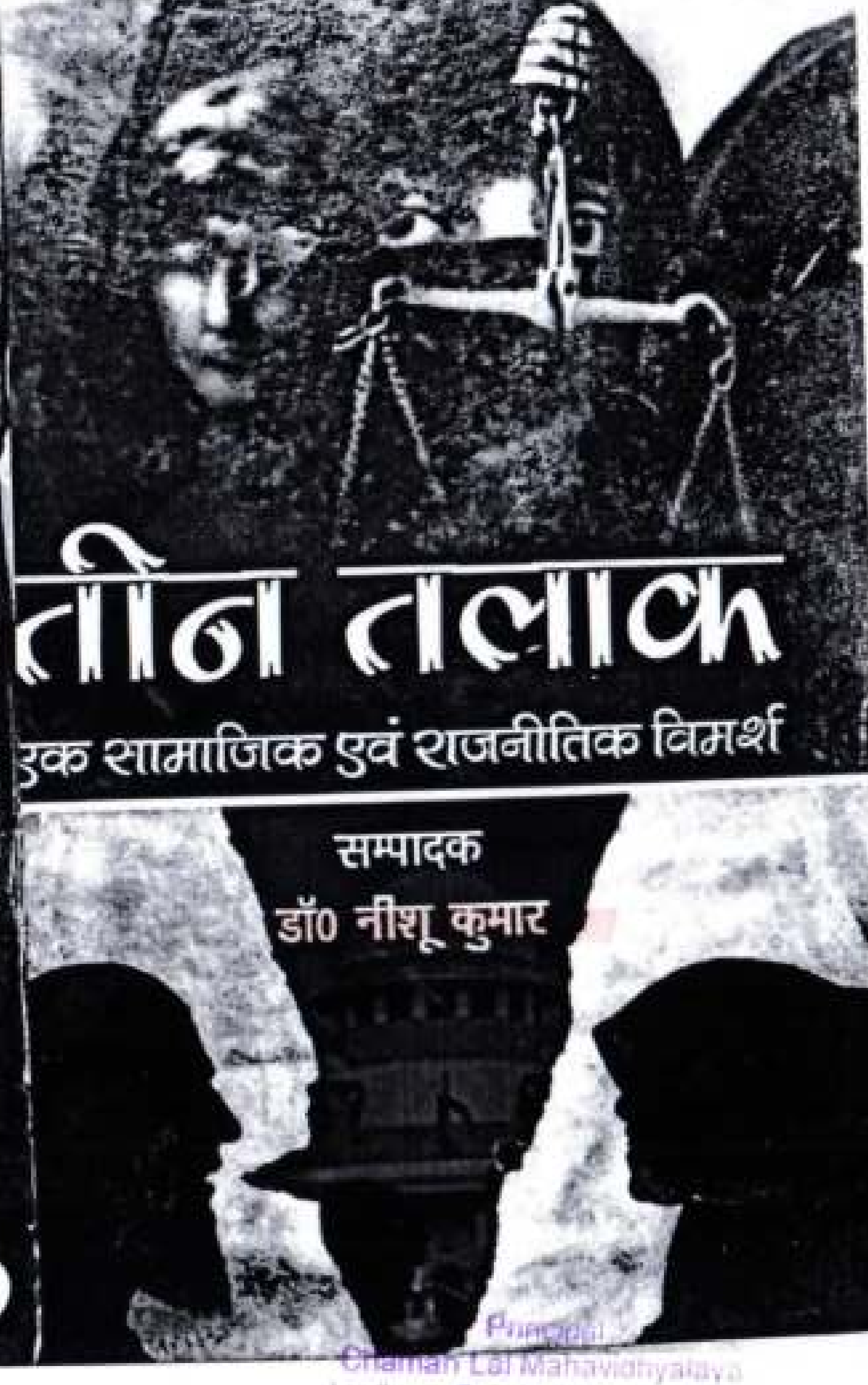

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(161)

(162)

प्रकाशक:

प्रशांत पब्लिशिंग हाउस

28 फुटा रोड, गली नं. 3,
पश्चिमी करावल नगर, दिल्ली-53
मो. 9810396373
Email: prashantpublishinghouse@gamail.com

तीन तलाक एक सामाजिक एवं राजनीतिक विमर्श

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: 2018

आई.एस.बी.एन: 987-93-80565-59-5

मुद्रक: बालाजी आफसेट, दिल्ली

I.Q.A.C. Coordinator Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

163

विषय सूची

आभार
भूमिका 7
9
1. तीन तलाक: दशा एवं दिशा
अवधेश बिष्ट [redacted] 1
आशुतोष शर्मा
2. ''सामाजिक न्याय की अवधारणा और मुस्लिम महिलाएँ''
कु0 अनुराधा
6
3. तीन तलाक और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड : एक विमर्श 11
भानुप्रताप सिंह
4. मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति 16
प्रो0. भावना गोयल
5. मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति 18
प्रो0. भावना गोयल
6. तीन तलाक और मुसलमान महिला दशा: वैश्विक परिपेक्ष्य 25
भूपेन्द्र सिंह
सुनील भाटी
7. भारतीय मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण मे तीन तलाक एक अवरोधक 36
डॉ. ममता शर्मा
8. भारत में संवैधानिक अधिकार (मुस्लिम महिला अधिकार के संदर्भ में) : तीन तलाक 42
दीपिका गुप्ता

IQAC Coordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar)
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

1

तीन तलाकः दशा एवं दिशा

अवधेश बिष्ट
असि0 प्रोफेसर रूड़की बिजनेस डिग्री कॉलेज लक्सर
आशुतोष शर्मा
असि0 प्रोफेसर चमन लाल डिग्री कॉलेज लण्ढौरा

कब तक सहनी होगी "तीन तलाक की टीस''

विवाह की संस्कार एक पवित्र बन्धन है। दो परिवार के मेल का दो व्यक्तियों विचारो का, दो व्यक्तियों आपसी सम्बन्धों का जो युगों-युगों से चली आ रही प्रथा है। विवाह/निकाह को चन्द 10 रूपये के स्टाम्प पेपर पर तलाक शब्द को कहने से मात्र विवाह या आपसी सम्बन्ध समाप्त नहीं किया जा सकता। मुस्लिम और हिन्दु धर्म में विवाह/निकाह जैसे पवित्र बन्धन अन्तर शब्दों से ही है जहाँ हिन्दु धर्म में विवाह को "धार्मिक संस्कार ''के रूप में पूजा जाता है वहीं मुस्लिम धर्म में निकाह को "सामाजिक समझौता'' का नाम दिया जाता है। धर्म और संस्कार समाज और समझौता शब्दों में अन्तर स्पष्ट है। समाज के लिये निकाह नहीं होता और समझौते से रिश्ते नही बनते।

तीन तलाक पर सफलता हासिल करने के बाद मुस्लिम समुदाय की महिलाऐं अपना संघर्ष रोकने के मुड में नहीं हैं। अब उन्होंने मुस्लिम धर्म में जारी बहु विवाह चार शादी का प्रावधान और निकाह हलाला के खिलाफ मोर्चा खोलने की तैयारी कर दी है। तीन तलाक के खिलाफ लड़ाई को सर्वोच्च न्यायालय तक ले जाने वाली उत्तराखण्ड की काशीपुर की रहने वाली "सायरा बानो'' ने बुधवार को कहा था। अब उनकी अगली लड़ाई बहु विवाह और निकाह हलाला के खिलाफ होगी। हमारे समाज में इसके लिये कोई जगह नहीं होनी चाहिए।

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

165

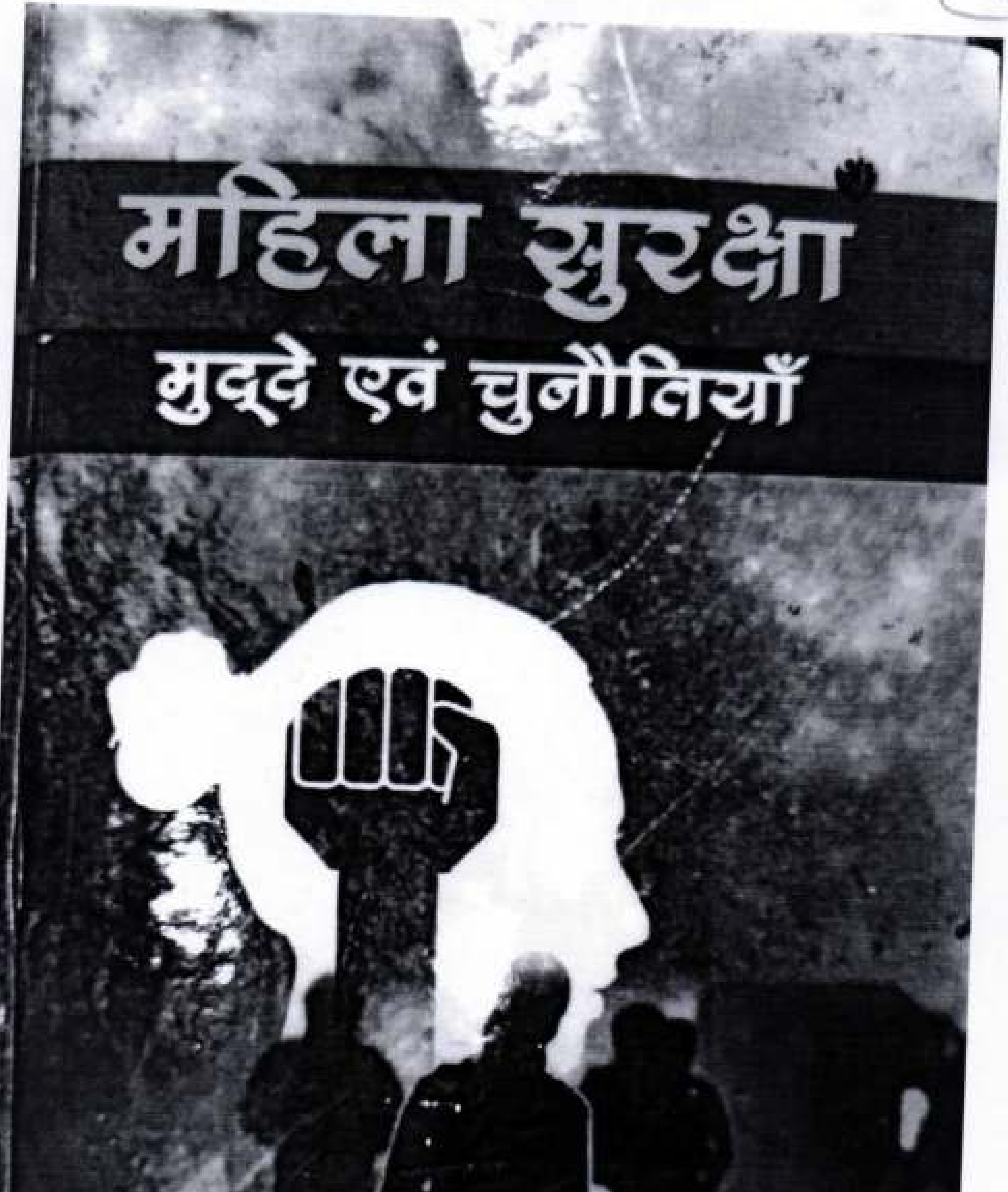

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

166

ISBN : 978-81-940315-3-6

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : +9315194807
ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर संयोजक
दीपिका शर्मा दिल्ली-94

मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज दिल्ली-32

Mahila Suraksha : *Mudde Evam Chunoutinya*

by Dr. Alka Tomar
Anuj Kumar Bhadana

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

167

11. स्त्री विमर्श का वैदिक स्वरूप 62

डा. दुर्गा जैन

12. कृषि में महिला सहभागिता (हरिद्वार जिले के सन्दर्भ में) 67

विमल कान्त तिवारी

डॉ० नवीन कुमार

13. कामकाजी महिलाओं की भारतीय समाज में भूमिका 71

ज्योति

14. समकालीन हिंदी कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री जीवन : समस्याएँ एवं चुनौतियाँ 76

योगेन्द्र सिंह

आशुतोष शर्मा

15. महिलाएं एवं वैधानिक प्रावधान : एक विश्लेषण (सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पक्ष) 84

पंकज कुमार

16. वर्तमान में डगमगाती महिला सुरक्षा : एक चिंतन 96

सुशील कुमार

17. भारतीय इतिहास में महिलाओं की बदलती सामाजिक स्थिति 100

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

18. स्त्रीत्व शोषण का सशक्त दस्तावेज 'तुम्हारा सुख' 106

रवि कुमार

19. महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण : सूचना, साक्षरता की भूमिका 110

राजवीर सिंह

संदीप के. पोसवाल

20. महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण: सूचना एवं साक्षरता की भूमिका 116

महेश कुमार सहगल

21. उत्तराखण्ड राज्य में घरेलू कामकाजी महिलाओं की जीवन शैली का बदलता स्वरूप एवं संघर्षशील भूमिका 122

डॉ० जितेन्द्र कुमार

22. वर्तमान में महिलाओं के विकास में परम्परागत तर्कों की बाधाएं एवं महिलाओं का भविष्य 129

सुश्री अंजलि प्रसाद

23. वर्तमान परिदृश्य : स्त्री सुरक्षा समस्या एवं चुनौतियाँ 140

डॉ० राजेश कुमार

I.Q.A.C. Cordinator, Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

14

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री जीवन : समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

वीरेन्द्र सिंह •
आशुतोष शर्मा••

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। एक साहित्यकार अपने आस-पास के परिवेश में घटित हो रही घटनाओं को अपने साहित्य में संवेदनात्मक रूप से प्रस्तुत करके अपने समय, समाज एवं संस्कृति का प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि साहित्य को समाज में घट रही क्रियाओं की ही प्रतिक्रिया अथवा प्रतिफल माना जाता है, किन्तु क्या प्रत्येक समय एवं काल में साहित्य एवं साहित्यकारों ने अपनी भूमिका का निर्वहन सही से किया है? यह प्रश्न निश्चय ही विचारणीय रहा है। इतिहास की यदि बारीकी से पड़ताल की जाए, तो हम पाते है कि सत्ता एवं शक्ति के बल पर सच को सदैव दबा दिया गया है। जिस कारण इतिहास के कई ऐसे अध्याय सामने नहीं आ पाए, जिनमें शोषण, दासता, गुलामी एवं अत्याचारों की अनगिनत घृणित कहानियाँ छिपी हुई है। 'अतिथि देवो भव' एवं 'यत्र नार्यस्तु पुज्यते रम्यते तंत्र देवता' जैसे आदर्श वाक्यों का अनुशरण करने वाली विश्व की प्राचीनतम संस्कृति में जहाँ एक ओर अतीत का गौरवगान मिलता है तो वहीं दूसरी ओर अपनों के द्वारा ही अपनों के शोषण एवं उत्पीड़न के ऐसे प्रमाण भी मिलते हैं जिसके पश्चात् आज भी स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। भेदभाव एवं पक्षपात की इस परंपरा में उच्च वर्ग, निम्न वर्ग, स्वर्ण, दलित एवं पुरूषवादी सत्ता आदि ऐसे अनेक मुद्दे एवं चुनौतियाँ है जिनका सामना एंव समाधान होना किसी भी समाज के विकास के लिए अति आवश्यक है किन्तु खेद की बात है कि हजारों साल के लंबे इतिहास में भी हम अभी तक इन सब बुराइयों एवं कुरीतियों को जड़ से नहीं उखाड़ पाए है।

प्रकृति का नियम है किसी भी समस्या को उसका सामना किए बिना समाप्त नहीं किया जा सकता है। ठीक यही स्थिति भारतीय समाज की भी है। सदियों से दबाये जा रहे वर्गो एवं समाजों ने जब तक अपने शोषण के विरूद्ध प्रतिक्रिया नहीं की, तब तक किसी भी समाज एवं बुद्धिजीवी ने इन सब कुरीतियों की आलोचना या विरोध करने का साहस नहीं किया। लेकिन जब विरोध का यह स्वर एक बार उठा तो इसकी प्रतिक्रिया की गूँज इतनी प्रबल थी कि उसने सदियों से शोषित जनता में आत्म सम्मान एवं समानता का भाव पुनः जागृत कर दिया। वास्तव में समाज के शोषितों

• शोधार्थी, हिंदी विभाग चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
•• सहायक आचार्य हिन्दी विभाग चमन लालमहाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

I.Q.A.C. Cordinator
Chaman ... Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

161

महिला सुरक्षा

मुद्दे एवं चुनौतियाँ

डॉ. नीशू कुमार

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Landhaura (Haridwar)

Scanned with Oken Scanner

(170)

© डॉ. नीशू कुमार

प्रथम प्रकाशन–2018

सर्वाधिकार लेखक तथा प्रकाशक के अधीन
सुरक्षित हैं।

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशन का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

प्रकाशक

AARTI PRAKASHAN

4561/16 Ansari Road Daryaganj,
New Delhi-110002
Mob: 9811068537, 9958384215
email : surendrapublication@gmail.com

ISBN : 978-93-82185-30-7

मुद्रक

रोशन आफसेट प्रिंटर्स दिल्ली

IQAC Coordinator, Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with Oken Scanner

171

अनुक्रम

1	"भारतीय महिला एक अवलोकन : सुरक्षा संरक्षण के सन्दर्भ में"	1
2	वर्तमान लैंगिक विभेदीकरण में भारतीय परंपरागत तर्कों की व्यवहारिकता	11
3	21वीं सदी में नारी सशक्तिकरण: यर्थाथ व स्वप्न	29
4	ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण एवं चुनौतियां	34
5	कौशल विकास योजना का महिलाओं की उन्नति और सुरक्षा में योगदान	38
6	महिलाएं: संवैधानिक प्रावधान एवं लैंगिक विषमता	42
7	एनीमिया (रक्त अल्पता) के प्रति महिलाओं की जागरुकता का अध्ययन	48
8	पर्वतीय महिला, चुनौतियां व राजनीतिक विज्ञान	56
9	21वीं सदी में महिला सुरक्षा–आधी आबादी का सच	61
10	महिला सशक्तिकरण – दशा एवं दिशा (एक विवेचना)	67
11	भारत में महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति	75
12	स्त्रियों के रोजगारोन्मुख होने के कारण एवं चुनौतियाँ	88
13	महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु सरकारी प्रयास	92

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Scanned with Oken Scanner

172

14	महिला सुरक्षा के विविध आयाम	100
15	समाज में प्रभावी शिक्षा की आवश्यकताएँ	108
16	पितृसत्ता मानसिकता एवम भारतीय महिलायें	114
17	उत्तराखण्ड ग्रामीण महिलाओं की दशा एवं दिशा	121
18	"भाजपा एवं कांग्रेस पार्टी में महिलाओं की स्थितिः 2014 लोकसभा चुनाव के विशेष सन्दर्भ में"	134
19	सरकार द्वारा औद्योगिक इकाइयों में कामकाजी महिलाओं की सुरक्षा हेतू उठाए गए कदम	145
20	महिलाएं एवं वैधानिक प्रावधान	160
21	भारतीय समाज में बालिका भ्रूण हत्या और महिला सुरक्षा के प्रश्न	169
22	भारतीय समाजः महिला सुरक्षा	179
23	"कानूनी प्रावधानों का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव : एक विश्लेषण"	184
24	भूमण्डलीकरण, मीडिया और भारतीय महिला	201
25	भारत में महिलाएँः एक बदलती तस्वीर	212
26	भारतीय महिला एवं संवैधानिक अधिकारः चुनौतियाँ एवं सुझाव	221
27	आधुनिक भारतीय राजनैतिक परिदृश्य में महिलाओं की सहभागिताः आरक्षण के विशेष सन्दर्भ में	240
28	क्या है नारी सशक्तिकरणः चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ	246
29	कानून एवं महिला हिंसाः एक अवलोकन	256

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with Oken Scanner

173

30 महिलाएं एवं वैधानिक प्रावधानः वैदिक दृष्टि में 267

31 महिलायें एवं विधिक प्रावधान 270

32 महिलाओं में राजनीतिक जागरण की प्रवृतियाँः आधुनिक भारत का परिप्रेक्ष्य 280

33 सेवारत माताओं की विद्योलय पूर्व शिशुओं से सामंजस्यता की समस्या 302

34 भारतीय संगीत के क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण की प्रासंगिकता 305

35 महिला सशक्तिकरण में सूचना तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका 312

36 भारत में महिलाओं के विरूद्ध अपराधः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 318

37 21 वीं सदी में महिलाओं की सुरक्षाः समस्याऐं 326

38 ''साहित्य के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका'' 333

39 मानवीय संगठन की इकाई परिवार में महिला की स्थिति का विश्लेषण 337

40 उत्तराखण्ड गढ़वाल की सैन्य परम्परायें में महिलाओं का योगदान 344

41 महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण सूचना, साक्षरता की भूमिका 350

42 ''पितृसत्तात्मक व्यवस्था और स्त्री विमर्श'' 355

43 महिलाओं के साथ हिंसात्मक व्यवहारः एक विवेचनात्मक अध्ययन 362

44 भारत में महिलाओं के प्रति अपराध एवं विधिक समाधान 370

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar Uttarakhand

Scanned with Oken Scanner

45	नारी सुरक्षा हेतु समाज के मानसिक परिवर्तन की आवश्यकता	377
46	ग्रामीण महिलाओं के विकास में शिक्षा की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन	381
47	Challenges of Rural Women Entrepreneurship in India	385
48	Challenges of Women Empowerment in India	390
49	Mental Health of Adolescent Girls In India	404
50	Main Issues Of Women In 21th Century	411
51	The Untold Truth Of 'Women Empowerment' In Panchayati Raj Institutions:A Face –Off With '3rd Constitutional Amendment Act	416
52	Laws Related To Women In India	430
53	Gender Inequality In India	439
54	Women Safety And Poverty, Gender Bias, Family, And Customary Relations : A Discussion	446
55	Protection of women from Domestic Violence In India: Issues, Challenges and Remedies	454
56	Role Of Education In The Empowerment Of Women In India	468
57	Role Of Women Entrepreneurs In 21st Century India Challenges And Empowerment	474
58	Role of Women in Novels of Nayantara Sahgal	482

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Scanned with Oken Scanner

175

59 Problems And Challenges Faced By Urban Working Women In India 490

60 High Technology Specialized Women Work In Plant Science 500

61 The Challenges Faced By Widows 510

62 Contribution Of Technology Towards Women Safety 516

63 Women issues in Indian films: A Study With Special Reference to 'Nishant' and 'Bhumika' 522

64 Health Status Of Women And Challenges: An Indian Scenario 532

65 Women's place In Rural Indian Society 540

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

I.Q.A.C. Coordinator, Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhaura (Haridwar)

Scanned with Oken Scanner

176

58

Role of Women in Novels of Nayantara Sahgal

Dr. Aprana Sharma

Department Of English

Chaman Lal Mahavidyalya, Roorkee (Haridwar)

E-mail: aparna.angra@gmail.com

Abstract

Nayantara Sahgal spend more than thirty years in literature in her carrier. She has a prominent, place in the history of Indo-English novel. She takes special issues of national consciousnesses. Her characters are often entrapped in problems but they emerge out as honest and morally upright and take revolutionary decisions. Sahgal's novels can be roughly viewed into two categories; the first they arise out of 'situations' more than characters and others are strongly oriented. She portrays the struggle and emancipation of woman through her characters in novels. Her women characters struggle very hard and fight for their rights. Nayantara sahgal's novels are vivid picture against the country's socio-political backdrop of the country. Her born in a political family does not make her a good political writer. Her success is not as a daughter of Vijayalaxmi pandit but her deep insight into the inner most thoughts of human mind and heart. Her linguistic competence, stylistic devices and gradual development of characters are important qualities of her novels.

Her men and women behave as normal worldly human beings, who victim into their egos, commit errors, take wrong decisions and expose their weakness. 'The day in shadow' Published in 1973 shows the journey of Simrit-how

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with Oken Scanner

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता

Scanned by CamScanner

178

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में प्रस्तुत विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए सम्पादक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-86246-84-4

प्रकाशक:
प्रगतिशील प्रकाशन
एन-3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 (भारत)
दूरभाष: 09899665801
ई-मेल : pragatisheelprakashan@yahoo.in

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर
के विचारों की प्रासंगिकता

मूल्य : ₹ 700.00
प्रथम संस्करण : 2018
© सुरक्षित

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt-Haridwar, Uttarakhand

भारत में प्रकाशित-

'प्रगतिशील प्रकाशन', नई दिल्ली के लिए प्रकाशित। सत्यम् प्रिंटोग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, द्वारा मुद्रित।

Scanned by CamScanner

179

विषय–सूची

आभार (iii)
भूमिका (iv)
1. 21वीं सदी में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता व प्रभाव
✍ डॉ. धर्मेन्द्र कुमार 1
2. हिंदू राष्ट्रवाद, संविधान और डॉ. अंबेडकर
✍ डॉ सुशील उपाध्याय 10
3. अस्मिताओं का सहअस्तित्व
✍ डॉ. रूचि सिंह 17
4. भारत में दलित सामाजिक आज़ादी और समावेशन : समय की मांग
✍ डॉ. तीर्थ प्रकाश 23
5. महिलाओं के विकास में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का चिंतन
✍ डॉ. नीशु कुमार 28
6. महिला सशक्तिकरण में अम्बेडकर की भूमिका
✍ Km. Hemlata verma 40
7. बाबा साहेब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के सामाजिक न्याय की झलक
✍ गुंजन जैन 45
8. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के आर्थिक विचार-एक समीक्षा
✍ डॉ. किरण शर्मा 49

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar (Uttarakhand)

Scanned by CamScanner

(180)

1

21वीं सदी में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता व प्रभाव

✍ डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग
चमनलाल महाविद्यालय लन्ढौरा (हरिद्वार)

अम्बेडकर एक विचारक, समाज सुधारक और संविधानविद मात्र नही थे वरन वे एक युग का प्रतिनिधित्व करते थे। भारतीय सामाजिक परम्परा को उनकी समझ, शास्त्रों की आलोचनात्मक जांच–पड़ताल करते हुए वैज्ञानिक दृष्टि विकसित करने के आधार पर बनी थी। अम्बेडकर सदविवेक या अंत प्रज्ञा जैसे किसी आग्रह के समर्थक नही थे। उनका मानना था कि भारत में तो शास्त्रों के अंधानुकरण के आधार पर ही सदविवेक को परिभाशित किया जाता है, जबकि वह वसस्तव मे धार्मिक कट्टरता का ही झाड़ा–पोछा रुप है।

21वीं सदी में अम्बेडकर हमारे सामाजिक राजनीति विमर्श मे कुछ इस तरह उभरे है कि वो महात्मा गाँधी से महत्वपूर्ण नजर आते है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि जहां गाँधी ने अहिंसक तरीके से सिर्फ राजनीतिक आजादी और समानता की बात कही वहीं अम्बेडकर शुरू से सामाजिक–आर्थिक समानता की बात कर रहे थे। देश को 1947 में आजादी मिल गई और संविधान ने हम सबको एक व्यक्ति एक मत के माध्यम से राजीतिक समानता का काम काफी हदतक पूरा भी हो चुका है, लेकिन सामाजिक और आर्थिक स्तर पर समानता न्याय और स्वतन्त्रता की बात कही गई है उस पर कुछ काम ही हो पाया है और बहुत तरीकों से काम किया जाना बाकी है। ऐसे ही दौर में डॉ. अम्बेडकर एक प्रकाश स्तम्भ बनकर उभरते है। डॉ. ने एक ऐसे भविष्य की कल्पना की थी जो पूरे तरीके से परिवर्तनकारी हो। भारत को अगर सही अर्थो मे एक प्रगतिशील, आधुनिक और विकसित समाज और राज्य बनने की तरफ तेजी से बढ़ना है तो अम्बेडकर के विचारों को मूर्त रुप देने के लिए अथक

Coordinator
Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand
Scanned by CamScanner

181

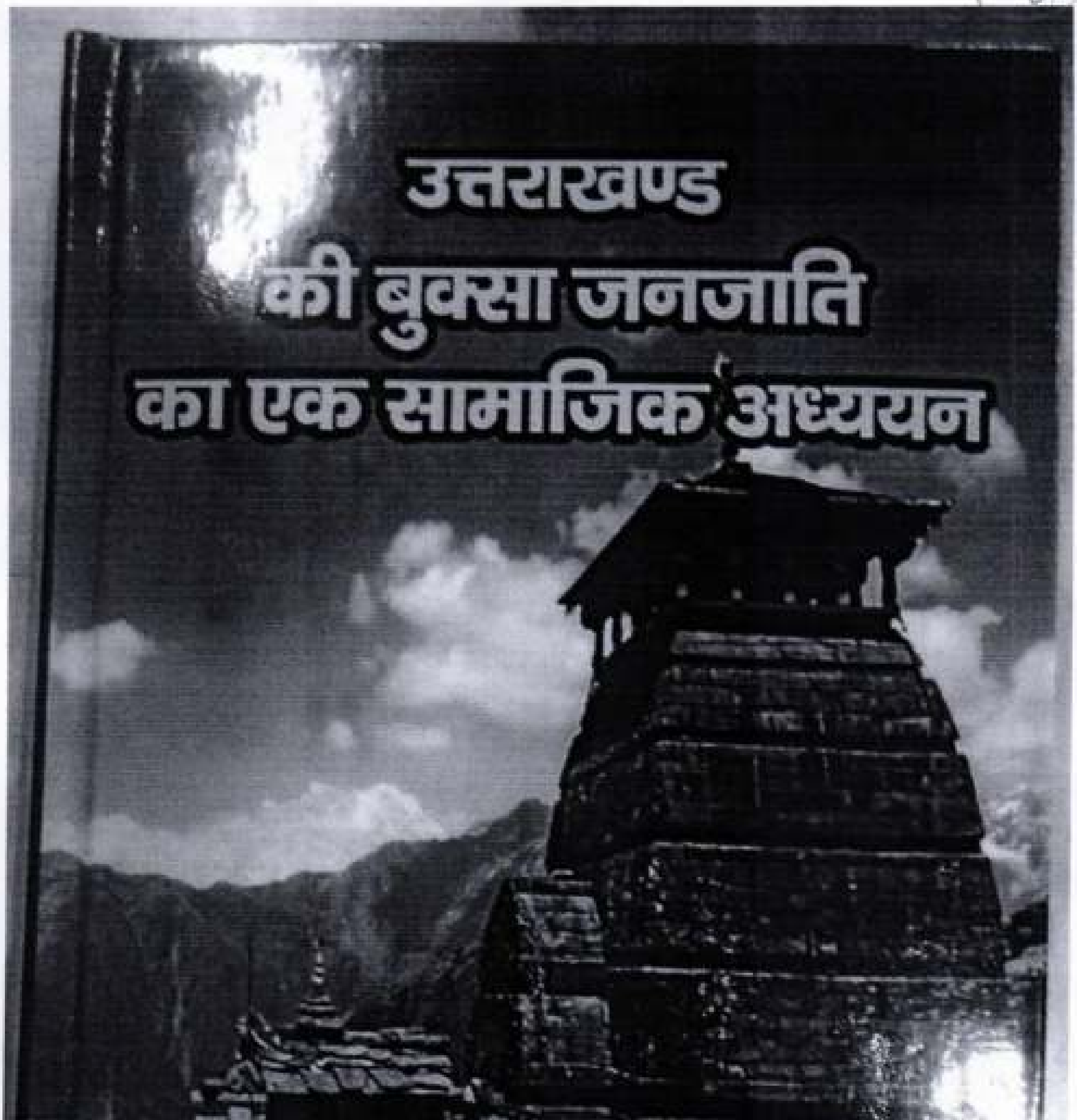

Scanned by CamScanner
...ya
Landhaura, Distt.-Haridwar Uttarakhand

उत्तराखण्ड की बुक्सा जनजाति का एक सामाजिक अध्ययन

First Published: 2020

ISBN: 978-93-90115-25-9

Book Code: AB144 - F21

© Editors

'Authors/contributors are solely responsible for the originality/ authenticity/accuracy of the ideas/ information/views/content/ data produced in their respective papers. Publisher and the Editor shall not be responsible for any liability arising on account of any civil or criminal proceeding(s) in any court/tribunal/judicial body under any law for the time being in force.'

All rights including copyrights and rights of translation etc are reserved and vested exclusively with the editor. No part of this publication shall be reproduced or transmitted in any form or by any means, including electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise or stored in any retrieval system of any nature without the express permission of the editor.

Published by :

Ms. Kavita Mithal

Anu Books

Publishers & Distributors

H.O. Shivaji Road, Meerut, 01214007472, 8800688996

Branch : Green Park Extension, New Delhi 110016, 9997847837

Glasgow (UK)+447586513591

E-mail: anubooks123@gmail.com

Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

Scanned by CamScanner

विषय सूची

1. बुक्सा जनजाति समाज में महिला सशक्तिकरण का एक अध्ययन
डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार 1

2. बुक्सा जनजाति का सामाजिक परिवेश
प्रो. आशा राणा 7

3. उत्तराखण्ड में बुक्सा जनजाति की परम्परा एवं संस्कृति
डॉ0 आबिदा, डॉ0 पूनम भूषण 14

4. उत्तराखण्ड की बुक्सा जनजाति की ऐतिहासिकता एवं वर्तमान में उनकी आर्थिक योजनाएं
डॉ. रंजना रावत 18

5. उत्तराखण्ड की बुक्सा जनजाति 'संस्कृति एवं परम्परा: 'एक दृष्टि'
रिकी प्रसाद 24

6. उत्तराखण्ड की बुक्सा जनजाति : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० नरेन्द्र सिंह धारियाल 31

7. बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति
डॉ0 नाज परवीन 37

8. बुक्सा जनजातियों की उत्तराखण्ड में सामाजिक–आर्थिक स्थिति
डॉ० कवलजीत कौर 41

9. मध्य हिमालय रंग्पा जनजातिय महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवेश
डा0 निरंजना शर्मा, कु0 कनिका बगडवाल 49

10. उत्तराखण्ड मे बोक्सा: उत्पत्ति तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
डा0 रेनूराधा 59

11. वैश्वीकरण का जनजातीय समाज पर प्रभाव : एक अध्ययन
प्रभदीप सिंह 64

12. बुक्सा जनजाति की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति
डॉ0 कोमल 75

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand
Scanned by CamScanner

184

1

बुक्सा जनजाति समाज में महिला सशक्तिकरण का एक अध्ययन

डॉ० धर्मेन्द्र कुमार
असि० प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
चमनलाल महाविद्यालय लंढौरा, हरिद्वार उत्तराखंड

आज के समय हर जगह गाँव, कस्बे, नगर व महानगर मे महिला सशक्तिकरण की चर्चा आम बात हो गई है, किन्तु इसकी वास्तविकता क्या है? बहुत कम लोग समझ पाये है। प्रस्तुत लेख में शास्त्रीय ढंग से यह जानने का प्रयास किया गया है कि भारतीय महिला जीवन पर सशक्तीपरक कार्यक्रमों का क्या प्रभाव है? सशक्तीकरण प्रकिया की दिशा और दशा क्या कर रही है? नि:संदेह पिछले दशकों की तुलना में आज महिलाओं का सशक्तीकरण उज्जवल है तथापि इस पर कुछ काले धब्बे है जो अवश्य ही चिंतित कर देते है। मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र के प्रख्यात मनीषी प्रोफेसर ए० आर० एन० श्रीवास्तव का प्रस्तुत तथ्यपरक विश्लेषणात्मक शोधपरक लेख महिला सशक्तीकरण के अध्ययन, विश्लेषण एवं शोध की दृष्टि से अतिशय मार्गदर्शक है।

आज वर्तमान समय मे महिला सशक्तीकरण का जो स्वरुप दिखाई देता है उसका प्रारंभ 20वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों मे अमेरिका मे हुआ था। 1908 में अमरीकी कार्यकारी

I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand
Scanned by CamScanner

185

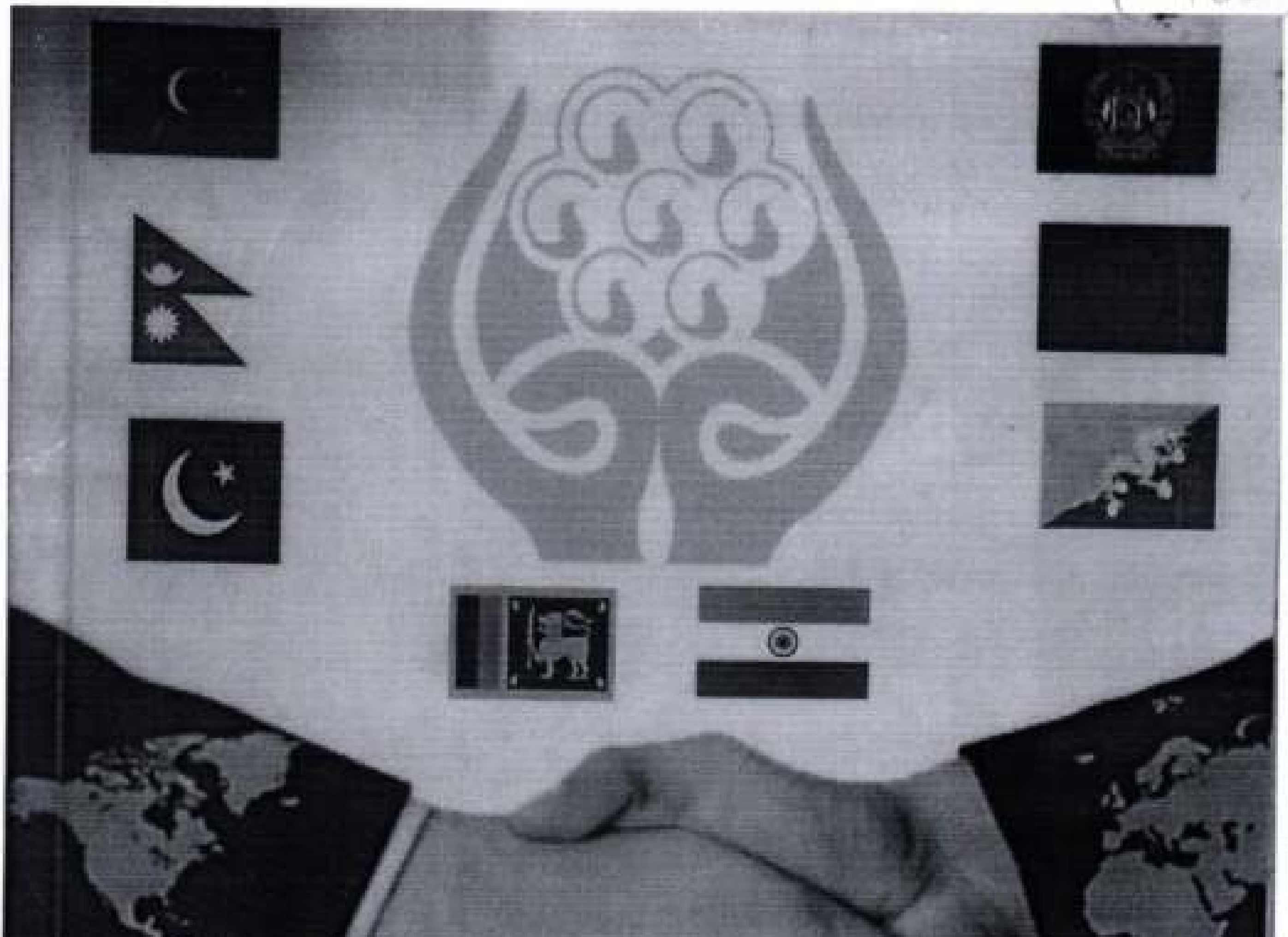

सार्क देशों की राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संस्कृति में भारत का योगदान

डॉ. वीरेंद्र सिंह
डॉ. तीर्थ प्रकाश

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

Scanned by CamScanner

186

ISBN : 978-93-91018-04-7

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
☎ :+9315194807, 9968082809
✉: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक
ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनर्त्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने है।

Saarc Deshon Ki Raajnitik Aarthik Evam Samajik Sanskriti Mein Bharat Ka Yoagdaan

by Dr. Virendar Singh
Dr. Yash Parkash

IQAC Cordinator, Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand
Scanned by CamScanner

(187)

8. प्राचीन भारत-नेपाल के मध्य राजनीतिक सम्बन्ध: एक तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. दुष्यंत कुमार शाह

9. 21वी शताब्दी में भारत-रूस के रक्षा, आंतरिक एवं राजनैतिक संबंध : एक अवलोकन 2
डॉ. दिप्ती कौशिक
विशाल कुमार लोधी 2

10. श्रीलंका में चीन का हस्तक्षेप एवं प्रभाव : भारतीय सुरक्षा के संदर्भ में
डॉ. विकास शर्मा
प्रो. भारती चौहान

11. आतंकवाद : संकल्पना एवं प्रकृति
डॉ. सद्गुरु पुरपम् 70

12. दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एवं विकास में भारत की भूमिका
डॉ. अजीत सिंह 80
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

13. भारत-अफगानिस्तान सम्बन्ध का विश्लेणात्मक अध्ययन
डॉ. मालती रावत 85

14. 9/11 के पश्चात दक्षिण एशिया के संदर्भ में अमेरिकी विदेश नीति का अध्ययन 91
नवीन कुमार
डॉ. गिरिराज सिंह

15. चीन-पाक आर्थिक गलियारे का भारत की सुरक्षा पर प्रभाव 94
रविन्द्र कुमार

16. श्रीलंका में नृजातीय संघर्ष एवं भारत-श्रीलंका संबंध 102
सत्येन्द्र सिंह
डॉ. विनीता
शीतल

17. भारत-श्रीलंका सम्बन्धों में तमिल समस्या 110
विनीता दुबे

18. भारत एक महाशक्ति के रुप में क्षेत्रिय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 114
राजेश कुमार
डॉ. सीमा देवी

19. भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्रो मे माओवाद एवं आतंक 124
पिंकी देवी

20. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति का मूल्यांकन: एक वैश्विक नेता के रुप में
डॉ. राजेश भाटी 129

21. China's Belt Road Initiative: Implication for India 147
Prema Kainthola

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Haridwar, Uttarakhand

Scanned by CamScanner

188

12.

दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एवं विकास में भारत की भूमिका

डॉ. अजीत सिंह*
डॉ. धर्मेंद्र कुमार**

एशिया सैकड़ों वर्ष तक अस्थिरता की जद में रहा, जिसका प्रमुख कारण था, [illegible] एवं उपनिवेशवादी शासन व्यवस्था। बाद में 20वी शताब्दी के मध्य में स्वतंत्र हुए देशों [illegible] लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित करना एक चुनौती बना रहा। परन्तु भारत जैसे बड़े देशों ने [illegible] विदेश नीति के माध्यम से इन नवस्वतंत्र देशों को विश्व पटल पर प्रस्तुत किया। किन्तु [illegible] परिवर्तन के साथ प्रतिस्पर्द्धा राष्ट्रों द्वारा किये जा रहे विरोध व थोपा हुआ संघर्ष भारत के [illegible] विदेश नीति में बदलाव के लिए मजबूर किया। हालाकि भारत ने दक्षिण एशिया में [illegible] स्थिरता के लिए समय-समय पर प्रभावी कार्यवाहियाँ की है। जिसमें 1971 में बंग्लादेश [illegible] 80के दशक में मालदीव में राजनीति अपहरण को विफल करना, श्रीलंका में जातिगत संघर्ष [illegible] समाप्त करने के लिए पहल, भूटान को सुरक्षा मुहिया कराना आदि प्रमुख कदम रहे है। [illegible] इन सब के बावजूद भारत को चुनौती दी जाती रही है। जिससे प्रमुख पाकिस्तान द्वारा [illegible] व कश्मीर के मुदे पर भारत की आंतरिक सुरक्षा को चुनौती दी जाती रही है। वही चीन [illegible] विस्तारवादी नीति एवं साम्यवाद के नाम पर भारत में नक्सलवाद को अप्रत्यक्ष मदद करता [illegible] है। इन सब के बावजूद दक्षिण एशिया सहित पूरे एशिया महाद्वीप में शांति, राजनीतिक [illegible]

*एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय कोटद्वार उत्तराखंड।
**असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, रुड़की, हरिद्वार उत्तराखंड।

I.Q.A.C. Coordinator
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand
Scanned by CamScanner

विज्ञान शिक्षा में हिंदी भाषा

की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली की भूमिका

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

एवं

विज्ञान संकाय

मदरहुड विश्वविद्यालय, रुड़की

द्वारा आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में चयनित प्रपत्रों का प्रकाशन

मुख्य-सम्पादक

डॉ. एस. बी. शर्मा

अधिष्ठाता, विज्ञान संकाय

सह-सम्पादक

डॉ. गरिमा शर्मा

सह-प्राध्यापक, विज्ञान संकाय

प्रकाशक

यूनोया ग्लोबल एण्ड एजुकेशनल रिसर्च फाउंडेशन

रुड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

Principal

Chaman Lal Mahavidyalaya

Landhaura, Distt. Haridwar Uttarakhand

विज्ञान शिक्षा में हिंदी भाषा

की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली की भूमिका

प्रथम संस्करण 2018 में प्रकाशित

यद्यपि इस पुस्तक को तैयार करने में पूरी सावधानी रखने का हर संभव प्रयास किया गया है, फिर भी किसी व्याख्या, गलती या चूक के लिए मुख्य संपादक, सह–संपादक तथा प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं हैं। प्रपत्रों में लिखे गये विवरण लेखकों के स्वयं के विचार हैं तथा आंकड़ों के लिए वे स्वयं उत्तरदायी हैं। पाठकों से आग्रह है कि किसी भी प्रकार की त्रुटि को संपादक के संज्ञान में लायें, जिससे भविष्य में उसे दूर किया जा सके। फिर भी किसी वाद–विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र रुड़की ही होगा। किसी भी रूप में सामग्री का पुनर्मुद्रण प्रकाशक की अनुमति के बिना निषिद्ध है।

© यूनोया ग्लोबल एंड एजुकेशनल रिसर्च फाउंडेशन, रूड़की, हरिद्वार, उत्तराखंड

मुख्य–सम्पादक
डॉ. एस. बी. शर्मा
अधिष्ठता, विज्ञान संकाय
मदरहुड विश्वविद्यालय, रुड़की

ISBN: 978-81-935713-2-3

प्रकाशक
यूनोया ग्लोबल एण्ड एजुकेशनल रिसर्च फाउंडेशन
38, नेहरु नगर, रुड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड
Email at: eunoiaglobalfoundation@gmail.com, Website: www.shyamsbgd.org
Contact at: 09997802454

विषय-वस्तु

क्रम	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	मणिपुर के बदिल जिले का लोकवनस्पतिक सर्वेक्षण..... डॉ. सुरेश कुमार	01-08
2.	जैव प्रौद्योगिकी द्वारा ट्रांसजेनिक गन्ने का विकास एवं महत्व डॉ. मनोज कुमार शर्मा, शशांक सिंह एवं डॉ. आर. एस. सेंगर	09-16
3.	वैज्ञानिक प्रणाली में हिंदी भाषा की अपार सम्भावनाएं डॉ.बी.एल. अग्रवाल, डॉ. (श्रीमति) अंकुर चौहान	17-21
4.	हिंदी भाषा में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का प्रयोग.... डॉ. रमेश चन्द्र दुबे	22-24
5.	आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में हिंदी की उपयोगिता डॉ. देव मणि त्रिपाठी	25-27
6.	हिंदी भाषा में विज्ञान एवं तकनीकी शब्दावली द्वारा आध्यात्म.. डॉ. एस. बी. शर्मा	28-34
7.	उच्च शिक्षा स्तर पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी पाठ्यक्रम में... डॉ. डी. सी. बेबनी	35-37
8.	हिंदी भाषा में पर्यावरण विज्ञान में वेद एवं मनुस्मृति डॉ. रचना शर्मा, जन्मेजय शर्मा	38-41
9.	विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में अग्रणी प्राचीन भारतीय साहित्य डॉ. गरिमा शर्मा	42-44
10.	ग्रामीण लघु उद्योगों के समुन्नयन में हिंदी भाषा का प्रयोग आरती	45-47
11.	विज्ञान शिक्षा में हिंदी भाषा की वैज्ञानिक एंव तकनीकी.... डॉ. स्मिता बसेरा	48-50
12.	वनस्पति और आपका भविष्य डॉ. उमा रानी	51-52
13.	भारतीय कृषि में महाकवि घाघ-भड्डरी की हिंदी..... डॉ. अवधेश कुमार कौशल	53-55
14.	आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति एवं कृषि शिक्षण में हिंदी शब्दावली..... डॉ. विनीता सिंह	56-57
15.	मातृभाषा हिंदी का विज्ञान, विकास और शिक्षा में महत्व [redacted]	60-61
16.	वैज्ञानिक तथा तकनीकी उच्च शिक्षण संस्थानों में हिंदी शब्दावली..... इंदू सिंह व प्रीती	62-64

Chaman Lal Mahavidyalaya
I.Q.A.C.
Coordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

15

मातृभाषा हिंदी का विज्ञान, विकास और शिक्षा में महत्व

डॉ. विधि त्यागी
सहायक-प्राध्यापक, जंतु विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, रुड़की, उत्तराखंड

प्रस्तावना

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का ज्ञान मानव जीवन में विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। नई-नई वैज्ञानिक उपलब्धियाँ आज हमारे जीवन में शरीर के अंग की तरह अनिवार्य हो गई है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नई- नई वैज्ञानिक उपलब्धियों के ज्ञान को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए राजभाषा हिंदी में विज्ञान लेखन जरूरी है, लेकिन इसकी क्या स्थिति है यही प्रस्तुत आलेख की विषय वस्तु है। इसे कहने की या दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि विज्ञान के सरल ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाना विदेशी भाषा द्वारा संभव नहीं है इसीलिए हिंदी में तकनीकी हिंदी वैज्ञानिक शिक्षण के लिए नये सिरे से सोचना बेहद जरूरी है।

हमारे देश में लगभग 5000 से भी अधिक विज्ञान हिंदी लेखकों का विशाल समुदाय है। इन लेखकों ने विज्ञान के विविध विषयों और विधाओं में 8000 से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं । लोकप्रिय विज्ञान साहित्य सृजन में प्रगति अवश्य हुई है परन्तु सरल, सुबोध विज्ञान साहित्य जो जन-साधारण को सरलता से समझ में आ सके कम लिखा गया है। इण्टरनेट पर आज हिंदी में विज्ञान सामग्री अति सीमित है। विश्वविद्यालयों तथा राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थानों में कार्यरत विषय विशेषज्ञ अपने आलेख, शोधपत्र अथवा पुस्तकें शत प्रतिशत अंग्रेजी में लिखते हैं। वह हिन्दी भाषा में विज्ञान लेखन में रुचि नहीं रखते। संभवतः भाषागत कठिनाई तथा वैज्ञानिक समाज की घोर उपेक्षा उन्हें आगे नही आने देती।

पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री पी.वी. नरसिंहराव ने लिखा है ''विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विदेशी भाषा से कोई राष्ट्र न तो मौलिक ढंग से विकास कर सकता है और न ही अपनी विशिष्ट वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय पहचान बना सकता है। विदेशी भाषा से अनुवाद की बैसाखी का सहारा भी अधिक समय तक नही लिया जा सकता है।' विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इस शताब्दी के प्रमुख एवं प्रखर स्वर हैं। इस युग को अधिकतम उपादेय एवं प्रभावी बनाने के लिए जनसाधारण को विज्ञान के साथ जोड़ देना ही आज विज्ञान लेखन का परम लक्ष्य होना चाहिए। राष्ट्र के विकास के लिए जनसाधारण में वैज्ञानिक जागरूकता विकसित करना अति आवश्यक है जो केवल राजभाषा हिंदी के माध्यम से ही सम्भव है।

तकनीकी और विज्ञान के चमत्कारों ने जो राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय आयाम दिये हैं उनमें राष्ट्र भाषा की हिस्सेदारी की अपनी एक अहम भूमिका है। मार्च 2004 में विज्ञान परिषद, प्रयाग तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित द्वि-दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन भाषण में बोलते हुए उत्तर प्रदेश के पूर्व महामहिम

Chaman Lal Mahavidyalaya IQAC
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

193

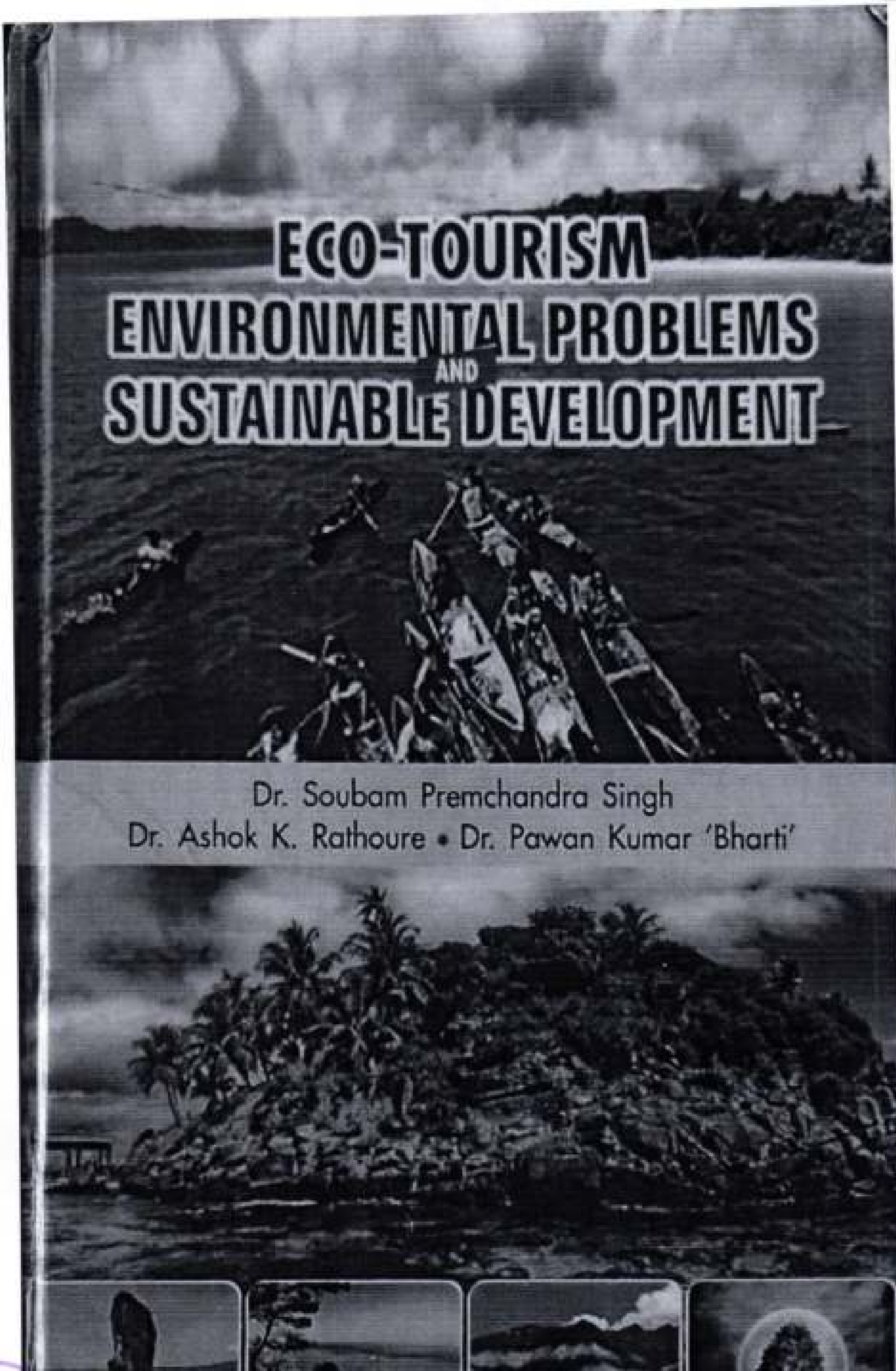

Landhaura, Distt.-Haridwar, Ut...

194

Published by:
Namit Wasan
DISCOVERY PUBLISHING HOUSE PVT. LTD.
4383/4B, Ansari Road, Darya Ganj
New Delhi-110 002 (India)
Phone : +91-11-23279245, 43596064-65
Fax : +91-11-23253475
E-mail : discoverypublishinghouse@gmail.com
namitwasan9@gmail.com
sales@discoverypublishinggroup.com
web : www.discoverypublishinggroup.com

First Edition: 2018

ISBN: 978-93-86841-57-5

Eco-tourism, Environmental Problems and Sustainable Development

© Editors

All rights reserved. No part of this publication should be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means: electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the author and the publisher.

This book has been published in good faith that the material provided by authors/editors is original. Every effort is made to ensure accuracy of material, but the publisher and printer will not be held responsible for any inadvertent error(s). In case of any dispute, all legal matters are to be settled under Delhi jurisdiction only.

Printed at:
Infinity Imaging Systems
Delhi

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar

Eco-tourism, Environmental Problems and Sustainable Development Pages: 246-255
Edited by: Dr. Soubam Premchandra Singh; Dr. Ashok K. Rathoure
Dr. Pawan Kumar 'Bharti'
ISBN: 978-93-86841-57-5
Edition: 2018
Published by: Discovery Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi (India)

12

Application of Biotechnological Tools for Characterization and Management of Seed Borne Diseases

Richa Chauhan

Plant disease management is one of the biggest challenges in intensive crop production systems. It is estimated that pests and diseases cause an annual loss of about 30% in developing countries. A major cause of this loss are the disease. India, about 20% of the production including post harvest products, valued at 12-15 billion US dollars, is lost to diseases. Effective disease management practices are thus important to enhanced food security, sustainability and stable trade. Widespread adoption of high yielding disease resistance varieties (host-plant resistance) is the most important strategy of minimizing the losses caused due to pathogen. In the past, conventional plant breeders in close collaboration with plant pathologists, have successful in management of diseases to a considerable extent. However, success in disease management through plant breeding largely depends on access to useful genes for disease resistance. The new tools of molecular biology and biotechnology will allow many more plant diseases to be managed by breeding because of the loss of regeneration to assure safety. This approach is expected to be ecologically sustainable, economically affordable and socially acceptable.

Pulses and oilseeds are very important for Indian economy. Hence, this is increasing emphasis on these crops for enhancing their productivity. The unrestricted movement and exchange of germplasm is vital to progress

Assistant Professor, Chamanlal Mahavidhyalay, Landhaura, Roorkee (Uttarakhand) (India)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar Uttarakhand

196

CULTIVATION TECHNIQUES IN MODERN AGRICULTURE

Mr. Prasann Kumar
Dr. Pawan Kumar 'Bharti'

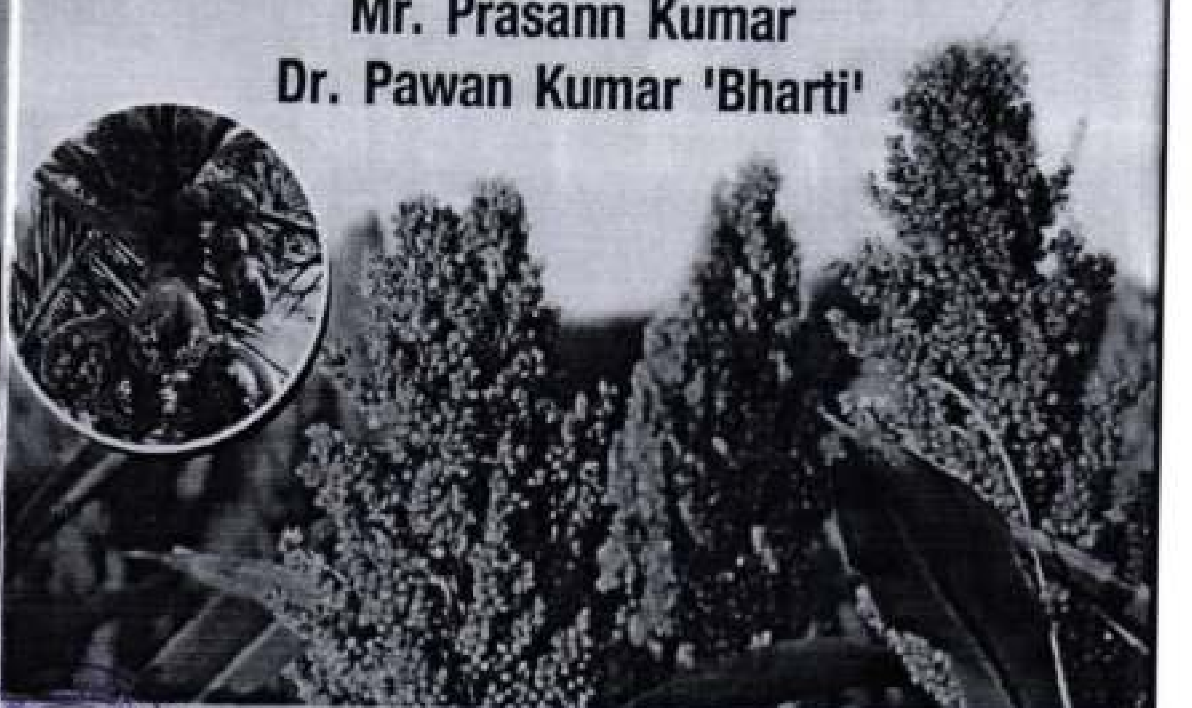

Foreword by : M. S. Swaminathan

I.Q.A.C.
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

197

Published by:
Namit Wasan
DISCOVERY PUBLISHING HOUSE PVT. LTD.
4383/4B, Ansari Road, Darya Ganj
New Delhi-110 002 (India)
Phone : +91-11-23279245; 23253475; 43596065
E-mail : discoverybooksindia@gmail.com
discoverypublishinghouse@gmail.com
namitwasan9@gmail.com
web : www.discoverypublishinggroup.com

First Edition: 2019

ISBN: 978-93-88854-03-0

Cultivation Techniques in Modern Agriculture

© Editors

All rights reserved. No part of this publication should be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means: electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the author and the publisher.

This book has been published in good faith that the material provided by authors/editors is original. Every effort is made to ensure accuracy of material, but the publisher and printer will not be held responsible for any inadvertent error(s). In case of any dispute, all legal matters are to be settled under Delhi jurisdiction only.

Printed at:
Infinity Imaging Systems
Delhi

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Cultivation Techniques in Modern Agriculture
Edited by: Mr. Prasann Kumar; Dr. Pawan Kumar 'Bharti'
ISBN: 978-93-88854-03-0
Edition: 2019
Published by: Discovery Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi (India)
Pages 150-165

9 Application of Biotechnological Tools for Improvement of Vegetable Crops

[1]Richa Chauhan

Vegetables occupy a predominant position as the cheapest source of minerals, vitamins and proteins for poor vegetarian population. Cowpea is adapted as a cheapest source of protein to a wide range of climatic conditions. Potato is one of the most higher yielding and low cost energy tuber crop grown throughout India. The calorie value of potato produced from one hectare is about two and half time more than that for cereals. Brinjal is another important and most popular vegetable in our country. The important vegetable crops which require biotechnological intervention are potato, tomato, brinjal, cabbage etc. as these are important in Indian economy.

Due to increasing demand and decreased production, the prices of most of vegetables crops are becoming high. This makes their availability difficult to common people. Conventional method of crop improvement and production is unable to provide/quantum jump in vegetable production. Hence, there is urgent need to use new method of crop improvement for increasing the productivity of vegetable crops.

Several new technologies have opened up exciting possibilities to increase the efficiency of agricultural production by improving plants, controlling their pests and enhancing their nutrition. The technique of biotechnology which are less sophisticated than genetic engineering (such as tissue culture) are also important and may have more immediate impact on vegetable production in developing countries.

The important objectives for vegetables improvement are as follows:

1. Mass of clonal propagation of rare varieties or dioecious vegetable cops.
2. Minimize the losses due to diseases, pests and weeds.
3. Improve the quality of product such as storage protein of vegetable crops.
4. Minimize the post-harvest losses by increasing

[1] Assistant Professor, Department of Botany, Chaman Lal Mahavidyalaya (affiliated to Shri Dev Suman Uttrakhand University), Landhaura, Distt. Haridwar (Uttarakhand) PIN 247664, India

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(179)

STATUS OF UPCOMING TRENDS IN BIODIVERSITY CONSERVATION

Editor
Dr. Richa Chauhan

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

200

STATUS OF UPCOMING TRENDS IN BIODIVERSITY CONSERVATION

Editor
Dr. Richa Chauhan

EDUCATIONAL BOOK SERVICE
NEW DELHI (INDIA)

Chaman Lal Mahavidyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

201

The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the author/editor. The publisher bears no responsibility for them whatsoever.

ISBN : 978-93-86541-78-9

Published by:
Educational Book Service
N3/25 D.K. Road, Mohan Garden,
Uttam Nagar New Delhi-110059
Contact: +91-9968277749
E-mail: ebs.2012@yahoo.in

Status of Upcoming Trends in Biodiversity

Price : 700/-
© Reserve
First Edition : 2019

Printed in India

Published by R. D. Pandey for '**Educational Book Service**', New Delhi.
Layout by Satyam Printographics, New Delhi and Printed at *Vishal Kaushik Printer*, Shahdra, Delhi.

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

202

GLOSSARY OF BIOLOGICAL SCIENCES

- Dr. Richa Chauhan

Ideal International E-Publication Pvt. Ltd.

I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

203

Glossary of Biological Sciences

By

Dr. Richa Chauhan

Assistant Professor
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura, Haridwar District. Uttarakhand

2020
Ideal International E – PublicationPvt. Ltd.
www.isca.co.in

Ideal International E- Publication
www.isca.co.in

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

204

Ideal International E-Publication
Pvt. Ltd.

427, Palhar Nagar, RAPTC, VIP-Road, Indore-452005 (MP) INDIA
Phone: +91-731-2616100, Mobile: +91-80570-83382
E-mail: **contact@isca.co.in**, Website: **www.isca.co.in**

Title:	**Glossary of Biological Sciences**
Author(s):	**Dr. Richa Chauhan**
Edition:	First
Volume:	I

© Copyright Reserved
2020

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored, in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, reordering or otherwise, without the prior permission of the publisher.

ISBN: 978-93-89817-25-6

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

205

PREFACE

Biological sciences encompasses all the divisions of natural sciences examining various aspects of vital processes. The concept includes anatomy, physiology, cell biology, biochemistry and biophysics etc., and covers all organism from microorganisms, animals to plants.

This glossary of biological terms is a list of terms relevant to biology in general. There is also an alphabetical terms in systematic manner, with some illustrations. Terms of morphology , physiology, anatomy, cell biology, genetics, microbiology and biotechnology etc. are included here.

I shall consider my Endeavour fruitful if this book proves to be of some help to the students. Comments and suggestions from the readers are requested on my under mentioned address.

Editor

Dr. Richa Chauhan
Assistant Professor
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Haridwar District.
Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Committee Landhaura

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

206

ISBN:978-81-950305-9-0

FOOD AND AGRICULTURE

EDITORS

Dr. Sandeep Rout
Dr. Kalyani Pradhan
Mr. Ajay Kumar Prusty

Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

207

FOOD AND AGRICULTURE

EDITORS

Dr. Sandeep Rout, Ph.D.,
Assistant Professor (Forestry),
Faculty of Agriculture,
Sri Sri University, Cuttack, Odisha-754006

Dr.(Mrs.)Kalyani Pradhan
Assistant Professor (Horticulture),
Faculty of Agriculture,
Sri Sri University, Cuttack, Odisha.

Mr. Ajay Kumar Prusty
Assistant Professor,
Department of Agricultural Extension and Communication,
M.S. Swaminathan School of Agriculture,
Centurion University of Technology and Management,
Paralakhemundi, Gajapati, Odisha, India.

ESN PUBLICATIONS
INDIA

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

208

© 2021, ESN Publications,
First Edition: 2021

This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form without the written permission of the author and the publisher.

ISBN : 978-81-950305-9-0

Price : Rs 500

Published By:

ESN PUBLICATIONS,
3/151-A, Muthuramalingapuram, Kalloorani Post,
Aruppukottai Taluk, Virudhunagar District,
Tamilnadu, India,
Pincode-626105

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar Uttarakhand

209

INDEX

S.No.	CHAPTER TITLE	PAGE No.
1.	**Vegetables For Healthy Life** *Devidutta Lenka, Udit Nandan Mishra, Chandrasekhar Sahu, Ajay Kumar Prusty*	1-14
2.	**Performance of Capsicum under Protected Cultivation** *K. Pramanik, P. P. Mohapatra, C. Jena and A. Behera*	15-34
3.	**Rural Empowerment And Development Through Agri-Preneurship** *Pratyush Ranjan Tarania, Ajay Kumar Prusty, Sabyasachi Pradhan, Dwity Sundar Rout and Sandeep Rout*	35-46
4.	**Terrace Gardening: A Step Towards Urban Agriculture** *Rabi Sankar Panda, Gayatri Moharana and Pragnya Priyadarshini Panda*	47-59
5.	**Nutrition In The Amidst Of Covid-19 Pandemic: Eat Right To Win The Fight** *Pragnya Priyadarshini Panda, Gayatri Moharana and Rabi Sankar Panda*	60-71
6.	**Mutation Breeding In Fruit Crops** *Pradyot Kumar Nayak and Rabi Sankar Panda*	72-87
7.	**Trees For Solution To Pollution** *Saikh Sartaj Mohammed, Krishna Priya Sahoo*	88-97

I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

210

S.No.	CHAPTER TITLE	PAGE No.
47.	**RED RUST OF GUAVA: An Emerging Threat** *Chinmayee Mohapatra1 and Sheetal Mohapatra2*	489-494
48.	**Food & Agriculture: Trends And Challenges** *Neelendra Singh Verma And Sourav Gupta*	495-505
49.	**Agroforestry for Improved Livelihood Security** *Ranjita Bezbaruah and Sarat Saikia*	506-513
50.	**Effect Of Vermicomposting On Mycorrhization In The Test Plants** *Mohd. Irfan*	514-527
51.	**Global scenario and Conservation Status of House Sparrow (Passer domesticus)** *Veera Mahesh, Suseela Lanka*	528-547
52.	**Bamboo Based Agroforestry Model in Assam** *Ranjita Bezbaruah and Sarat Saikia*	548-557
53.	**Yeast: A Potential Natural Resource For Sustainable Agriculture** *Shri Hari Prasad , Arun Kumar Devarajan*	558-571
54.	**Effect Of Maturity And Post Harvest Treatments On Shelf –Life Of Carambola (Averrhoa Carambola Linn.)** *Shahida Choudhury*	572-578

I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

211

Effect of Vermicomposting on Mycorrhization in the Test Plants

MOHD. IRFAN
Department of Botany, ChamanLal Mahavidhyalya
Landhaura, Haridwar (Uttarakhand)
email: irfanclm17@gmail.com

INTRODUCTION

Environmental degradation is a major threat in various situations confronting the world. The rampant use of chemical fertilizers shows drastic change and contributes largely to the deterioration of the environment through depletion of soil, fossil fuels, generate carbon dioxide (CO_2) and contaminate to water resources. The use of imbalanced chemical fertilizers it causes loss of soil fertility which has adversely impacted on agricultural productivity and also caused soil degradation.

In traditional agricultural system composting has been recognized in agriculture as beneficial for plant health, growth and yield, and the maintenance of soil property or fertility. The use of organic manure (OM), produced from municipal solid wastes may lead to both positive and negative effects, depending on its composition and used doses (Lakhdar *et al.,* 2010). In general, an increase in all biological micro-flora of the soil is observed after the use of OM and compost as fertilizer, as it leads to a better development of the whole microflora and beneficial fungi such as mycorrhizae, resulting in beneficial effects on crops (Perner *et al.,* 2007). Plant nutrients are, therefore, vital components for sustainable agriculture. Increased crop production largely relies on the type of fertilizers used to supplement essential nutrients for plants.

The use of vermicomposting has been emerging as an valuable source in supplementing chemical fertilizer in agriculture practices, in view of sustainable development after Rio Conference. The compost derived from the biological degradation of organic matter, wastes by application of earthworms, is called vermicompost. Finely it is a divided peat-like material with excellent structure, porosity, aeration, drainage and moisture holding

Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura (Haridwar) I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

213

on line link is also provided

https://link.springer.com/chapter/10.1007/978-981-15-4810-9_15

Room Temperature Chemiresistive Gas Sensing Characteristics of Pristine Polyaniline and Polyaniline/TiO_2 Nanocomposites

Arvind Kumar, M. Murali Krishnan ✉, Vipul Singh, Soumen Samanta & Niranjan S. Ramgir

Chapter | First Online: 13 June 2020

351 Accesses

Part of the Materials Horizons: From Nature to Nanomaterials book series (MHFNN)

Abstract

There is an increasing need of gas sensing device for environmental monitoring and human's health safety. Particularly, chemiresistive gas sensors having the capability to detect the chemical species (gases or vapors) at room or close to room temperature with good selectivity and high stability are very appealing. In this chapter, we present the fundamental properties of polyaniline (PANI)) responsible for chemiresistive sensing at room temperature. The sensing performance (sensitivity, response, recovery, stability, operating temperature and selectivity) of pure PANI are reviewed. Nanocomposites formed by incorporation of TiO_2

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

214

https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/B978012821548700018X

View **PDF** | Access through **your institution** | Purchase PDF

Chapter contents | Book contents

Outline

Abstract
Keywords
Acknowledgment
Author contributions
Conflicts of interest
1. Introduction
2. PENG-based self-powered gas sensor
3. TENG-based self-powered nanosensors for gas ...
4. Conclusion and future aspects
References
Show full outline

ELSEVIER

Nanobatteries and Nanogenerators
Materials, Technologies and Applications
Micro and Nano Technologies
2021, Pages 463-489

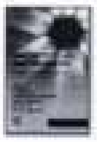

Chapter Eighteen - Self-powered environmental monitoring gas sensors: Piezoelectric and triboelectric approaches

Arvind Kumar [a], Nirav Joshi [b]

[a] Department of Physics, Chaman Lal Mahavidyalaya, Haridwar, India
[b] [redacted] Physics, University of São Paulo, [redacted]

Available online 29 January 2021, Version of Record 29 January 2021.

Chaman Lal Mahavidyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

MENU SIGN IN/REGISTER

AIP Conference Proceedings

HOME BROWSE MORE ▾

Home > AIP Conference Proceedings > Volume 2364, Issue 1 > 10.1063/5.0063229

< PREV NEXT >

No Access
Published Online: 23 September 2021

Higher-order fractional programming problem and their duality theorems in vector optimization with cone-η – invex functions

AIP Conference Proceedings 2364, 020024 (2021); https://doi.org/10.1063/5.0063229

Tarun Kumar Gupta[1,a], Rajesh Kumar Tripathi[2,b], Chetan Swarup[3,c], Kuldeep Singh[4,d], Ramu Dubey[4,e], *and* Vishnu Narayan Mishra[5,f]

View Affiliations
View Contributors

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Topics ▾
PDF | E-READER

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

216

ISBN: 978-81-937096-7-2

Environmental Ethics A Need of Human Concern

Editor

Dr. Poonam Vij

I.Q.A.C. Coordinator

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

217

Environmental Ethics
A Need of Human Concern

Editor

Dr. Poonam Vij
Associate Professor
Faculty of Commerce
J.D.V.M.P.G. College
Kanpur

Publisher

Social Research Foundation
128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur-11
(M) 0512-2600745, 9335332333

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

218

ISBN	:	978-81-937096-7-2
Price	:	270 INR
	:	135 USD
Copy Right	:	Publisher
Editor	:	Dr. Poonam Vij
Edition	:	1st Edition, March, 2019
Publisher	:	Social Research Foundation 128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur (U.P.)
Cover Design	:	Dr. Rajeev Mishra
Laser Type Setting	:	Bhawana Nigam
Cover Clips Source	:	Internet
Printed By	:	Social Research Foundation Kidwai Nagar, Kanpur (U.P.)
Contact	:	9335332333, 9839074762
E-mail	:	socialresearchfoundation@gmail.com
Website	:	www.socialresearchfoundation.com

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

219

Contents

S. No.	Chapter	Page No.
1	**Environment Ethics and Education: The Need of the Hour for Well Being** Ritu Sehgal, Jalandhar City, Punjab	01-09
2.	**Environmental Ethics: Problems and Solutions** Deepika Saini, Haridwar, Uttarakhand	10-13
3.	**Ethical Considerations in Protecting the Environment** Vidhi Tyagi, Haridwar, Uttarakhand	14-30
4.	**Environmental Degradation: Hyper-Competitive Culture and Consumerist Values - Key Factors in Bringing Ecological and Socio-Economic Denigration** Amarjit Kaur Arora, Derabassi, Punjab	31-43
5.	पर्यावरण संरक्षण में वैदिक संस्कृति की भूमिका नीतू गुप्ता, कानपुर	44-53
6.	मानव मूल्य और पर्यावरण रामाश्रय सिंह, वाराणसी	54-61
7.	भवभूति के नाटकों में पर्यावरण निहाल सिंह, आबूरोड, सिरोही	62-76

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

220

Environmental Ethics: Problems and Solutions

Deepika Saini
Assistant Professor
Deptt. of Zoology,
Chamanlal Mahavidyalaya,
Landhaura, Haridwar,
Uttarakhand, India

Environment....we are very much familiar with this term. In short we can call it as a sum of all physical, chemical, biotic and cultural factors that affect life of organism in any ways. Whereas when we talk about the environmental ethics,it is a branch of environmental philosophy that studies the ethical relationship between human beings and the environment or we can say Environmental ethics is an invitation to moral development. Respect to human life is only a subset of respectfor all life. The field has given a new dimension to the topics of conservation of natural resources and protection of the environment.

Now a days it's really very important because its study forces people to consider how their actions affect others and the environment. Human beings are not alone living on planet Earth. We live among a multitude of plants, animals and inanimate natural objects. Our interaction with the non-human forms of life and with the environment as a whole raise a variety of moral questions such as:

1. Should humans continue to make gasoline powered vehicles?

I.Q.A.C. Cordinator
Chamanlal Mahavidyalaya Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya,
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

WOMEN'S HEALTH IN INDIA

ISSUES AND CONCERNS

DR. RAJESH CHANDRA PALIWAL

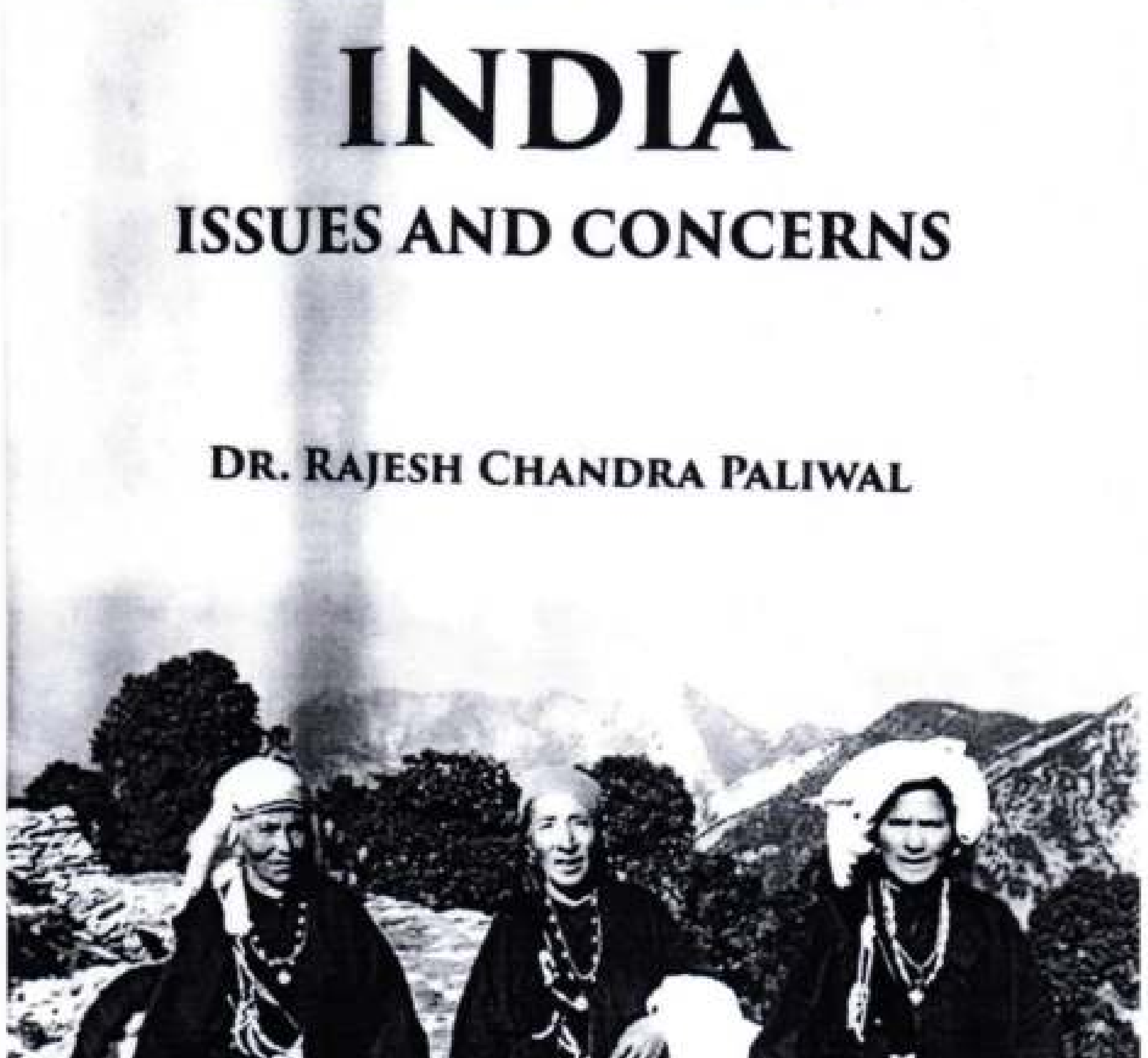

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar Uttarakhand

222

WOMEN'S HEALTH IN INDIA
ISSUES AND CONCERNS

Women in India face issues like malnutrition, lack of maternal health, diseases like AIDS, breast cancer, domestic violence and many more. Nutrition plays a major role in and individual's overall health, psychological and physical health status is often dramatically impacted by the presence of malnutrition Health is a major economic issue for human. Nutrition, diet and physical activity play an important role in the promotion of health and protection from and treatment of disease (Day & Jacksion, 2017). Nutrition may be defined as the science of food and its relationship to health. It is concerned primarily with the part played by nutrients in body growth, development and maintenance. Good nutrition means "maintaining a nutritional status that allow us to grow well and enjoy good health. India is one of the few countries in the world where women and men have nearly the same life expectancy at birth. The fact that the typical female advantage in life expectancy is not seen in India suggests there are systematic problems with women's health. Indian women have high mortality rates, particularly during childhood and in their reproductive years. The health of Indian women is intrinsically linked to their status in society. Research on women's status has found that the contributions Indian women make to families often are overlooked, and instead they are viewed as economic burdens. There is a strong son preference in India, as sons are expected to care for parents as they age. The book Women health in India: Issues and Concerns With Special to Uttarakhand State discusses the various problems of women health in India and special reference to Uttarakhand women's .

PACIFIC BOOKS INTERNATIONAL

New Delhi

Mobile/Whatsapp:9212526400,

Landline-011-23268444

Email: pacificbooksinternational@gmail.com

Website: www.pacificbookinternational.com

Price: ₹ 2200

ISBN 978-93-88536-50-9

9789388536509

$110

I.Q.A.C. Cordinator

Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhaura (Haridwar)

Principal

Chaman Lal Mahavidhyalaya

Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

223

Women's Health in India: Issues and Concerns

© **Author**

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer and publisher.

First Published 2021

ISBN : 978-93-88536-50-9

The opinions/contents expressed in this book are solely of the authors and do not represent the opinions/standings/thoughts of Pacific Books International and Editors.

Published by :
Pacific Books International
108, First Floor, 4832/24, Prahlad Street,
Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi - 110 002
Ph.: 011-23268444, Mob.: 9212526400
e-mail: pacificbooks@rediffmail.com
pacificbooksinternational@gmail.com
Website: www.pacificbookinternational.com

Typesetting by :
Sanya Computers
Delhi

Printed at :
Balaji Digital
Delhi

Printed in India

IQAC Coordinator, Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

224

Contents

Preface (v)
List of Contributors (ix)

Pages

1. Health and Nutritional Status of Women Residing in Slum Areas of Deoria Town (Uttar Pradesh) — 1
   —Pradeep Yadav
2. Women's Health in India: Issues and Concerns (with special reference to Uttarakhand State) — 10
   —Mrs. Ratnesh Singh & Dr. D.P. Yadav
3. Deteriorating Health Status of Women in Uttarakhand Due to Unclean Cooking Fuels : Strategizing: Pardhan Mantri Ujjwala Yojna LPG — 24
   —Dr. Alka Suri & Kamini Singh
4. Women Health issues and Concern of Government in Uttarakhand — 35
   —Dr. Charu Chandra Dhondiyal
5. Health of Farm Women in Uttarakhand: Issues, Concerns and Government Initiatives — 42
   —Ananda Nand Tripathi
6. New Reproductive Technology and Women's Health — 53
   —Divya Kumari
7. Socio-economic Condition of Women in District Nainital of Uttarakhand — 56
   —Richa Ginwal, Daleep Kumar & Prof. Padam S. Bisht
8. Reproductive Health Problems of Women in Rural Areas (with special reference to Bastar District) — 67
   —Dr Suman Panigrahi
9. Issues and Challenges of Women Empowerment in India: A Critical Analysis — 73
   —Dr. R.S. Chauhan
10. Women Empowerment: A Distant Dream — 96
   —Dr. Parul Dixit
11. State Policies Towards Women's Health and Hygiene in India — 102
   —Dr. Gargi Gaur
12. Life-threatening Impacts of Abused Drugs Consumed by Sports Persons [redacted] — 113
   —Vipin Kumar Sharm, Prince Prashant Sharm & Sanjeev Kumar
   [redacted]

IQAC Coordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

225

12

Life-threatening Impacts of Abused Drugs Consumed by Sports Persons

Vipin Kumar Sharma
Department of Pharmaceutical Sciences
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar-249404,
Contact No. +91 01334 212144; Email:sharmadibru@gmail.com

Sanjeev Kumar
Department of Chemistry
Chaman Lal Degree College, Landhaura, Roorkee,-247664
Contact No. +91 01332 251492; Email:sanjeevkumarchemistry2014@gmail.com

Prince Prashant Sharma
Department of Pharmaceutical Sciences, Gurukul Kangri University,
Haridwar-249404, India
Department of Chemistry, Chaman Lal Mahavidhayalya,
Landhaura, Roorkee, Haridwar (U.K.)

ABSTRACT

The performance enhancing drugs are the substances taken by athletes and other sportsmen to improve body capacity for achieving the desired goal. These medicinal agents refer to **anabolic steroids consumed in sports** by professional and amateur athletes. Among athletes, steroid abuse has been estimated to be less that 6 percent according to surveys, but anecdotal information suggests more widespread abuse. Although testing procedures are now in place to deter steroid abuse among professional and Olympic athletes, newly designed drugs constantly become available that can escape detection and put athletes willing to cheat one step ahead of testing efforts. These drugs have their significant impacts in quick enhancements of anabolic activities to generate the energy that is, in real, required for a sportsman. Numbers of laws, guidelines at national and international level have been framed and implemented by sports boards/authorities for prevention the use of these drugs, but unfortunately, the cases

I.Q.A.C. Coordinator
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

226

21वीं सदी में महिला सुरक्षा

समस्या एवं चुनौतियाँ

डॉ. नीशू कुमार

डॉ. नीतू गुप्ता

Chaman Lal Mahavidhyalay,
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhan

© डॉ. नीशू कुमार
डॉ. नीशू गुप्ता

प्रथम प्रकाशन–2018

सर्वाधिकार लेखक तथा प्रकाशक के अधीन
सुरक्षित हैं।

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशन का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

प्रकाशक
AARTI PRAKASHAN
4561/16 Ansari Road Daryaganj,
New Delhi-110002
Mob: 9811068537, 9958384215
email : surendrapublication@gmail.com

ISBN : 978-93-82185-27-7

मुद्रक
ग्लोबल प्रिंटिंग सर्विसेज,
दिल्ली–110092

कीर्तिशेष
पं. ईश्वरच
पं. रामकुम
जिनके जी

12	नारी शिक्षा: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य	119
13	भारत में महिलाओं की भूमिका और स्थिति	127
14	"भारतीय समाज में हो रही भ्रूण हत्या एक कलंक"	140
15	कार्यशील महिलाओं की सामाजिक एवं कार्यस्थल पर समस्याएं एवं समाधान कामकाजी महिलाओं की प्रमुख चुनौतियां	151
16	21वीं सदी के भारत में महिला समृद्धि व विकास के साथ-साथ सुरक्षा राष्ट्र एवं समाज के सन्दर्भ में	156
17	भारत में नारी की स्थिति: सशक्तिकरण एवं चुनौतियाँ	169
18	भारतीय महिलाओं की सुरक्षा एवं अधिकार	181
19	निर्भरता से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ती महिलाएं	191
20	21वीं शताब्दी में महिलाओं के वैधानिक अधिकार	203
21	महिला सशक्तिकरण- पंचायती राज	226
22	21 वीं सदी में महिलाओं के विकास में वैधानिक प्रावधान	231
23	महिला को कितना और कहाँ तक सशक्त कर पाए हम और आप यथा 21वीं सदी का महिला सशक्तिकरण	237
24	स्त्री: एक सामाजिक संघर्ष	246
25	"तुलनात्मक दृष्टि से प्राचीन एवं आधुनिक महिला की सामाजिक व राजनीतिक स्थिति"	255
26	समकालीन हिन्दी कवयित्रियों में नारी सशक्तिकरण का स्वर	263

27	भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति	268
28	"महिला सशक्तिकरण और सुरक्षा विषयक चुनौतियाँ"	280
29	महिला सशक्तिकरण में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान एक विश्लेषण	289
30	"आधुनिक बदलते सामाजिक व आर्थिक आयामों में भारतीय महिला: 21वीं शताब्दी के सन्दर्भ में"	296
31	महिलाओं की सुरक्षा एवं सशक्तिकरण: सूचना साक्षरता की भूमिका	303
32	भारतीय समाज में महिलाओं की वास्तविक स्थिति	311
33	Problem And Challenges Faced By Working Women	318
34	Women in the Workplace Issues and Solution	323
35	"Women's Equality and Empowerment"	331
36	Women Empowerment Strategies And Socio-economic Status Of Women In India	339
37	Balancing Professional And Social Life: A Challenging Task For Working Women	347
38	Crime Against Women: Dimensions, Causes And Preventive Measures	356
39	Women Aviators in India: Issues and Challenges	382
40	A Study of Women Empowerment in India	393

I.Q.A.C. Coordinator
Mahavidyalaya Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

18

भारतीय महिलाओं की सुरक्षा एवं अधिकार

डॉ० अनिता रानी

भारतीय समाज में प्रारम्भ से ही स्त्रियों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। शास्त्रकारों का मत है कि पुरुष वास्तव में स्त्री का स्नेह एवं सन्तान प्राप्त करके पूर्ण होता है। इनके अभाव में पुरुष अपूर्ण ही होता है। स्त्री को शरीरार्ध तथा अर्धांगिनी माना गया है। श्री तथा लक्ष्मी के रूप में वह मनुष्यों के जीवन को सुख एवं समृद्धि से दिप्त करने वाली कही गयी है। स्त्री का आगमन पुरुष के लिए शुभ सम्मान जनक एवं गौरवमयी होता है। जिसके सम्पर्क से उसका व्यक्तिगत मुखर एवं सन्निविष्ट हुआ है।

प्राचीन काल में स्त्रियों का अत्यधिक महत्त्व था। इसी कारण मातृसत्तात्मक प्रथाओं के बहुत से उदाहरण मिलते हैं। स्त्रियों के महत्त्व के कारण ही बहुत से व्यक्तियों को उनकी माता के नाम से भी जाना जाता है– जैसे कौन्तेय (कुन्ती का पुत्र), लक्ष्मण (सुमित्रा नन्दन), कृष्ण (देवकी नन्दन), आदित्य (अदिति), दिति से दैत्य आदि। भारतीय समाज मूलतः पितृ–सत्तात्मक था। व्यकितगत भू–सम्पत्ति के प्रति प्रबल चेतना के विकास का पता धर्मशास्त्रियों के विस्तृत प्रावधान से लगता है। इस सम्पत्ति में पुरुषों का अधिकार होता था। इसलिए उत्तराधिकार सुनिश्चित करने लिए पुरुष वंशावली पर ध्यान दिया गया।

किसी भी सभ्य समाज की अपनी पहचान वहाँ के समाज में रहने वाली स्त्रियों की स्थिति एवं प्रतिष्ठा से आँकी जा सकती है। इस सम्बन्ध में पं० जवाहर लाल नेहरू ने कहा है– मुझे पूर्ण विश्वास है कि आज भारत की प्रगति उसकी महिलाओं की उन्नति से मापी जा सकती

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

संपादक
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

सह संपादक
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

233

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-86246-84-4

प्रकाशक:
प्रगतिशील प्रकाशन
एन-3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 (भारत)
दूरभाष: 09899665801
ई-मेल : pragatisheelprakashan@yahoo.in

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर
के विचारों की प्रासंगिकता

मूल्य : ₹ 700.00
प्रथम संस्करण : 2018
© सुरक्षित

भारत में प्रकाशित-

'प्रगतिशील प्रकाशन', नई दिल्ली के लिए प्रकाशित। सत्यम् प्रिंटोग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, द्वारा मुद्रित।

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

232

9. भारत में दलित उत्थान के लिए किया गया प्रयास अम्बेडकर के विशेष संदर्भ में
✍ डॉ. राखी सिंह 55

10. आधुनिक युग का मनु: डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर
✍ डॉ. प्रभात कुमार सिंह/ दीपाक्षी शर्मा 61

11. डॉ. भीमराव अंबेडकर के आर्थिक विचारों की सार्थकता
✍ विमल कान्त तिवारी 73

12. डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नारीवादी चिंतन
✍ डॉ. मीरा चौरसिया 82

13. डॉ. अम्बेडकर की दार्शनिक विचारधारा : एक अवलोकन
✍ दीपक कुमार तालान 87

14. डॉ. अम्बेडकर ने हिन्दू धर्म क्यों छोड़ा?
✍ अनुराधा 105

15. डॉ. अम्बेडकर और दलितोद्धार सामाजिक परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में....
✍ प्रवक्ता परमजीत कौर 109

16. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में डॉ. अम्बेड़कर का जीवन मूल्य
✍ शहजाद आलम 122

17. डॉ. अम्बेडकर का आर्थिक चिंतन : एक अवलोकन
✍ सन्दीप के. पोसवाल 127

18. डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक विचार
✍ डॉ. अनिता रानी 135

19. सामाजिक न्याय के पुरोधा : डॉ. अम्बेडकर
✍ डॉ. हेमा देवी 143

20. एक सपना सामाजिक स्वतन्त्रता का
✍ कुलदीप कुमार 155

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya,
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

233

18

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक विचार

डॉ. अनिता रानी
सहायक प्रवक्ता
संस्कृत विभाग
चमनलाल महाविद्याल; लढौरा

मानव जब अर्थ एवं काम के चक्रव्यूह से निकलने का अपना संकल्प परिपुष्ट कर लेता है, इसके पश्चात् वह अपने धर्मसूत्रों के चिन्तन एवं आचरण को अपनी आत्मिक शान्ति का केन्द्र बिन्दु बनाता है वहीं से उसके जीवन में सदा–सदा के लिये दुःख से मुक्त होने का उपक्रम प्रारम्भ होता है। दुःख का अत्यधिक क्षय करने तथा परमानन्द को प्राप्त करने के लिये सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चरित्र रूप रत्नत्रय प्रतिपादित किया गया है। इसकी उपादेयता एवं उपयोगिता जीवन की सर्वोच्च परम एवं चरम संसिद्धि से जुडी हुई है।

भारत–पथिक डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपनी खोज और समाज–विज्ञान के मूल्यांकन के माध्यम से भारतीय समाज की अचल स्थिति का मूलाधार इसी वर्ण व्यवस्था को माना है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने कहा 'इस देश में वर्ण और वर्ग एक–दूसरे के पड़ोसी हैं, इन दोनों में सिर्फ आधे हाथ का फर्क है'। अम्बेडकर के विचारों में हिन्दू समाज में वर्ण व्यवस्था के चार वर्ग विभाजन चढ़ने उतरने की सीढ़ी विहीन एक चौमंजिला घर जैसा है। यहाँ वर्ण व्यवस्था सनातन एवं अमोघ है।

वैदिक ऋचाओं में वर्ण भेद केवल कार्य विभाजन के आग्रह से किया गया है। वर्ण के आधार पर सामाजिक घृणा और आर्थिक शोषण का किंचित मात्र भी संकेत वैदिक ऋचाओं में नहीं है। वर्ण को जातीय आधार देने का श्रेय अन्य ग्रन्थों को जाता है। साम्प्रतिक शूद्र विमर्श मूलतः वैदिक साहित्य के दुर्भाग्यपूर्ण स्थलों पर केन्द्रित है। डॉ. अम्बेडकर ने विशाल वैदिक साहित्य का सघन आलोकन किया है। अपनी मीमांसा में उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि दलितों पर हुए लम्बे एतिहासिक अत्याचारों के लिये सम्पूर्ण वैदिक साहित्य

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की समस्याएं तथा समाधान

सम्पादक

अरविन्दनारायण मिश्र

प्रकाशकः

धानी पब्लिकेशन

ज्वालापुर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड (भारत)

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की समस्याएं तथा समाधान

© सर्वाधिकार लेखकाधीन/सम्पादकाधीन

प्रथम संस्करण 2019

आई.एस.बी.एन: 978-81-935727-6-4

सहयोग - श्री बी.एन. राय
तकनीकी सहयोग - डॉ. सुशील कुमार चमोली

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

236

25. उच्च शिक्षा की समस्याऐं एवं समाधान 192

—अखलेश कुमार मीना

26. प्राथमिक शिक्षा की समस्याएं एवं समाधान 198

—डॉ. बिचारी लाल मीना

27. "संस्कृत शिक्षण की परम्परागत विधियाँ एवं नवाचार हेतु समाधान" 207

—डॉ. प्रेम सिंह सिकरवार

28. अध्यापक शिक्षा की समस्याएं तथा समाधान 215

—पिंकी मीना

29. स्त्री–शिक्षा की समस्यायें तथा समाधान 223

—डॉ0 अनिता रानी

30. उपनिषदीय शिक्षा में निहित ज्ञान के स्वरूप की वर्तमान शिक्षा पद्धति में उपादेयता 230

—संजय गुरुरानी

31. संस्कृत वाङ्मय में वर्णित गणित शिक्षा 238

—डॉ. शशिशेखर मिश्र

32. हिंदी भाषा अधिगम में विद्यार्थियों द्वारा किये जा रहे वर्तनी सम्बन्धी दोषों के कारण और निवारण 246

—डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार

33. शिक्षा का महत्व व उपयोगिता 254

—कु0 अनिता कौशिक

34. शिक्षा और संरचनावाद 263

—डॉ. अरविन्दनारायण मिश्र

डॉ. बिन्दुमति द्विवेदी

35. Co-operative Learning: A New Trend in The Teaching-Learning Process 269

—Dr. Pinki Malik

36. CCE: Solution to the Problem of Evaluation in Primary Classes 278

—Medhavi Saini and Dr. Mamta Arora

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

29

स्त्री–शिक्षा की समस्यायें तथा समाधान

–डॉ० अनिता रानी*

समाज की अन्तः चेतना गृहस्थाश्रम को माना गया है। गृहस्थ का आधार सूत्र स्त्री पुरुष को मानते है। समाज के इसी मूलाधार गृहस्थ जीवन को अधिक दृढ, सुसंस्कृत और सुव्यवस्थित बनाने की आवश्यकता प्रतीत होती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पुरुष की जागृति मात्र पर्याप्त नहीं, स्त्री की विशेषतायें भी उतनी ही अनिवार्य है। मनोबल की हीनता, चारित्रिक–पतन, भय, क्रोध, कलह, और कटुता के कारण पारिवारिक जीवन पूर्ण रूप से अस्त–व्यस्त हो चुका है। आज की अनियन्त्रित अन्ध–परम्पराओं के कारण हमारे गृहस्थ जीवन में बड़ी गहराई तक कुसंस्कारों ने जड़ें जमा ली है। गृहस्थ की दुर्दशा का कारण आज स्त्रियों की अशिक्षा ही है। वैदिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में स्त्रियों की शिक्षा सम्बन्धी व्यवस्था उन्नत थी। यौवनावस्था में विवाह होने के कारण कन्याओं की शिक्षा–दीक्षा के लिये पर्याप्त समय मिल जाता था। घर में रहकर ही कन्याएं उन समस्त कार्यों में दक्ष हो जाती थी, जिनकी उन्हें

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt-Haridwar, Uttarakhand

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था मे गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का महत्व

अनामिका चौहान

ISBN : 978-81-943984-5-5

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : +9968082809, 9315194807
ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2020

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-32

Adhunik Shiksha Viyavshtha Me Gurukul Shiksha Pradalli ka Mahatv
by Anamika Chauhan

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar Uttarakhand

240

10. आधुनिक परिवेश में गुरूकुल शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता 54
गंगादास सिंह

11. प्राचीन भारत की गौरवशाली शिक्षण संस्था "तक्षशिला" 62
संजीव कुमार

12. गुरुकुल शिक्षा पद्धति नैतिकता मूल्य, चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण : एक विमर्श 65
विक्रान्त गिर
डॉ. अजयपाल सिंह

13. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक परिवेश में इसकी उपादेयता 71
विशाल कुमार सोधी
डॉ. दीप्ती कौशिक

14. गुरूकुल शिक्षा पद्धति की 21वीं सदी में प्रासंगिकता 83
डॉ. विकास कुमार

15. वर्तमान समय की मांग : गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था 88
अमर ज्योति

16. वर्तमान समय में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता 94
गनेश जायसवाल

17. गुरुकुल शिक्षा पद्धति की अवधारणा 99
डॉ. अनिता रानी

18. भारतीय शिक्षा व्यवस्था का गिरता स्तर 104
कु. प्रवीन

19. वैदिक, बौद्ध व मुस्लिम कालीन शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता 112
राजबाला

20. गुरुकुल शिक्षण पद्धति की ऐतिहासिक परम्परा का भारतीय संगीत के आलोक में अध्ययन 119
डॉ. शिप्रा पन्त

21. वैदिक शिक्षा बनाम आधुनिक शिक्षा 124
डॉ. शालिनी

22. स्मृतिवाङ्मये दण्डव्यवस्था 137
डॉ. शिखा शर्मा

23. Degradation of Moral Values Among Indian Youths 143
Sheetal

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt-Haridwar, Uttarakhand

17.

गुरुकुल शिक्षा पद्धति की अवधारणा

डॉ. अनिता रानी*

आजकल की प्रचलित शिक्षा पद्धति से साधारण स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों से जो विद्यार्थी निकलते हैं, वे एक तरह से केवल बोलने वाली मशीन की भाँति ही होते हैं। वास्तविक जीवन का उनमें सर्वथा अभाव होता है। अतः जो कुछ भी वह पढ़ते हैं, उसे वह अपने व्यवहार में नही लाते। वे जो शिक्षा पाते हैं उसमें और उनके वास्तविक जीवन में प्रायः प्रतीती नहीं होती। इसका मुख्य कारण यही है कि आज के ब्रह्मचारियों (विद्यार्थियों) को ब्रह्मचर्य का मूल्य नहीं समझाया जा सकता। यह शक्ति ब्रह्मचर्य ही है जिससे मनुष्य का शरीर, मन और मस्तिष्क सुदृढ़ बनता है और इसके द्वारा वह अपने कर्त्तव्य-पालन के योग्य बन सकता है।

वर्तमान की जड़ें अतीत में विद्यमान होती हैं। भारत का अतीत सदैव गौरवमय रहा है। इससे वर्तमान आलोकित हुआ है और भविष्य के प्रति आस्था उपजी है। प्राचीन काल में आध्यात्मिकता से ही राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक धारायें प्रवाहित हुई तथा इसी के कारण सत्याचरण, प्रेम, अहिंसा आदि की नींव रखी गयी।[1]

वैदिक काल में गुरुकुल प्रणाली थी। छात्र माता-पिता से अलग गुरु के घर पर ही शिक्षा प्राप्त करता था। यह गुरुकुल पद्धति कहलाती थी। छात्र गुरु-गृह में ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ अपने आचार्य से शिक्षा प्राप्त करता था। वेद-कालीन शिक्षा प्रणाली में आरम्भिक युग में शिक्षक

* (सहायक आचार्या) संस्कृत विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, रुड़की, हरिद्वार

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt-Haridwar Uttarakhand

242

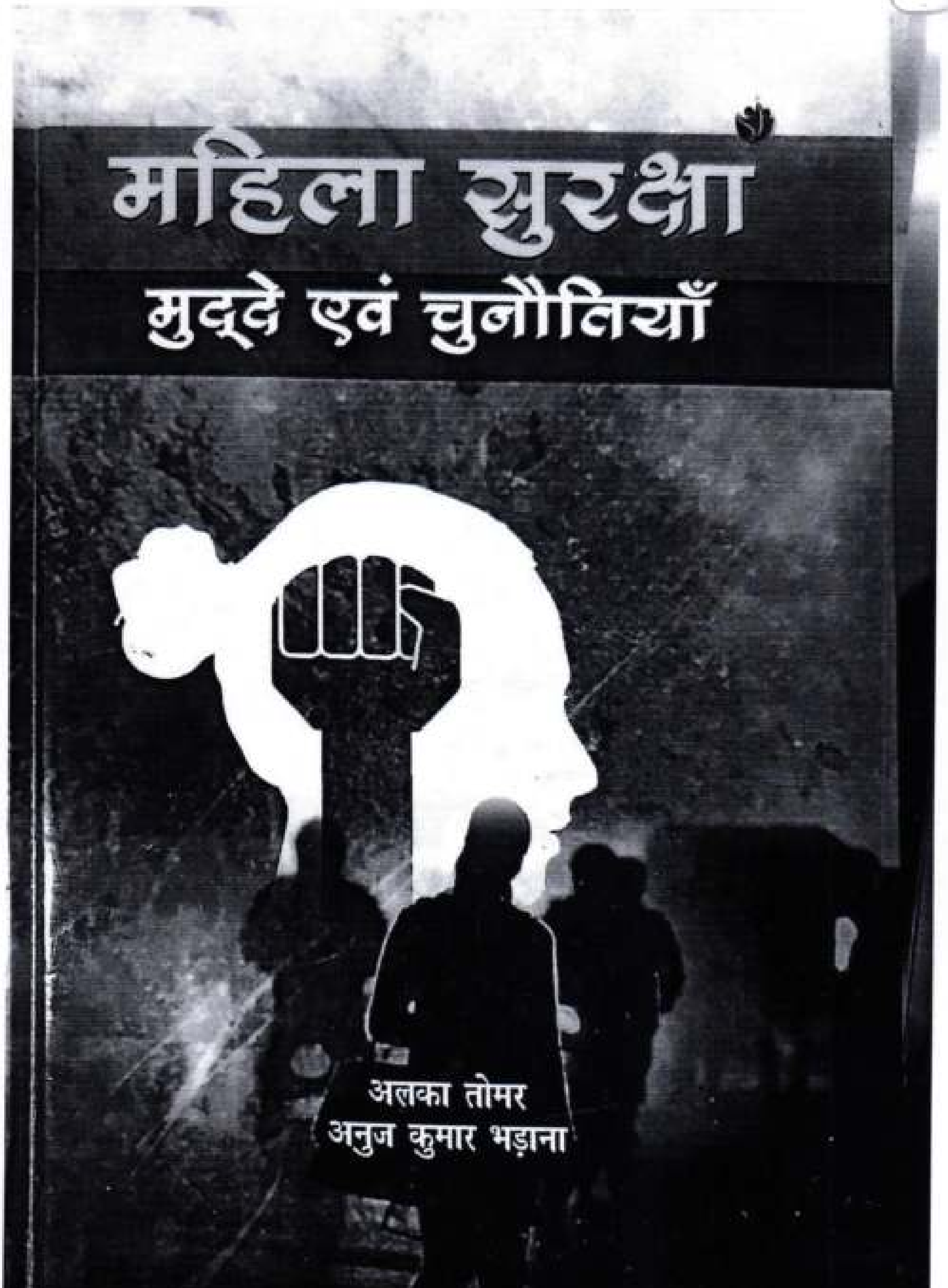

I.Q.A.C. Cordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar)

Scanned with Oken Scanner

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

243

ISBN : 978-81-940315-3-6

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : +9315194807
ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019
अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा दिल्ली-94
मुद्रक
ट्राईडेंट इटरप्राइजेज दिल्ली-32

Mahila Suraksha : *Mudde Evam Chunoutinya*

by Dr. Alka Tomar
Anuj Kumar Bhadana

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalay
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

IQAC Coordinator

Scanned with Oken Scanner

244

6

''महिला सुरक्षा एवं कानूनी प्रावधान''

डॉ० हिमांशु कुमार*
शालिनी**

आज देश में नारी सुरक्षा एक चुनौती बनकर रह गयी है। सरकार के वो बडे-बडे दावे इन दानवों के आगे नाकाम होते नजर आ रहे हैं। हर रोज बडे-बडे नेता बडी-बडी बातें करते हैं और हर रोज इन जघन्य अपराधों के नए नए किस्से सामने आ रहे हैं। क्या हम इतने दुर्बल हो गए हैं कि हम अपनी बहू बेटियों की रक्षा भी न कर सकें। देवियों को पूजने वाले इस देश में क्या हम नारियों को सुरक्षित वातावरण नहीं दे सकते। क्यों आज हर लडकी अपने ही शहर, अपनी ही गली में निर्भय होकर नहीं घूम सकती। रात की तो बात छोड़िए वह तो दिन के उजाले में भी डरती है। स्वयं को असुरक्षित महसूस करती है। जरा सोचिए वह असुरक्षित है तो इसमें दोष किसका है, क्या उस लड़की का जो उडना चाहती है, समाज का या फिर हमारा, हमारी मानसिकता का समाज आज भी उन रूढ़ियों से बाहर नहीं आ पा रहा है। जब स्त्री को पर्दे में रखा जाता था, उसे अधिकार केवल चूल्हे तक ही सीमित थे, बाहर की दुनियां से बिल्कुल अनभिज्ञ थी। समाज में बदलाव आया है। परन्तु हर किसी की मानसिकता नहीं बदली बहुत से लोगों की सोच लडकियों को लेकर आज भी वही है, वो लडकियों की स्वतन्त्रता उनका स्वाभिमान बर्दाश्त नही कर पा रहे हैं, जो हमारे समाज को दीमक की तरह खाए जा रहे हैं। आज हमें जरूरत है उस कट्टरवादी सोच के दायरे से निकलकर वक्त के साथ आगे बढने की, आखिर क्यों इतने प्रयासों के बाद भी ये कुकृत्य रूकने का नाम नहीं ले रहे, एक किस्सा समाप्त नहीं हो पाता कि दूसरा किस्सा हमारे मुँह पर कालिक पोतने खडा हो जाता हैं आज यदि हम अपनी बहू बेटियों को न्याय नहीं दिला पाये तो हमारा उन देवियों को पूजना व्यर्थ है। नारी शक्ति को इतना सशक्त बनाओं की वो अपनी सुरक्षा स्वयं कर सके, उन्हें भी दुर्गा, चण्डी, काली बनाओं ताकि वो उन दुष्टों का संहार कर सके, जो उनकी तरफ बुरी नजरे उठाए। कानून ने भी नारियों के लिए उनकी सुरक्षा के लिए बहुत से प्रावधान दिए हैं। उन्हें न्याय दिलाने के लिए कानून महिलाओं के साथ है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के विकास हेतु निरन्तर प्रयास जारी हैं, सर्वप्रथम इसकी पहल वैश्विक स्तर पर 28 फरवरी, 1909 को अमेरीका में की गई तथा अमेरीकी प्रशासन ने राष्ट्रीय

* सहायक आचार्य (समाजशास्त्र विभाग)
**(शोधार्थिनी) चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।

IQAC Coordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with Oken Scanner

245

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गुरूकुल शिक्षा पद्धति का महत्व

संपादक

डॉ. नीशू कुमार

अनामिका चौहान

नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar) I.Q.A.C. Cordinator

Chaman Lal Mahavidhyalaya

Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with Oken Scanner

(246)

ISBN : 978-81-942838-2-9

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : +9315194807
ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Adhunik Paripekshya Me Gurukul Shiksha Paddati Ka Mahtava

by Dr. Nishu Kumar
Anamika Chauhan

I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with Oken Scanner

50.

HEALTH AND EDUCATION WITH VALUE SYSTEM

Dr. Himanshu Kumar *

Value may be defined as a conception or standard, cultural or merely personal, by which things are compared and approved or disapproved relating to one another held to be relatively destrable, more meritorious or less, more or less correct" H.M. Johnson.

The study of values begins with the civilization of man. The earliest source of our information regarding human values is the vada not a single work but the whole literature of Aryans history and civilization. The aim of vedas is to prescribed certain action and prohibit certain others. Instruction or command (Chodana) is the main character of vedic texts. The end that is achieved through the performance of the acts enjoined by the veda, is prosperity (Abhudava) and thereafter release (Nisrevas) which implies freedom from Karma (both good and bad papa and punya) All this is possible by performing the duties/ rites ordained in the vedas values, therefore based on the instructions of scriptural texts, later, these instruction

* *Assistant Professor, Department of Sociology, Chaman Lal Mahavidyalya, Landhaura, Hardwar*

I.Q.A.C. Coordinator
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand
Scanned with Oken Scanner

248

गुरुकुल शिक्षापद्धति एवं आधुनिक परिवेश मे इसकी प्रासंगिकता

डॉ. नीशू कुमार
अनामिका चौहान

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand
Scanned with Oken Scanner

249

ISBN : 978-81-942838-0-5

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : +9968082809, 9315194807
ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-32

Gurukul Shiksha Padhatti Evam Adhunik Parivesh Me Iski Prasangikta

by Dr. Nishu Kumar
Anamika Chauhan

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Scanned with Oken Scanner

250

22.

गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं भारतीय संस्कृति का अन्त: संबंध

शालिनी*

डॉ. हिमांशु कुमार **

भारतीय संस्कृति व्यवस्था विश्व की प्राचीनतम सांस्कृतिक व्यवस्थाओं में से एक है। यह विश्व बन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत वैदिक ऋषियों के अनुभवों पर आधारित है। भारतीय संस्कृति की विशेषता है कि इसमें भौतिकता की अपेक्षा आध्यात्मिकता पर अधिक बल दिया गया है। यहाँ भोग के स्थान पर योग, त्याग, तपस्या और तपोवन की प्रधानता रही है। भारतीय संस्कृति ऋषि मुनियों एवं तपस्वियों की धरोवर है। ऋषि मुनि जंगलों में आश्रम बनाकर अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे तथा वहीं पर गुरुकुलों की व्यवस्था करते थे। राजा महाराजा और दास आदि सभी अपने बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरुकुल में गुरु के सानिध्य में भेजते थे। गुरु पिता के समान सभी बच्चों का ध्यान रखते थे।

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है, वर्णाश्रम व्यवस्था। वर्णाश्रम व्यवस्था का मूल आधार कर्म सिद्धान्त है। ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णो से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने कर्तव्यों का पालन करें। ब्रहमचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रमों का विभाजन भी आवश्यकतानुसार कर्त्तव्य निर्वाह के लिए ही किया गया था। वैदिक वर्ण-व्यवस्था का आधार गुण कर्म है, जाति नहीं। वैदिक व्यवस्था के अनुसार कर्महीन, आलसी और मानवीय

* 'शोधार्थिनी, मु.ला. एण्ड जय नारायण गर्ल्स कॉलेज, 'सहारनपुर'

** असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, 'चमन लाल महाविद्यालय', लण्ढौरा हरिद्वार

I.Q.A.C. Cordinator

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with Oken Scanner

251

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था मे गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का महत्व

अनामिका चौहान

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

252

ISBN : 978-81-943984-5-5

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : +9968082809, 9315194807
ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2020

अक्षर संयोजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक
[illegible] दरियागंज, दिल्ली-32

Adhunik Shiksha Viyavshtha Me Gurukul Shiksha Pradalii ka Mahatv

by Anamika Chauhan

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

255

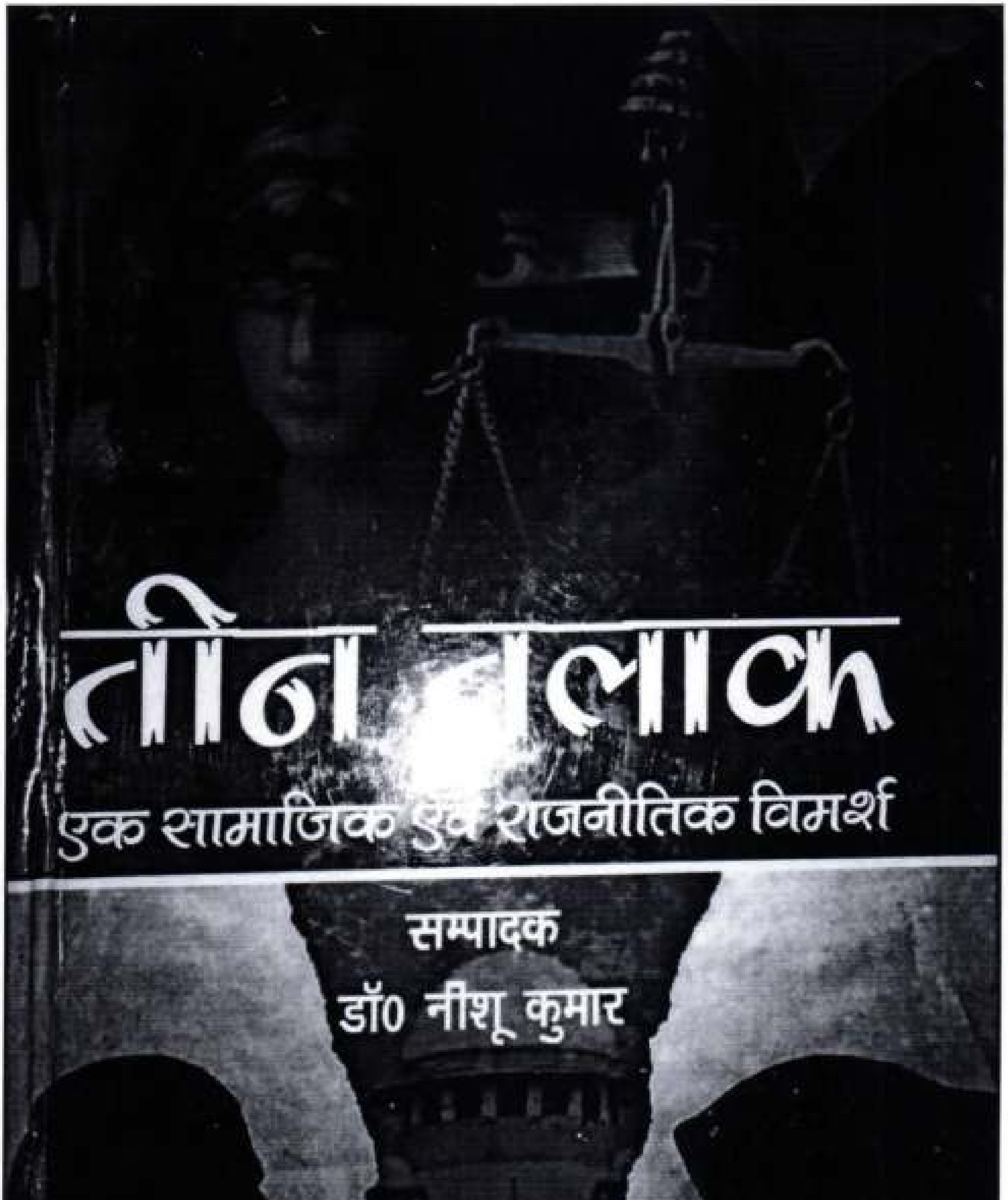

I.Q.A.C. Cordinator
Chaman Lal Mahavidhyala, Landhaura (Haridwar)
Chaman Lal Mahavidhyala, Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

254

प्रकाशकः

प्रशांत पब्लिशिंग हाउस

28 फुटा रोड, गली नं. 3,
पश्चिमी करावल नगर, दिल्ली-53
मो. 9810396373
Email: prashantpublishinghouse@gamail.com

तीन तलाक एक सामाजिक एवं राजनीतिक विमर्श

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: 2018

आई.एस.बी.एन: 987-93-80565-59-5

मुद्रकः बालाजी आफसेट, दिल्ली

I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalay,
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

9. "भारत में मुस्लिम महिला : उत्थान विमर्श" 48

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

10. तीन तलाक : एक अवलोकन 52

डौली

11. शरीयत का हवाला और मुस्लिम महिलाओं का यथार्थ (तीन तलाक के सन्दर्भ में) 59

डॉ0 वन्दना सिंह

12. तीन तलाक और भारतीय राजनीति का इतिहास 64

डॉ0 गीता

13. तीन तलाक के आइने में मुस्लिम महिलाएं 69

डॉ0 रणविजय सिंह

गौरी

14. "तीन तलाक : एक विमर्श" 76

हेमन्त कुमार रिहारिया

15. तीन तलाक: एक समाजशास्त्रीय समीक्षा 82

हेमलता सिंह

16. तीन तलाक : सामाजिक अपराध 90

हेमन्त वर्मा

17. तीन तलाक : एक विश्लेषण 96

डॉ0 इमरान खान

18. तीन तलाक : मुस्लिम महिलाओं के लिए अभिशाप 99

डॉ. कवलजीत कौर

19. तीन तलाक : मुस्लिम समाज में एक अभिशाप 107

कुलदीप कुमार

20. "तीन तलाक के सम्बद्ध में मुस्लिम महिलाओं की समस्याऐं एवं सोच" 112

कुमकुम सागर

21. मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक स्थिति 127

डॉ. ललिता त्यागी

22. अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में अभिव्यक्त मुस्लिम महिला जीवन 133

डॉ0 मिन्तु

डॉ0 मनीष वर्मा

I.Q.A.C. Coordinator

Chaman Lal Mahavidhyalay
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

19

तीन तलाक : मुस्लिम समाज में एक अभिशाप

कुलदीप कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

सार:- इस आलेख में वर्तमान परिप्रेक्ष में मुस्लिम समाज में महिलाओं के प्रति कुप्रथा को उजागर करने व उससे निपटने के प्रयास किये गये है, यह लेख बुद्धिजीवो, शिक्षाशास्त्रीयो, समाजशास्त्रीयो एव शोध छात्र-छात्राओ तथा इस मुद्दे से जुड़े सभी शिक्षार्थियो के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

मुख्य बिन्दु:- कुप्रथा, महिलाओं की स्थिति, तीन तलाक, हलाल, खुला आदि।

परिचय:- कई वर्षो से कुप्रथाओं के बन्धनो मे जकड़ी और मौलानाओं के फतवे झेलती बुरके में कैद मुस्लिम महिलाएं अपनी आजादी चाहने लगी है। धर्म की नाजायज बंदिशो को तोड़कर आज मुस्लिम समाज की महिलाए सड़क पर उतरकर अपना विरोध जताने लगी हैं।

पुरुषो का समाज में हमेशा से एकाधिकार रहा है। लेकिन आज के आधुनिक युग मे धर्म के न्यायाधिकारी के रूप में काम करने वाले काजी के पद पर मुस्लिम महिलाएं भी काजी बनने की ट्रेनिग लेने लगी है।

आज के बदलते समय मे मुस्लिम महिलाओं ने बंदिशो को झकझोरना प्रारम्भ कर दिया है। वे अपने आप को बदलने के लिए उत्साहित व बेताब है। जो भी उनके हक है वे उन सभी को पाना चाहती है।

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

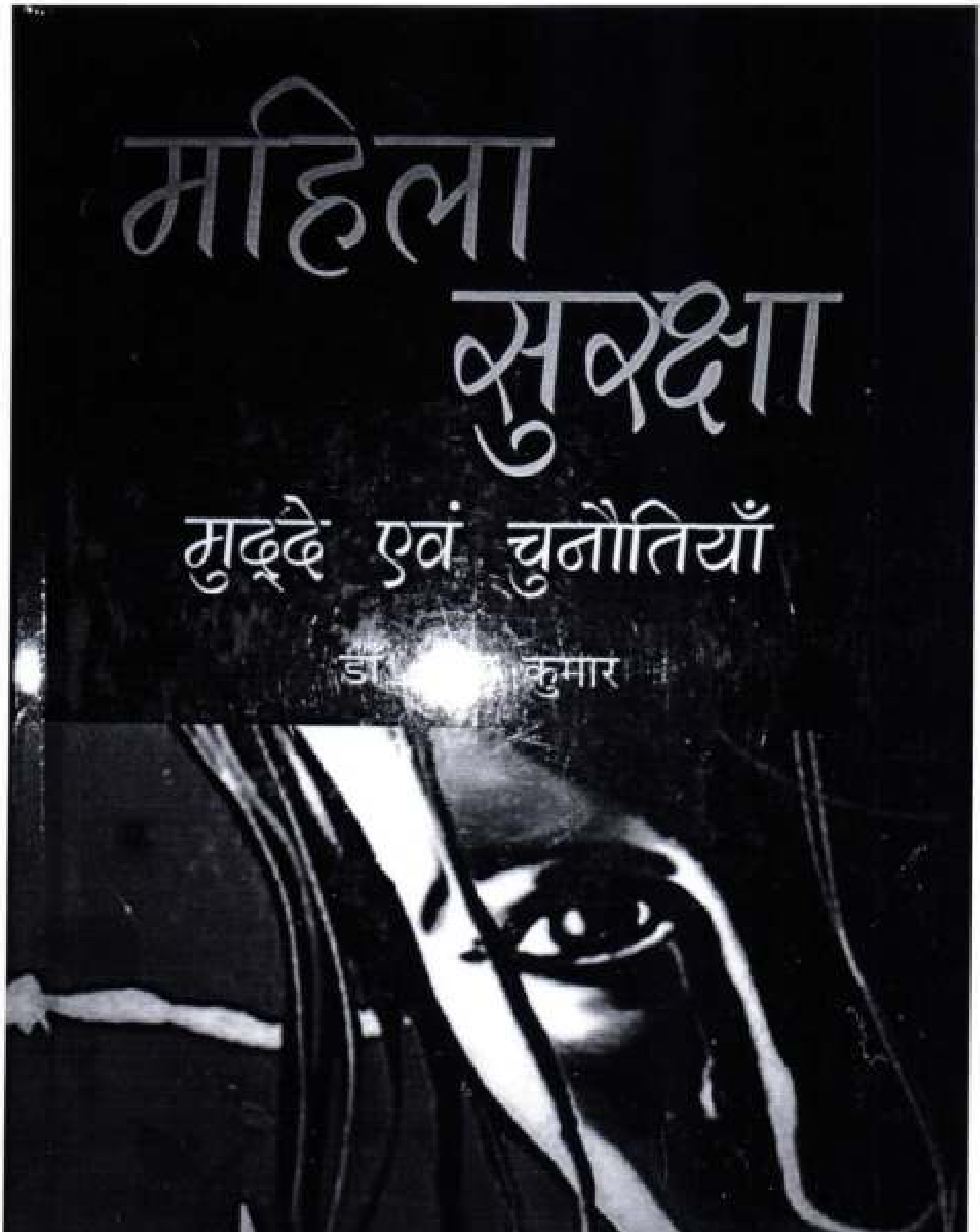

I.Q.A.C. Cordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

© डॉ. नीशु कुमार

प्रथम प्रकाशन–2018

सर्वाधिकार लेखक तथा प्रकाशक के अधीन
सुरक्षित है।

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत है। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशन का कोई भी दायित्व नही होगा।

प्रकाशक
AARTI PRAKASHAN
4561/16 Ansari Road Daryaganj,
New Delhi-110002
Mob: 9811068537, 9958384215
email : surendrapublication@gmail.com

ISBN : 978-93-82185-30-7

मुद्रक
ग्लोबल प्रिंटिंग सर्विसेज,
दिल्ली–110092

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand
Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)
258

14	महिला सुरक्षा के विविध आयाम	100
15	समाज में प्रभावी शिक्षा की आवश्यकताएँ	108
16	पितृसत्ता मानसिकता एवम भारतीय महिलायें	114
17	उत्तराखण्ड ग्रामीण महिलाओं की दशा एवं दिशा	121
18	"भाजपा एवं कांग्रेस पार्टी में महिलाओं की स्थिति: 2014 लोकसभा चुनाव के विशेष सन्दर्भ में"	134
19	सरकार द्वारा औद्योगिक इकाइयों में कामकाजी महिलाओं की सुरक्षा हेतू उठाए गए कदम	145
20	महिलाएं एवं वैधानिक प्रावधान	160
21	भारतीय समाज में बालिका भ्रूण हत्या और महिला सुरक्षा के प्रश्न	169
22	भारतीय समाज: महिला सुरक्षा	179
23	"कानूनी प्रावधानों का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव : एक विश्लेषण"	184
24	भूमण्डलीकरण, मीडिया और भारतीय महिला	201
25	भारत में महिलाएँ: एक बदलती तस्वीर	212
26	भारतीय महिला एवं संवैधानिक अधिकार: चुनौतियाँ एवं सुझाव	221
27	आधुनिक भारतीय राजनैतिक परिदृश्य में महिलाओं की सहभागिता: आरक्षण के विशेष सन्दर्भ में	240
28	क्या है नारी सशक्तिकरण: चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ	246
29	कानून एवं महिला हिंसा: एक अवलोकन	256

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

260

28

क्या है नारी सशक्तिकरण: चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ

कमल पोसवाल
शोध छात्र
राजनीति विज्ञान विभाग
मेरठ कॉलेज, मेरठ
(चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)

कुलदीप कुमार
सहायक आचार्य
पुस्तकालय विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय,
लण्ढौरा, हरिद्वार

हम पुरुष सशक्तिकरण की बजाए केवल महिलाओं के सशक्तिकरण के बारे में ही क्यों बात करते हैं? महिलाओं को क्यों सशक्तिकरण की आवश्यकता है और पुरूषों की क्यों नहीं हैं? दुनिया की कुल आबादी का लगभग 50 महिलाएँ हैं फिर भी समाज के इस बड़े हिस्से को सशक्तिकरण की आवश्यकता क्यों है? महिलाएँ अल्पसंख्यक भी नहीं है कि उन्हें किसी प्रकार की विशेष सहायता की आवश्यकता हो। तथ्यों के आधार पर कहा जाए तो यह एक सिद्ध तर्क है कि महिलाएँ पुरूषों से हर कार्य में बेहतर है। तो यहाँ सवाल यह उठता है कि हम महिला सशक्तिकरण विषय पर चर्चा क्यों कर रहे हैं?

महिला सशक्तिकरण की जरूरत क्यों?

सशक्तिकरण की आवश्यकता सदियों से महिलाओं का पुरूषों द्वारा किए गए शोषण और भेदभाव से मुक्ति दिलाने के लिए हुई, महिलाओं की आवाज को हर तरीके से दबाया जाता है। महिलाएँ विभिन्न प्रकार की हिंसा और दुनिया भर में पुरूषों द्वारा किए जा रहे भेदभावपूर्ण व्यवहारों का लक्ष्य है। भारत भी अछूता नहीं है।

भारत एक जटिल देश है। यहाँ सदियों से विभिन्न प्रकार की रीति-रिवाजों,

Prin.
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand
I.Q.A.C. Coordinator

261

INTELLECTUAL PROPERTY RIGHTS

DIGITAL TRANSFORMATION

R.K. Tiwari
Somen Chakraborty
Anthony Rodrigues
Rama Nand Malviya

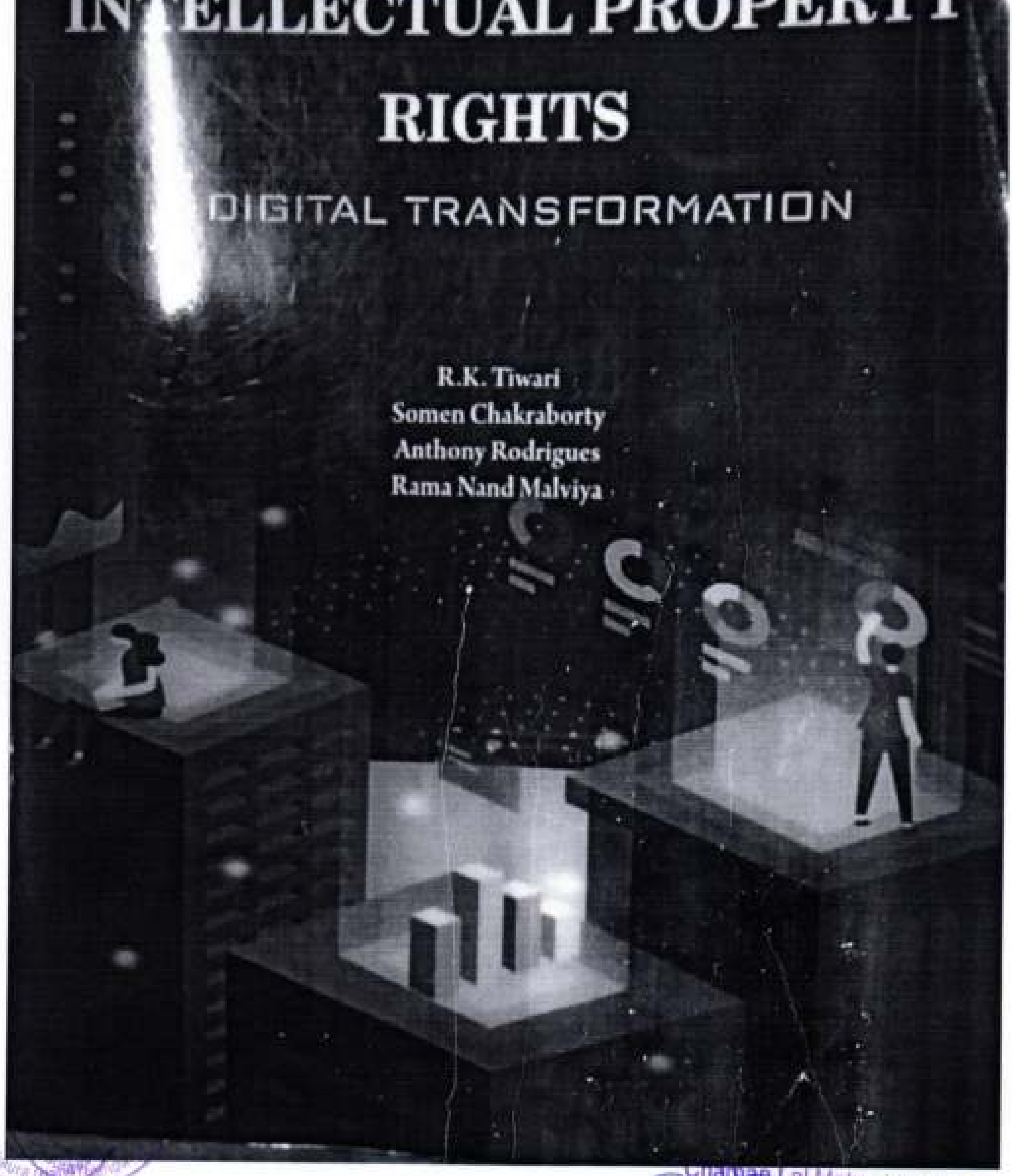

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

263

INTELLECTUAL PROPERTY RIGHTS
DIGITAL TRANSFORMATION

© Reserved

First Published 2019
ISBN 978-93-81530-76-4
Price: 700/-

Published By

Siddharth Books
1/4446, Ramnagar Extension, Gali No. 4,
Dr. Amedkar Gate, Mandoli Road,
Shahdara, Delhi-110032
Mob. : 9810123667, 9810173667
E mail : gautambookcenter@gmail.com
website : www.gautambookcenter.com

All Rights reserved No part of this publication may be reproduce, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, Mechanical or photocopying or otherwise, without prior permission in writing from the publishers / author.

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Printed in India at Balaji Offset, Navin Shahdara

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(664)

Contents

SECTION-I
INTELLECTUAL PROPERTY RIGHTS IN DIGITAL ERA

Intellectual Property Rights: Meaning, Nature, Types and Scope & its Protection in Digital Era — 2
Rakesh Kumar Bhardwaj

Intellectual Property Rights -- An Introduction — 7
P.J. Yesu Nesa Joy Singh

Intellectual Property Rights: Meaning, Definitions and Related Issues - A General Introduction — 14
Madan Lal Jat and Kuldeep Kumar

Connections between Intellectual Property Right & Library Professionals — 22
Kailash D. Tandel

Intellectual Property Rights in Digital Era: With Special Reference to Indian Scenerio — 29
Thakur Lal Gautam and Rajman Sharma

Intellectual Property Rights: Changing Concern — 36
Archana Ashok Kamble.

Copyright Infringement in India — 41
Kuljeet Kaur

Intellectual Property Rights with Special Reference to Patent Laws in India Strategies and Challenges in Digital Era — 45
Brundaban Nahak and R. K. C.Patro

Global Dimensions of Intellectual Property Rights: Lessons from the World — 64
Reji George andAbishek Benjamin Alangar

Global Research on Intellectual Property Rights: Bibliometric Study — 74
Madansing D. Golwal

Internet and Challenges

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

262

Intellectual Property Rights: Meaning, Definitions and Related Issues – A General Introduction

Madan Lal Jat and Kuldeep Kumar
Assistant Librarian, Kanya Gurukul Campus, Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar
Assistant Professor, Chaman Lal Degree College, Landhaura, Haridwar

Abstract:
Their research article related to Intellectual property rights. IPR is a general term covering patents, copyright, trademark, industrial designs, geographical indications, protection of layout design of integrated circuits and protection of undisclosed information (trade secrets). IPRs refer to the legal ownership by a person or business of an invention / discovery attached to particular product or process which protects the owner against unauthorized copying or imitation. This article uses for academician, educator, writers and inventor so holds to protect his/her own piece of work.

Key Words: IPR, Patent, Copyrights, Trademarks, Industrial Design, Plant Breeder's Rights Act, Geographical Indications

Introduction:
According to WIPO- as "The creations of the mind, inventions, literary and artistic work, and symbols, names, images and designs used in commerce"

Intellectual property rights are the rights which an author holds to protect his/her own piece of work. WTO (1995) explained IPR as a general term covering patents, copyright trademark, and industrial designs geographical indications protection of layout design of integrate circuits and protection of undisclosed information. IPRs refer to the legal ownership; by a person or which protects the owner against unauthorized copying or imitation.

IPR- related issues in India: like patents, trademarks, copyrights, designs and geographical indications are governed by the patents Act 1970 and patent Rules 2003, Trademarks Act 1999 and the Trademarks Rules 2002, Indian Copyrights Act, 1957 Design Act 2000 and Rules 2001, and the Geographical Indications of Goods (Registration &
Protection) Rules 200s, respectively.

General types of IP include:

1. Copyright
2. Patents

Patent protection provides the owner of the right with the means to prevent unauthorized use of the protected technology

Design patent: Plant Patents protect plant varieties that are asexually reproduced including hybrids

Designs: This protects designs such as drawings or computer models. Copyrights protect the dramatic arts. Work, publicly; display or perform their work and create derivative works Moreover, owners are given economic rights to financially benefit from their work

Coordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(265)

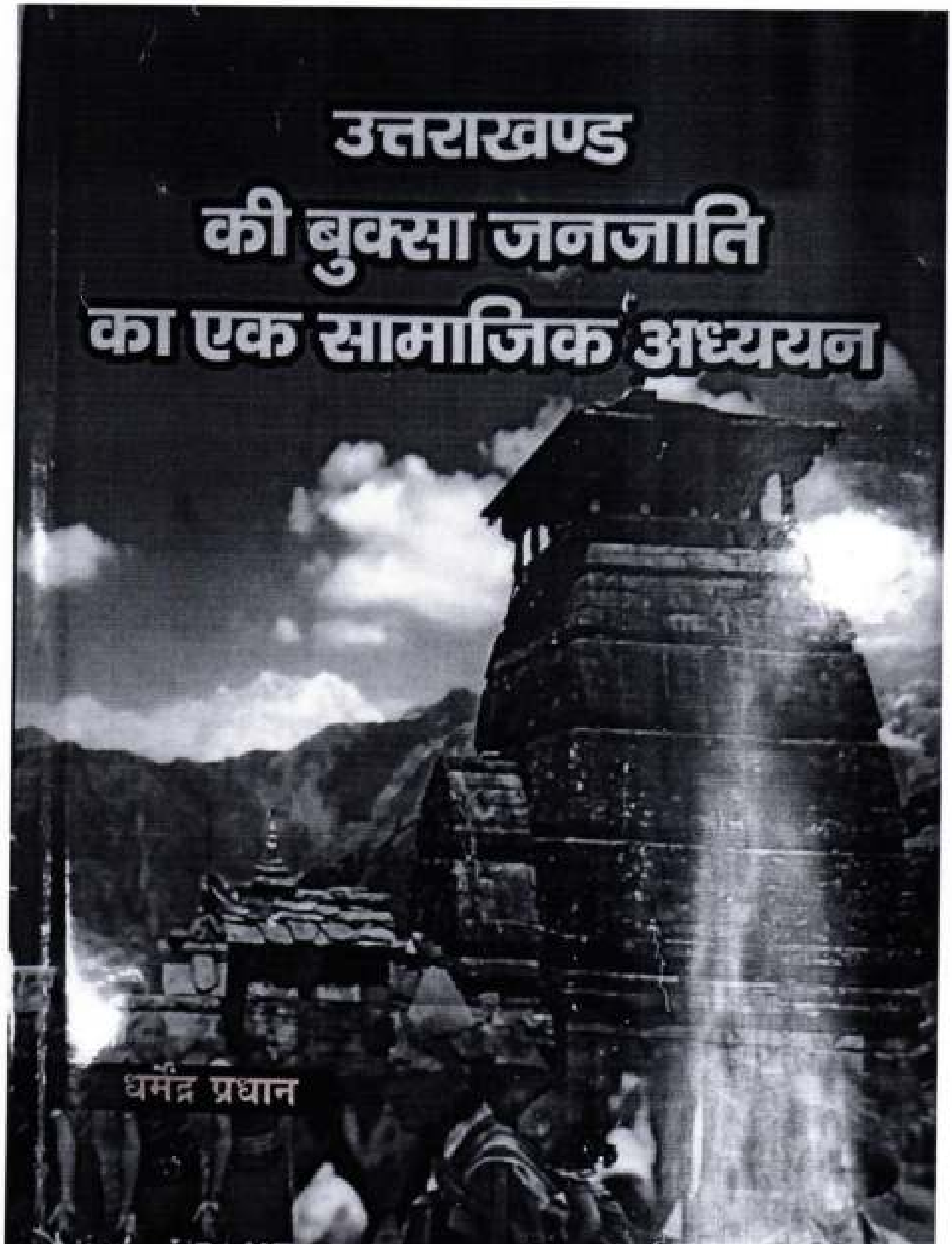

I.Q.A.C.
Cordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

267

उत्तराखण्ड की बुक्सा जनजाति का एक सामाजिक अध्ययन

First Published: 2020

ISBN: 978-93-90115-25-9

Book Code: AB144 - F21

© Editors

'Authors/contributors are solely responsible for the originality/ authenticity/accuracy of the ideas/ information/views/content/ data produced in their respective papers. Publisher and the Editor shall not be responsible for any liability arising on account of any civil or criminal proceeding(s) in any court/tribunal/judicial body under any law for the time being in force.'

All rights including copyrights and rights of translation etc are reserved and vested exclusively with the editor. No part of this publication shall be reproduced or transmitted in any form or by any means, including electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise or stored in any retrieval system of any nature without the express permission of the editor.

Published by :
Ms. Kavita Mithal
Anu Books
Publishers & Distributors
H.O. Shivaji Road, Meerut, 01214007472, 8800688996
Branch : Green Park Extension, New Delhi 110016, 9997847837
Glasgow (UK)+447586513591
E-mail: anubooks123@gmail.com
Printed by:
AnVi Composers, New Delhi

IQAC Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(268)

13. बुक्सा जनजाति की शैक्षिक स्थिति : एक अवलोकन
कुलदीप कुमार

85

14. जनजातीय महिलाए : सशक्तिकरण एवं शिक्षा
ममता गंगवार

91

15. उत्तराखण्ड की बुक्सा जनजाति का सामाजिक और आर्थिक अध्ययन
पूजा गुप्ता, भावना गुप्ता

97

16. उत्तराखण्ड की बोक्सा जनजाति की धार्मिक मान्यताएं एवं परम्पराएं
विशाल कुमार लोधी, डॉ0 विक्रान्त गिर

106

17. उत्तराखण्ड राज्य के बोक्सा जनजाति की वर्तमान स्थिति उनकी समस्यायें एवं उपयुक्त सुझावः
डॉ0 अजय कुमार

126

18. उत्तराखण्ड की जनजातियों का सामाजिक परिवेष
डॉ० सुशील उपाध्याय, नीलम देवी

137

19. थारू जनजातिः चुनौतियां एवं समाधान
डा. संतोष कुमार सिंह

144

20. बुक्सा जनजाति : महिला, समाज एंव संस्कृति
परमजीत कौर

158

21. जनजातीय संस्कृति को समझिए तो......
डॉ० राकेश राणा

167

22. भारत में अनुसूचित जनजातीयों की स्थिति : एक विश्लेषण
डॉ० दिनेश कुमार, डॉ० हेमलता वर्मा, राजेन्द्र सिंह 173

23. उत्तराखण्ड सरकार द्वारा आदिवासी समुदाय का सम्पोषित विकास एक विश्लेषणात्मक अध्ययनः बुक्सा समुदाय के संदर्भ में
डॉ0 नीशू कुमार 187

24. आदिवासी और हम : जरूरत एक दूसरे की
डॉ0 तीर्थ प्रकाश 193

25. बुक्सा जनजाति एक ऐतिहासिक अध्ययन
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा 199

26. उत्तराखण्ड की बुक्सा जनजाति की उत्पत्ति एवं भौगोलिक परिवेष
डॉ० टीना मड़ोत्रा, डॉ० विक्रान्त गिर 205

Chaman Lal Mahavidhyalaya · Landhaura (Haridwar) · I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(266)

13

बुक्सा जनजाति की शैक्षिक स्थिति : एक अवलोकन

कुलदीप कुमार
सहायक आचार्य, पुस्तकालय विज्ञान
विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

किसी भी समाज या राष्ट्र की उन्नति शिक्षा के बिना संभव नहीं है अतः शिक्षा की संतुलित एवं समुचित व्यवस्था करने की जिम्मेदारी समाज व राष्ट्र दोनो की होती है। बुक्सा समाज मे पितृसत्तात्मक व्यवस्था होने के बाद भी महिलाओं की वास्तविक स्थिति पुरुषों की तुलना मे अधिक अच्छी मानी जाती है। बुक्सा समुदाय मे परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयो मे वरिष्ठ स्त्री माता या पत्नी की सहमति आवश्यक व अनिवार्य समझी जाती है। बुक्सा जनजाति की महिलायें सामाजिक जीवन में स्वतंत्र.रूप से अपना जीवन बिताती है। बुक्सा जनजाति की महिलायें धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक क्षेत्रो मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बुक्सा जनजाति का निवास क्षेत्र तराई एवं भाबर मे 280 43' से 290 उत्तरी अक्षांश एवं 780 53' से 800 पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। बुक्सा जनजाति कुमाऊं मण्डल के जनपद नैनीताल के रामनगर और जनपद ऊधमसिंह नगर के बाजपुर, काशीपुर

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

270

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

के विचारों की प्रासंगिकता

संपादक
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

सह संपादक
डॉ. [illegible]

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(271)

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली क्षति के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-86246-84-4

प्रकाशक:
प्रगतिशील प्रकाशन
एल-3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 (भारत)
दूरभाष: 09899665801
ई-मेल : pragatisheelprakashan@yahoo.in

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर
के विचारों की प्रासंगिकता

मूल्य : ₹ 700.00
प्रथम संस्करण : 2018
© सुरक्षित

भारत में प्रकाशित-

'प्रगतिशील प्रकाशन', नई दिल्ली के लिए प्रकाशित। सत्यम् प्रिंटोग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा लेज़र टाईपसेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, द्वारा मुद्रित।

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt Haridwar, Uttarakhand

272

21. डॉ. अंबेडकर.....देश और सामाजिक एकता के महान रक्षक
✍ कु. प्रवीन 159

22. अम्बेडकर के चिन्तन में सामाजिक व धार्मिक अवस्थिति
✍ प्रभात कुमार सिंह 168

23. **A literateic Dissuasion on Ambedkar's View on Social and Political Perspectives**
✍ Dr. Surya Kant Sharma 179

24. **The Relevance of the Ideas of Dr. B. R. Ambedkar in Modern India-A Study**
✍ Manoj Kumar & Varsha Tamta 186

25. **Dr. B.r. Ambedkar And Women Empowerment in India**
✍ Anamika Chauhan 193

26. **Relevance of Dr. Babasaheb Ambedkar In Economics**
✍ Kanika Rawat 197

27. **Dr. Ambedkar's Vision of Indian Constitution**
✍ Dr. Aparna Sharma 204

28. **Ambedkar : A Study**
✍ Mahnaz Fatma 209

29. **Role of Ambedkar in Women Rights of India**
✍ Dr. Neetu Gupta 217

30. **Dr. Ambedkar's Contribution Towards Woman's Rights in India**
✍ Shivani 220

31. **Untouchability A Thesis By Ambedkar**
✍ Mrs. Priyanka Agarwal 224

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt-Haridwar, Uttarakhand

273

29

Role of Ambedkar in Women Rights of India

Dr. Neetu Gupta
Assistant Professor
Dept. of Home-Science
Chaman Lal Mahavidhalaya Landhaura

The article proposes and intends to recounts the rights and emancipation of women in the view of Ambedkar. Ambedkar is one of the greatest personality of 20th Centuary India. His life was great saga of suffering, sacrifice and struggle. His birth as an untouchable gave him a bitter taste of caste tyranny. He was a great intellectual of women and their rights. Being a pioneer of social justice, he always functioned for the women empowerment. That's why he started work for liberation of women and their rights.

Key Words- Ambedkar, women rights, social justice, india.

"It is the education which is the right weapon to cut the social slavery and it is the education which will enlighten the down trodden masses to come up and gain social status, economic betterment and political freedom."Dr.B.R.Ambedkar

There were many leaders fought for the womens rights in India.Most of them were failed in their action. But Dr. Baba Sahab Ambedkarwas the only person who changed the effort via law. Women are the victim of this evil caste system. They have been carried caste from one generation to another generation. While drafting the constitution of India, Dr.B.R. Ambedkar was the prime mover of the welfare of the women.

Objectives and Materials:- The present paper showed Dr. Ambedkar's view on women rights and problems in India and relevancy of his work in present political and social scenario of India. Secondary data have been collected from internet, journals etc.

Constitutional Rights and women:- In India constitution, there are few articles exist that help the women of Indian society to improve their position.

For example Article 14-All are equal in the eye of law and equally

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

274

21वीं सदी में महिला सुरक्षा

समस्या एवं चुनौतियाँ

डॉ. नीशू कुमार

डॉ. नीतू गुप्ता

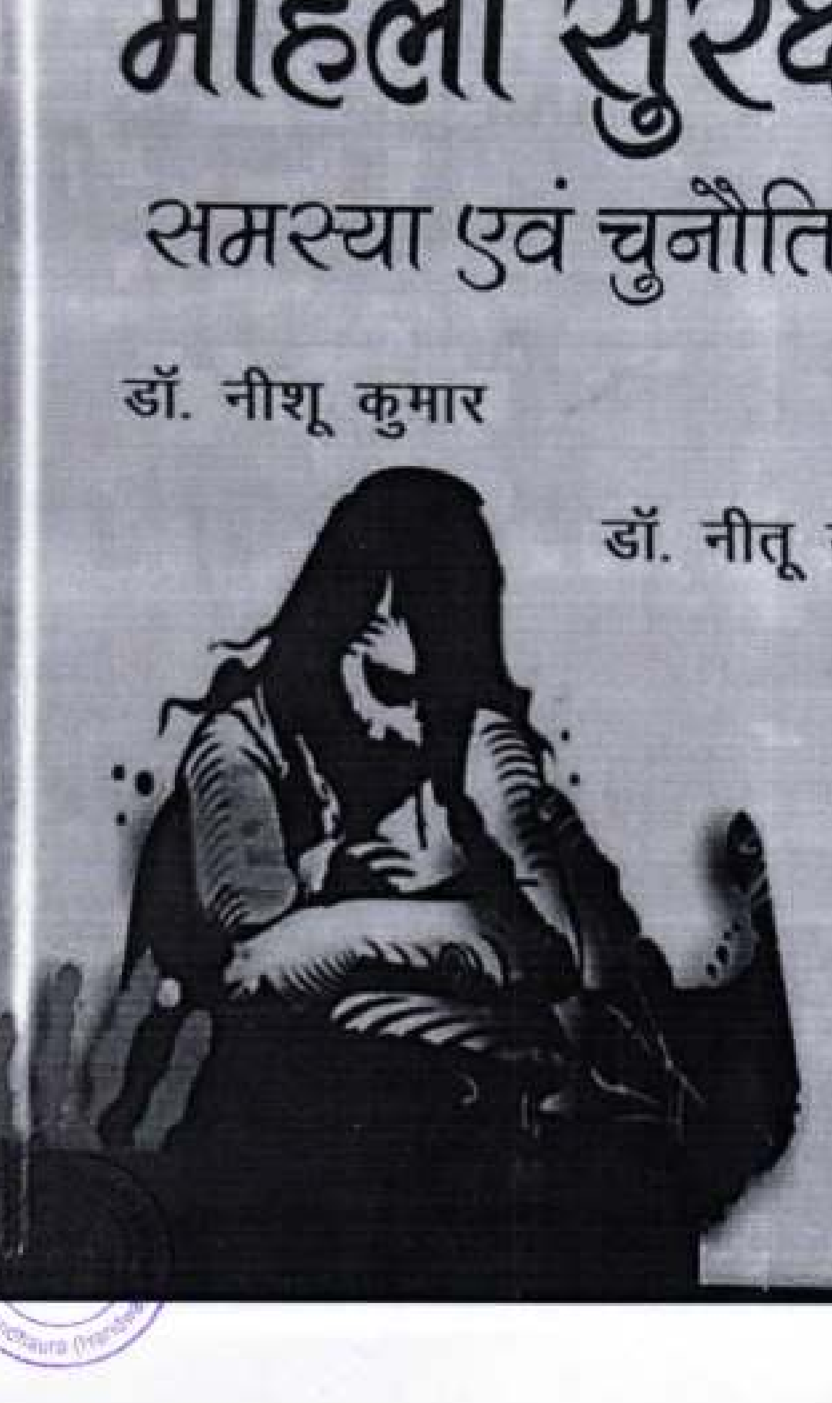

Prin.
Chaman Lal Mahavidhyalaya,
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

(275)

© डॉ. नीशू कुमार
डॉ. नीतू गुप्ता

प्रथम प्रकाशन–2018

सर्वाधिकार लेखक तथा प्रकाशक के अधीन
सुरक्षित हैं।

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशन का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

प्रकाशक

AARTI PRAKASHAN

4561/16 Ansari Road Daryaganj,
New Delhi-110002
Mob: 9811068537, 9958384215
email : surendrapublication@gmail.com

ISBN : 978-93-82185-27-7

मुद्रक

ग्लोबल प्रिंटिंग सर्विसेज,

दिल्ली–110092

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

276

अनुक्रम

1	21वीं शताब्दी में भारतीय महिला सुरक्षा से सम्बन्धित कानूनी प्रावधान : एक अवलोकन	1
2	मुस्लिम परिवारों में स्त्री शिक्षा एवं अधिकार एक अध्ययन	15
3	महिलाओं के उत्थान की बुनियादः सामाजिक जागरूकता और संवेदनशीलता	28
4	शिक्षा और महिला सशक्तिकरणः एक समालोचनात्मक अध्ययन	33
5	वैश्वीकरण के युग में भारतीय महिलाऐं	45
6	"स्त्री हिंसाः, धार्मिक, राजनैतिक एवं साहित्यिक संदर्भ"	53
7	महिलाओं की स्थिति का अध्ययन	66
8	"कानून–व्यवस्था के संदर्भ में महानगरीय स्तर पर उभरती हुई समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में पुलिस प्रशासन की भूमिका".	89
9	महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण में मीडिया की भूमिका	97
10	भारत में नारीवाद	102
11	भारत में महिलाओं के प्रति बढ़ते यौन अपराध एवं जन समुदाय की भूमिका	110

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

277

2

मुस्लिम परिवारों में स्त्री शिक्षा एवं अधिकार एक अध्ययन

डॉ० नीतू गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर
गृह विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा,
हरिद्वार, उत्तराखण्ड

विश्व में किसी भी समाज में सभी व्यक्तियों को समान स्थिति व पद प्राप्त नही होता अर्थात् सभी समाजों की जनसंख्या अनेक सामाजिक समूहों में विभक्त होती है। समाज के अन्तर्गत विभिन्न समूहों के कुछ स्तरों में विभाजित हो जाने की प्रक्रिया ही सामाजिक स्तरीकरण है। समाज की मूल इकाईयां स्त्री एवं पुरुष हैं। समाज में दो समाज स्थापित हैं एक पुरुष समाज एवं एक स्त्री समाज। समाज में हमेशा से ही पुरूष समाज का वर्चस्व रहा है। आदिम समाज हो अथवा आधुनिक यह भली–भांति ज्ञात होता है कि समाज में पुरूषों को ही स्त्री से अधिक महत्व दिया जाता है। परन्तु वर्तमान समाज में आदिम समाजों की तुलना में स्त्रियों की स्थिति फिर भी सुधारात्मक ज्ञात होती है। वर्तमान समाज में स्त्रियों को भी पुरूषों के समान ही महत्व एवं अधिकार प्राप्त हैं। सभी क्षेत्रों में स्त्रियों को भी पुरूषों के समान पदों की प्राप्ति हो रही है। स्त्रियों को भी पुरूषों के समान ही शिक्षा, उच्च शिक्षा, सरकारी पद, राजनीति में, डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर आदि हर एक क्षेत्र में स्त्रियों को पुरूषों के समान ही सभी अधिकारों की प्राप्ति हो रही है परन्तु यहां यह प्रश्न

IQAC Coordinator, Chaman Lal Mahavidyalaya
Chaman Lal Mahavidyalaya,
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

278

STATUS OF UPCOMING TRENDS IN BIODIVERSITY CONSERVATION

Editor

Dr. Richa Chauhan

I.Q.A.C.
Coordinator

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

279

The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the author/editor. The publisher bears no responsibility for them whatsoever.

ISBN : 978-93-86541-78-9

Published by:
Educational Book Service
N3/25 D.K. Road, Mohan Garden,
Uttam Nagar New Delhi-110059
Contact: +91-9968277749
E-mail: ebs.2012@yahoo.in

Status of Upcoming Trends in Biodiversity

Price : 700/-
© Reserve
First Edition : 2019

Printed in India

Published by R. D. Pandey for '**Educational Book Service**', New Delhi.
Layout by Satyam Printographics, New Delhi and Printed at *Vishal Kaushik Printer*, Shahdra, Delhi.

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

280

CONTENTS

1. **Modern Systems of Classification and Characterization of Diversified Crude Drugs** 1
   Vipin Kumar Sharma

2. **Assessment of Pollution by Physicochemical Water Parametersof Ram Ganga River at Moradabad, India** 12
   Animesh Agarwal, Nitin Kumar Agrawal

3. **Ground Water Pollution by Arsenic** 19
   Akbare Azam

4. **Removal of Methylene Blue Dye from Aqueous Solution Using Leaves Powdered as Sorbent** 26
   Amita Sharma

5. **Environment and Wordsworth's Poetry** 30
   Dr Deepa Agarwal

6. **Honeybee: A Good Pollinator of Important Plants** 37
   Deepesh Saini, Shivalika Sharma And P.C. Joshi

7. **Operations Strategy in a Global Environment** 42
   Dr. Naveen Kumar, Dr. Vikas Kumar

8. **Physico-chemical Studies of Tannery Waste and Sewage Sludge To Estimate Toxic Level And Organic Content In Amended Soil** 52
   Neeraj Kumar[1], Radhey Shyam[2] And Surekha Kannaujia[3]

9. **Human Health issues Due to Smoke From Wood fire** 65
   Dr. Neetu Gupta

10. **Necessity for Biodiversity Conservation** 67
    Dr. Swati Vats

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya,
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

9

HUMAN HEALTH ISSUES DUE TO SMOKE FROM WOOD FIRE

Dr. Neetu Gupta
Asst. Prof.
C.L.M. Landhaura

Smoke may smell good, but its not good for us. Smoke forms when wood or other organic matter burns. The smoke from wood burning is made up of our complex mixture of gases and fine particles. These microscopic particles can get into our eyes and respiratory system, where they may cause burning eyes, running nose and illness, such as bronchitis.

- **What is wood smoke?**

Wood smoke is a complex mix of chemicals and particles including: fine and coarse particles, carbon monoxide, sulphur dioxide, nitrogen dioxide and volatile organic compounds.

- **Origin of wood smoke?**

Residential wood smoke is produced from wood heaters, open fire places and backyard burning. Wood fired pizza ovens and chimneys can also be a source of smoke. Wood smoke affect our health if our indoor wood burning appliances are poorly maintained.

- **Who is at risk?**

Some members of the community are more sensitive to wood smoke and are more likely to develop health problems or experience worsening of existing health problems. Research indicates that obesity or diabetes may also increase risk. New or expectant mothers also want to take precautions to the health of their babies because some studies indicate they may be at increased risk. If we have heart or lung disease such as congestive heart failure, angina, chronic obstructive pulmonary disease, emphysema or asthma, you may experience health effects earlier and at lower smoke levels than healthy people.

Older adults are more likely to be affected by smoke, possibly because they are more likely to have chronic heart and lung diseases than younger people.

Children also more susceptible to smoke for several reasons: Their respiratory systems are still developing. They breathe more air (and air pollution) per pound of body weight than adults, and they are more likely to be active outdoors.

- **Its affect on health?**

Wood smoke contain several toxic harmful air pollutants including oxides, benzene, formaldehyde, acrolein and polycyclic aromatic hydrocarbons. Wood smoke affects the quality of both indoor and outdoor air. It is made up of coarse and fine particles. Coarse particles can include soot, dust and pollen. When breathed in these particles settle in the lungs and narrow airways. The majority of particles in wood smoke are fine particles, which are linked to the most harmful health effects. Fine and coarse particles both contribute to several health problems.

- **Short term effects?**

Irritation of eyes, throat and nose, coughing, difficulty in breathing, aggravated asthma.

- **Long term effects?**

Decreased lung function, development of chronic bronchitis, cardiovascular effects.

- **Precautions?**

There are some steps to decrease the health effects of wood smoke:

1) Choosing wood - Only use well seasoned hard woods other than using stained, treated or painted wood. Then chop your wood into smaller pieces. Store wood loosely stacked and covered in a well aired place.
2) Building a fire - Use plenty of kindling and paper to establish a good fire quickly. Use smaller logs for slower burning. Stack your fire so there is 2cm space between each log, this allow air to get into the hot area of the fire.
3) Wood heater and fire places - There is enough air circulation in wood heaters by adjusting the air intake or flow. Check your wood heaters and chimneys regularly. If you have an old wood heater, consider buying a low emission wood heater. Switch to gas or

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

282

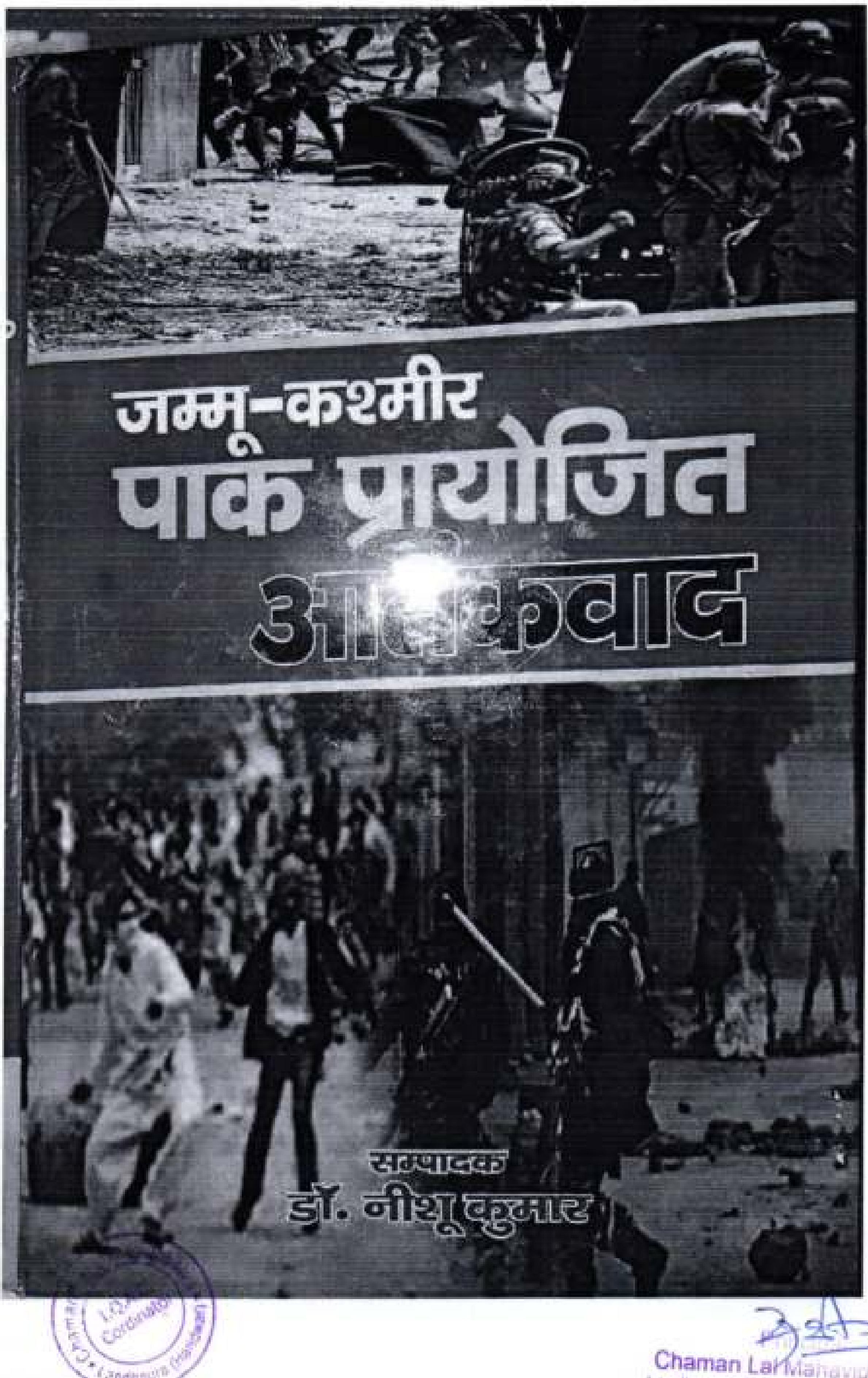

I.Q.A.C. Coordinator
Landhaura (Haridwar)

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों [illegible]
की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व [illegible]

जम्मू-कश्मीर : पाक प्रायोजित आतंकवाद

ISBN : 978-93-85981-90-6

प्रथम संस्करण : 2018

© सुरक्षित

प्रकाशक
सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-110059 मो. 09899665801
ई-मेल : satyampub_2006@yahoo.com

भारत में प्रकाशित

आर.डी. पाण्डेय द्वारा 'सत्यम् पब्लिशिंग सोल्यूशन', नई दिल्ली के लिए प्रका[illegible]
कॉन्वेक्स पब्लिशिंग सोल्यूशन, नई दिल्ली द्वारा टाईप सेटिंग तथा विशाल [illegible]
प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

I.Q.A.C. Coordinator
Landhaura (Haridwar)

Chaman La[illegible]
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

284

16. जम्मू कश्मीर में विस्थापितों की समस्याऐं
डॉ. कवलजीत कौर .... [illegible]

17. जम्मू–कश्मीर में लोकतन्त्र की स्थिति और राजनीतिक दल
हेमन्त कुमार रिछारिया 170

18. भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध एवं कश्मीर विवाद :
एक विश्लेषणात्मक अध्ययन / अनुपमा तोमर 187

19. भारत–पाक रिश्ते और कश्मीर का भविष्य : एक विश्लेषण
सचिन कुमार 197

20. जम्मू–कश्मीर में अनुच्छेद 35की भूमिका
डॉ. किशोर कुमार, डॉ. दीपक कुमार 203

21. भारतीय संविधान की धारा 370 एवं 35ए–एक समग्र विश्लेषण
डॉ. आर0सी0 सिंह 215

22. कश्मीर समस्या साजिश व जिद का परिणाम
जय भगवान शर्मा 223

23. भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध और जम्मू एवं कश्मीर में पाक द्वारा
जम्मू–कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंकवाद की वर्तमान स्थिति एवं दिशा
डॉ. सौरभ नागर, डॉ. दलीप सिंह 234

24. प्रायोजित आतंकवाद की समस्या : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
दीपक तोमर 244

25. आतंकवाद का जम्मू–कश्मीर पर प्रभाव
डॉ. वन्दना सिंह 251

26. जम्मू और कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंकवाद की समस्या
दशा एवं दिशा / अकोश बिष्ट 257

27. जम्मू कश्मीर आतंकवादी समस्या का वर्तमान भारत पर प्रभाव
डॉ. पवन कुमार 260

28. जम्मू कश्मीर आतंकवादी समस्या का वर्तमान में भारत पर प्रभाव
विशाल कुमार लोधी, विक्रान्त गिर 268

29. जम्मू एवं कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंकवाद की समस्या :
दशा एवं दिशा / डॉ. मीरा चौरसिया 274

30. अनुच्छेद 35ए : संविधान की आत्मा का हनन
डॉ. नगेन्द्र पाल 281

31. जम्मू–कश्मीर मुद्दा : ऐतिहासिक भूल या राजनीतिक
अन्नु स्वामी, प्रोफेसर आराधना 286

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

285

जम्मू एवं कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंक
की समस्या : दशा एवं दिशा"

डॉ. मीरा
सहायक आचार्या, हिंदी वि
चमन लाल महाविद्यालय लण्ढौरा, हरि
उत्तराख

जम्मू–कश्मीर की भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति-

भारत के सबसे उत्तर में स्थित जम्मू–कश्मीर भारत का महत्त्व राज्य है। यहाँ के निवासियों में अधिकांश जनता मुस्लिम है किन्तु रहन–सहन, रीति रिवाज एवं संस्कृति पर हिन्दू धर्म की छाप मात्रा में विद्यमान है। कश्मीर के सीमान्त क्षेत्र पाकिस्तान, अफगानिस्तान सिक्यांग तथा तिब्बत से मिले हुये है। कश्मीर अपनी खूबसूरती के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है यहाँ चारों ओर बर्फ की सफेद चादर, तथा चीड़ के घने जंगल पहाड़ियों से गिरते बर्फ के टुकड़े, झीलें और तालाब यहाँ आने वाले प्रत्येक शैलानी को यह अहसास कराते है कि धरती पर अलग स्वर्ग कहीं है तो वह कश्मीर में है। इस राज्य का क्षेत्रफल पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र को शामिल करने पर 222236 वर्ग कि0मी0 है जिसमें जम्मू, कश्मीर, लद्दाख, गिलगिट एवं बाल्टिस्तान क्षेत्र है। गिलगिट एवं बाल्टिस्तान पर पाकिस्तान का कब्जा है अक्साई चिन पर चीन कब्जा किये हुये है। यहाँ की प्रमुख नदियाँ सिन्धु, झेलम, और चिनाव हैं। कश्मीर का अधिकांश क्षेत्र पर्वतीय है दक्षिण–पश्चिम में पंजाब के मैदानों का कम चला आया है। उत्तर में काराकोरम तथा दक्षिण मे हिमालय जास्कर श्रेणियाँ हैं, हिमालय के दक्षिणी ढलान की ओर विश्व प्रसिद्ध कश्मीर की घाटी है जो पीर पंजाल की पर्वतश्रेणी से घिरी हुई है।

जम्मू–कश्मीर की अर्थव्यवस्था मक्का, जौ, जई, गेहूँ आदि

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

286

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता

संपादक
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

सह संपादक
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Coordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

287

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

के विचारों की प्रासंगिकता

संपादक
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
चमनलाल महाविद्यालय लन्ढौरा (हरिद्वार)

सह संपादक
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
चमनलाल महाविद्यालय लन्ढौरा (हरिद्वार)

प्रगतिशील प्रकाशन

नई दिल्ली (भारत)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-86246-84-4

प्रकाशक:
प्रगतिशील प्रकाशन
एन-3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 (भारत)
दूरभाष: 09899665801
ई-मेल : pragatisheelprakashan@yahoo.in

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर
के विचारों की प्रासंगिकता

मूल्य : ₹ 700.00
प्रथम संस्करण : 2018
© सुरक्षित

भारत में प्रकाशित-

'प्रगतिशील प्रकाशन', नई दिल्ली के लिए प्रकाशित। सत्यम् प्रिंटोग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, द्वारा मुद्रित।

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

289

विषय–सूची

आभार (iii)

भूमिका (iv)

1. 21वीं सदी में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता व प्रभाव
   डॉ. धमेन्द्र कुमार 1

2. हिंदू राष्ट्रवाद, संविधान और डॉ. अंबेडकर
   डॉ सुशील उपाध्याय 10

3. अस्मिताओं का सहअस्तित्व
   डॉ. रूचि सिंह 17

4. भारत में दलित सामाजिक आज़ादी और समावेशन : समय की मांग
   डॉ. तीर्थ प्रकाश 23

5. महिलाओं के विकास में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का चिंतन
   डॉ. नीशु कुमार 28

6. महिला सशक्तिकरण में अम्बेडकर की भूमिका
   Km. Hemlata verma 40

7. बाबा साहेब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के सामाजिक न्याय की झलक
   गुंजन जैन 45

8. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के आर्थिक विचार-एक समीक्षा
   डॉ. किरण शर्मा 49

I.Q.A.C. Coordinator, Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

290

9. भारत में दलित उत्थान के लिए किया गया प्रयास अम्बेडकर के विशेष संदर्भ में
✍ डॉ. राखी सिंह 55

10. आधुनिक युग का मनु: डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर
✍ डॉ. प्रभात कुमार सिंह/ दीपाक्षी शर्मा 61

11. डॉ. भीमराव अंबेडकर के आर्थिक विचारों की सार्थकता
✍ विमल कान्त तिवारी 73

12. डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नारीवादी चिंतन
✍ डॉ. मीरा चौरसिया 82

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Landhaura

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

291

12

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नारीवादी चिंतन

डॉ. मीरा चौरसिया
सहायक प्रवक्ता हिन्दी विभाग
चमनलाल महाविद्यालय लण्ढौरा

नारी समस्या और अस्मिता का प्रश्न भारत सहित दुनियाभर में चिंता का विषय रहा है, जो वर्तमान में भी किसी न किसी रुप में हमारे सामने है। 20वीं सदी का शुरुआती दौर ऐसा दौर था जब एक तरफ पश्चिम में महिला मताधिकार को लेकर आंदोलन जोरों पर था तथा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनो मे महिलाओं के प्रति समाज में व्याप्त रुढ़िवादी संकीर्णता और शोषण समान्तर चल रहे थे। हालांकि इन कुरीतियों और संकीर्णताओं को समाप्त करने के लिये समाज सुधारक आंदोलन भी हुये पर ये महिला शोषण की तह तक नहीं जा पाये। डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी संभवतः पहले ऐसे भारतीय समाजिक चिंतक हुये, जिन्होंने महिलाओं की नारी समस्या को जेंडर दृष्टिकोण से समझने की कोशिश की। डॉ. अम्बेडकर जी के नारीवादी चिंतन के केन्द्र में भारतीय समाज की सभी महिलाएं थी यह अध्ययन अंबेडकर के नारी वादी चिंतन और महिलाओं की समानता, स्वतंत्रता के लिये किये गये प्रयासों को उद्धत करता है।

भारतीय संदर्भ में जब भी सामाजिक सांस्कृतिक एंव राजनीतिक असमानताओं और उसमें सुधारों के मुद्दे वा चिंतन हो रहा हो तो डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों को शामिल किये बिना बात पूरी नहीं हो सकती, उनका पूरा जीवन भारतीय समाज की रुढ़िवाद और अंधविश्वास पर आधारित संकीर्णताओं और विकृतियों को दूर करने पर ही केन्द्रित रहा। भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन मे एक तरफ जहां महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह से अनुप्रेरित अपने अहिंसक जन–आंदोलन के द्वारा देश को ब्रिटिश साम्राज्यवाद की दासता से मुक्त कराया तो वहीं दूसरी तरफ डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने सामाजिक परिवर्तन की लहर के बल बूते हजारों वर्षों से उत्पीड़ित दलित एवं हाशिये के लोगों को स्वाधीनता एवं स्वाभिमान से जोड़ने का महान कार्य किया, " डॉ. अम्बेडकर

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar) • I.Q.A.C. Cordinator
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

292

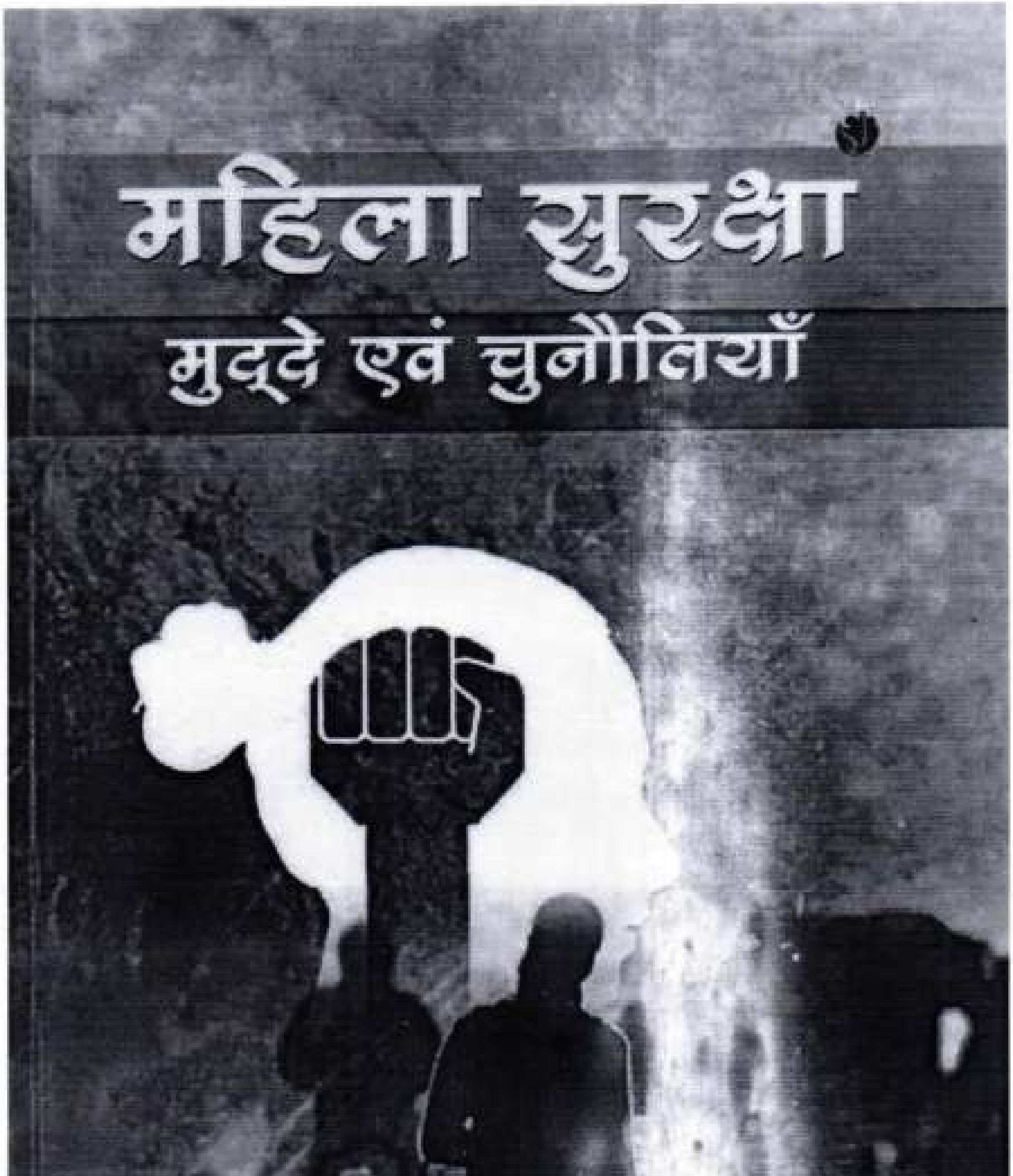

I.Q.A.C Coordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya,
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

महिला सुरक्षा
मुद्दे एवं नीतियां

संपादक
डॉ. अलका तोमर
एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विभाग
बी. एस.एम पी.जी. कॉलेज रुड़की
एवं
अनुज कुमार भडाना

नालंदा प्रकाशन
दिल्ली

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

294

ISBN : 978-81-940315-3-6

© सम्पादक

प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

मोबाइल : +9315194807

ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर सयोंजक

दीपिका शर्मा दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज दिल्ली-32

Mahila Suraksha : ***Mudde Evam Chunoutinya***

by Dr. Alka Tomar

Anuj Kumar Bhadana

Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

I.Q.A.C. Coordinator, Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhaura

(295)

अनुक्रमणिका

1. 21वीं शताब्दी की भारतीय महिला, एक अध्ययन: सामाजिक, एवं आर्थिक सन्दर्भ में 1

डॉ० नीशू कुमार

अनुज कुमार भड़ाना

2. भारत में जातिगत राजनीति के मध्य साम्प्रदायिक अन्तर्सम्बन्ध और महिलाएँ 7

डॉ० विक्रम सिंह

3. महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा : एक आवश्यकता 19

डॉ० किरन शर्मा

4. 21वीं सदी में महिलाओं के प्रतिवाद यौन अपराध व समस्यायें 22

डॉ० मीरा चौरसिया

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

4

''21वीं सदी में महिलाओं के प्रतिवाद यौन अपराध व समस्यायें''

डॉ० मीरा चौरसिया*

हमारा समाज पितृसत्तात्मक समाज है, लेकिन पुरुष और स्त्री दोनों ही सामाजिक व्यवस्था के महत्वपूर्ण स्तंभ होते है, नारी और पुरुष के पारस्परिक सहयोग तथा संयोजन से परिवार का निर्माण होता है, और आगे चलकर यही परिवार अनेक समुदायों का स्वरूप ग्रहण कर लेते हैं।

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः''

प्राचीन काल में नारी को देवी के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त थी, किन्तु मध्य में उसकी स्थिति में ह्रास हुआ और नारी के अधिकारों का हनन होने लगा, और वह देवी के पद से हटकर दासी बन बैठी, पुरुष के संरक्षण एवं कृपा के बिना वह कोई भी कार्य नहीं कर सकती थी, आधुनिक काल आते-आते उसकी दशा बहुत ही खराब होती चली गयी, यह पितृसत्तात्मक समाज नारी को केवल भोग, स्वार्थ एवं वासना की पूर्ति हेतु मात्रा वस्तु के रूप में स्वीकार करता है।

इसमें कोई शक नहीं कि स्त्री और उसकी चेतना सदियों से हजारों साल की लंबी सभ्यता एवं तमाम वैज्ञानिक आविष्कारों के बावजूद आज भी दमित है, किन्तु अपनी दमित स्थिति से व अपनी गुमनामी से वह इतनी अनभिज्ञ है कि प्रतिक्रिया को ही मुक्ति का द्योतक मान बैठी है, वास्तविक विरोधाभास तो यह हैं कि शोषणकर्ता के साथ चलते हुए शोषक व्यवस्था के प्रति स्त्री के मन में एक अद्भुत समर्पण का भाव है।

पितृसत्तात्मकता यह विचार है, सिद्धान्त है, आदर्श है जो अपने से या अपने समूह से भिन्न प्रत्येक व्यक्ति पर नियंत्रण चाहती है और यही नियम उसने स्त्री पर भी लागू कर रखा है, नियंत्रण की अनेकानेक अवधारणाओं जैसे-रीति-रिवाज, धर्म, सामाजिक-संस्कार, कानून द्वारा स्त्री पर नियंत्रण करके उसको दलित स्थिति में रहने के लिए विवश किया गया, इन सारी अवधारणाओं ने स्त्री को इतना अनुकूलित कर दिया है कि अपनी दलित स्थिति को भिन्न वह और किसी स्थिति की कल्पना भी नहीं कर सकती।

पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को हमेशा एक वस्तु के रूप देखा जाता है, किन्तु पितृसत्ता पुरुष का भी दमन करती है और यह भी सच है कि वर्गीय संघर्ष के नाम पर स्त्री के मुद्दों की उपेक्षा

* सहायक आचार्या हिन्दी विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

भारतीय संस्कृति में नारी

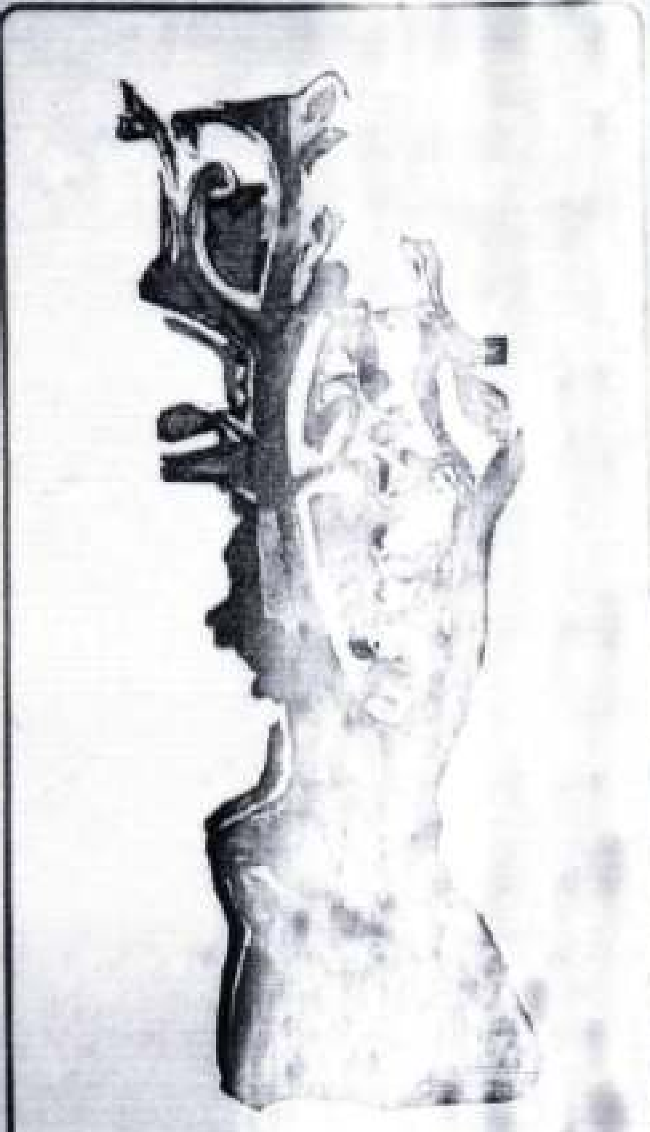

डॉ.

Chaman Lal Mahavidyalay
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

© लेखक

ISBN : 978-93-89809-32-9

प्रकाशक
साहित्य संचय
बी-1050, गली नं. 14, पहला पुश्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस
ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस
राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2020
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : 200/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 7/- (अन्य देश)

BHARTIYA SANSKRITI MEIN NAARI
Edited by Dr. Navjyot Bh...

I.Q.A.C.
Cordinator

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

291

अनुक्रम

सम्पादकीय 3

1. वेदों में आयुर्वेद : एक विवेचन 7
   डॉ. नवज्योत भनोत
2. संस्कृति के संदर्भ में 'काशी का अस्सी' उपन्यास 16
   नाजिया बीबी
3. भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति : अतीत से वर्तमान तक 19
   डॉ. मीरा चौरसिया
4. भारतीय संस्कृति में नारी की भूमिका 24
   जनमेजय सिंह गुलेरिया
5. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री समस्याएँ 28
   ज्योति कुमारी
   श्वेता कुमारी
6. संस्कृत साहित्य में नारी 35
   डॉ. सरिता शुक्ला
7. भारतीय संस्कृति और लोकगीतों में नारी-चित्रण (राजस्थान के विशेष संदर्भ में) 42
   लक्ष्मी देवी शर्मा
8. वैदिक कालीन समाज में महिलाओं का जीवन : एक अध्ययन 49
   डॉ. करिश्मा कांबे
9. वैदिक एवं हिंदी साहित्य में नारी 56
   डॉ. परमिंद्र कौर
10. भारतीय साहित्य में नारी का स्थान 60
    अनिता देवी
11. भारतीय संस्कृति पर हिंदी चित्रपट संगीत का प्रभाव 66
    कोमलप्रीत कौर
12. वैदिक काल में नारी का महत्व 73
    रीमा

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति : अतीत से वर्तमान तक

डॉ. मीरा चौरसिया
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग
चमनलाल महाविद्यालय लंढौरा
हरिद्वार उत्तराखंड
Meeranti@gmail.com

"स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्ताः"
"न गृहं गृहमित्याहुः गृहिणी गृहमुच्यते"

स्त्रियाँ ही घर की लक्ष्मी होती हैं अर्थात् घर का सौंदर्य व सौभाग्य सब वे ही होती हैं, जो व्यक्ति उन्नति एवं सौभाग्य की कामना करते हैं, उन सभी को स्त्रियों का सम्मान करना चाहिए, जो इनका पालन करता है उसकी स्त्री लक्ष्मी का रूप धारण कर लेती है, जिन घरों में स्त्रियाँ सम्मानित होती हैं, उनके घर देवता रमण करते हैं किंतु जिन घरों में वे अपमानित होती हैं, उनमें समस्त क्रियायें निष्फल हो जाती हैं, स्त्रियों द्वारा शापित घर नष्ट हो जाते हैं,

नारी को आदरणीय मानना भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषताओं में से एक है, वैश्विक धरातल पर महिला को समाज, संस्कृति एवं सभ्यता का मेरुदंड माना गया है, विश्व की सभी संस्कृतियों में महिलाओं के प्रति विशेष उदार और उन्नत विचार रखे गए हैं, मानव समाज में महिलाओं का इतिहास उतना ही पुराना है जितना एक पुरुष का होना है, पुरुष के साथ महिला ने मानव सभ्यता के उत्थान-पतन एवं सामाजिक संगठन के विकास में भाग लिया है, पारिवारिक संगठन, जो कि मानव समाज की एक अद्भुत एवं सार्वभौमिक इकाई है। अस्तित्व की कल्पना महिला के अभाव में नहीं करी जा सकती है।

महिलाओं का उत्पीड़न एवं शोषण उतना ही प्राचीन है जितना कि पारिवारिक जीवन का इतिहास, लेकिन सामाजिक विधान के परिप्रेक्ष्य में भारतीय महिलाएँ अन्य कई देशों की महिलाओं से कहीं आगे हैं, किंतु महिलाओं को अधिकार प्रदान करने

IQAC Coordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

301

Chaman Lal Mahavidyalaya • I.Q.A.C. Coordinator • Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

302

भारत में किसानों की आत्महत्या : दशा और दिशा

संपादक

डॉ. नीशू कुमार
सहायक आचार्य/प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग
चमनलाल महाविद्यालय, लण्ढौरा
हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

डॉ. विमल कान्त
सहायक आचार्य/प्राध्यापक
[illegible] विभाग
चमनलाल महाविद्यालय, लण्ढौरा
हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

नालंदा प्रकाशन
दिल्ली

Chaman Lal Mahavidhyalaya • I.Q.A.C. Cordinator • Landhaura (Haridwar)

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

303

ISBN : 978-81-949514-6-9

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
+9968082809, 9313194007
nalandaaprakashan@gmail.com
प्रथम संस्करण - 2021
अक्षर संयोजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94
मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना ... भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्ड ... इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के ... पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित, प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Bharat Me Kisano Ki Aatmhatya : Dasha Aur Disha

by Dr. Nisha ...
Dr. Vinay ...

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Cordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

304

अनुक्रमणिका

भूमिका

कृषक आत्महत्या के कारण एवं सुझाव सहित [illegible] 1

डॉ. [illegible] कुमार

भारत में किसान आत्महत्या: समस्या एवं समाधान 8

डॉ. आनन्द [illegible] त्रिपाठी

[illegible] में किसान, कैसे कह दूं कि मेरा भारत [illegible] 12

[illegible]

हिन्दी साहित्य में किसान: समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण 19

[illegible]

बाजारवाद के समय में किसान आत्महत्या: '[illegible]' के सन्दर्भ में 26

[illegible]

भारतीय किसान और कर्जमाफी : एक समीक्षात्मक अध्ययन 30

[illegible]

[illegible]

भारत को किसान रहित करने की साजिश 34

[illegible]

[illegible]

किसानों की आत्महत्या का कारण कौन? 40

डॉ. [illegible]

डॉ. मनोज कुमार

भारत एक कृषि आधारित उद्योग प्रधान देश था : एक [illegible] अध्ययन 46

डॉ. [illegible]

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में किसानों की भूमिका 53

डॉ. [illegible]

भारत में किसान आन्दोलन: एक दृष्टि 63

डॉ. [illegible]

Chaman Lal [illegible] I.Q.A.C. Coordinator Landhaura [illegible]

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

305

12. ''कर्जदार किसानों की आत्महत्या -एक अध्ययन'' 70

डॉ. किरन शर्मा

13. किसान आत्महत्या : एक चुनौती 74

मनीष कुमार

14. प्रेमचंद, गोदान और भारतीय किसान 78

डॉ. मीरा चौरसिया

स्वाति त्यागी

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

14.

प्रेमचंद, गोदान और भारतीय किसान

डॉ. मीरा चौरसिया*

स्वाति त्यागी**

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारतीय जीवन का यथार्थ गांवों में ही है। भारतवर्ष गांवों में बसा हुआ है। यदि कोई भारत की मूल संस्कृति और आत्मा का दर्शन करना चाहता है तो वह गांवों से ही प्राप्त कर सकता है। ''भारतीय जीवन और सभ्यता का मूल स्रोत कृषि होता है और उसका विस्तार ग्राम जीवन में ही परिलक्षित होता है।''

प्रायः गांव में रहने वाले लोग कृषि से सम्बंध रखते हैं, जो कि ग्राम जीवन का एक मुख्य अंग है, कृषि करने वाले ग्रामीण कृषक कहलाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषक जीवन का यथार्थ रूप ग्राम जीवन में देखने को मिलता है।

प्रेमचंद किसानों के जीवन के अलग-अलग पहलुओं पर उपन्यास लिख चुके हैं, लेकिन 'गोदान' लिखकर उन्होंने किसानों की सम्पूर्ण समस्याओं को मानो उसमें समाहित कर दिया हो, डॉ. रामविलास शर्मा अपनी पुस्तक 'प्रेमचन्द और उनका युग' में लिखते हैं कि ''गोदान'' में किसानों के शोषण का रूप ही दूसरा है, यहां सीधे-सीधे राय साहब के कारिंदे होरी का घर लूटने नहीं पहुंचते, लेकिन उसका घर लुट जरूर जाता है, यहां अंग्रेजी राज के कचहरी कानून सीधे-सीधे उसकी जमीन छीनने नहीं पहुंचते लेकिन जमीन छिन जरूर जाती है, होरी के विरोधी

*सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, चमनलाल महाविद्यालय लंढौरा हरिद्वार उत्तराखण्ड।

**सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद उत्तरप्रदेश।

Chaman Lal Mahavidyalaya • Landhaura (Haridwar)
I.Q.A.C. Coordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

307

दलित पत्रकारिता
वर्तमान दशा और दिशा

संपादक

डॉ. राम भरोसे

संजय प्रकाशन

नई दिल्ली (भारत)

IQAC Coordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

(308)

संजय प्रकाशन
4378/4 बी-209, जे.एम.डी. हाउस
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 23245808, 41564415
मो. : 9313438740
E-mail : sanjayprakashan@yahoo.in

©

ISBN 978-81-946083-5-6

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : ₹ 750.00

शब्द संयोजन :
हर्ष कंप्यूटर्स
दिल्ली-110086

मुद्रक :
रोशन ऑफसेट प्रिंटर्स
दिल्ली-110053

I.Q.A.C. Cordinator
Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalay
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

309

अनुक्रम

सम्पादक की कलम से... 5

सवाल तो उठना ही था... 11

1. जातिभेद और असमानता के ख़िलाफ लड़ने का हथियार है आम्बेडकरी पत्रकारिता / *दामोदर मोरे* 19
2. सौ बरस की दलित पत्रकारिता / *डॉ. सुशील उपाध्याय* 26
3. सोशल मीडिया लेखन और इक्कीसवीं सदी का दलित वंचित समाज / *डॉ. कमानंद आर्य* 33
4. सोशल मीडिया का बहुजन समाज पर प्रभाव / *गोपाल* 44
5. निर्भीक संपादक डॉ. भीमराव अम्बेडकर और भारतीय पत्रकारिता / *डॉ. सालाप्पा लहू चव्हाण* 53
6. हिंदी पत्रकारिता का दलित साहित्य के विकास में योगदान / *डॉ. उमा मीना* 61
7. दलित साहित्य, पत्रकारिता की भाव भूमि / *डॉ. नीरज कर्ण सिंह तथा प्रो. अशोक त्यागी* 72
8. दलित चिंतन का समाजवाद और पत्रकारिता / *डॉ. नीरज कर्ण सिंह तथा प्रीति सिंह* 82
9. दलित और सोशल मीडिया / *डॉ. चन्द्र प्रकाश* 93
10. मीडिया और वर्तमान बाजारवादी संस्कृति में महिलाओं की स्थिति / *डॉ. मीरा चौरसिया* 102

I.Q.A.C. Cordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya • Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidya...
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

310

मीडिया और वर्तमान बाजारवादी संस्कृति में महिलाओं की स्थिति

डॉ. मीरा चौरसिया

आधुनिक समय में जनमाध्यमों में टेलीविजन एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरा हुआ है, टेलीविजन श्रव्य एवं दृश्य माध्यम होने के वजह से दर्शकों में ज्यादा विश्वसनीय है। प्रिन्ट पत्रकारिता में नेता लोग अपने कहे हुये कथनों से मुकर कर मीडियो पर ही उल्टे आरोप लगा देते है और कहते हैं मीडिया ने मेरे कों गलत ढंग से तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया है, लेकिन टेलीविजन पत्रकारिता में दृश्यों के साक्षात् प्रकटन से मुकरने पे उसकी स्वयं की स्थिति हास्यास्पद एवं अविश्वसनीय हो जाती है।

संचार के विभिन्न साधनों का विकास मानव सभ्यता के विकास के समान्तर चलता है, यह कहना गलत न होगा कि यह दोनों बातें एक दूसरे के समान हैं, संचार के अभाव में सभ्यता के वर्तमान विकसित स्वरूप की कल्पना भी नहीं करी जा सकती थी। सूचना के महत्त्व से मनुष्य समाज भली-भांति परिचित है और इन सूचनाओं का संप्रेषण ही जो निरन्तर नये विचार की ओर अग्रसर करता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि आधुनिक सभ्यता में सूचना से अधिक शक्तिशाली कोई भी हथियार नहीं हो सकता पुरानी व्यवस्थाओ को बदलने से लेकर नये-नये वैज्ञानिक अविष्कारों तक सभी प्रकार के परिवर्तनों में सूचनाओं की अहम भूमिका होती है। सूचनाओं के आदान प्रदान की इस प्रक्रिया को 'संचार' कहा जाता है,

1 जुलाई 1941 को कोलम्बिया ब्राडकास्टिंग सर्विस ने अपने न्यूयॉर्क टेलीविजन स्टेशन से प्रतिदिन 15 मिनट के समाचार बुलेटिन के प्रसारण के साथ टीवी पत्रकारिता में पदार्पण किया। आज हर व्यक्ति घर बैठे ही दुनिया के

Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar)
I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyelay.
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

311

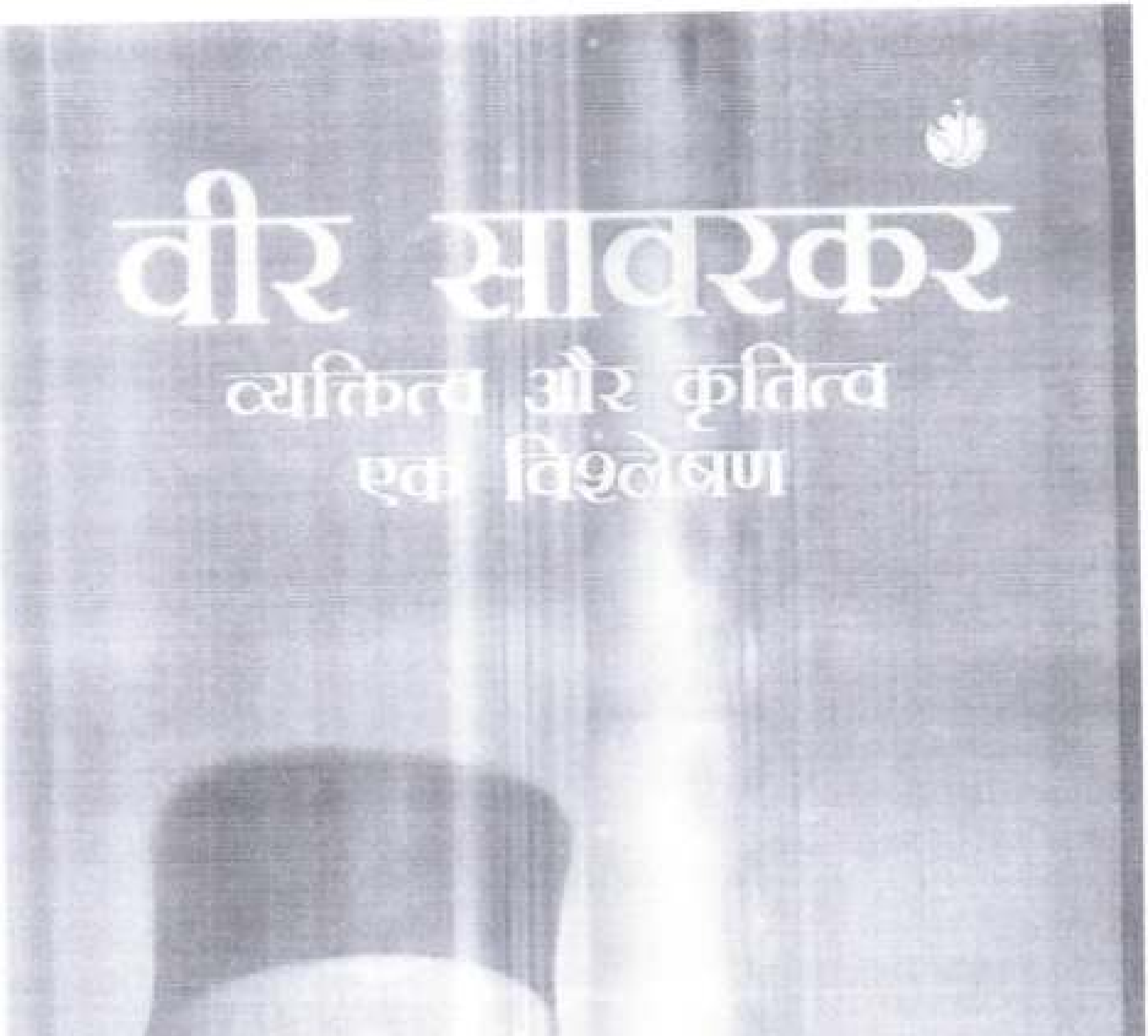

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura (Haridwar)
I.Q.A.C. Cordinator

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

312

वीर सा[illegible]कर

व्यक्तित्व और कृतित्व [illegible] एक विश्लेषण

संपाद[illegible]
डॉ. [illegible]
सहायक आचार्य [illegible]
राजनीति विज्ञान [illegible]
चमन लाल महावि[illegible] [illegible]रा
हरिद्वार, [illegible]

नालंदा प्र[illegible]
दिल्[illegible]

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C.
Cordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyala[illegible]
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

313

ISBN : 978-81-949514-1-4

© संपादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/199 [illegible], दिल्ली-110053
☎ : 9315194807, [illegible]
✉ nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण 2021

अक्षर संयोजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली 110094

मुद्रक
[illegible] इंटरप्राइजेज, दिल्ली 110032

[illegible] लेखक की लिखित अनुमति के [illegible] भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से [illegible] [illegible] [illegible] लेखक के अधीन हैं।

Veer Savarkar Viyaktitv aur Kratitv : Ek Vi[illegible]
By: Dr. Nisha Kumar

IQAC Chaman Lal Mahavidhyalaya • Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

314

अनुक्रमणिका

भूमिका [illegible]

1. वीर सावरकर का चिन्तन पृष्ठभूमि एवं [illegible] आधार : एक विश्लेषण 1
डॉ. मंजू कुमार
2. क्रान्तिकारी आन्दोलन में वीर सावरकर [illegible] 8
डॉ. [illegible]
3. सावरकर : एक राजनीतिक विमर्श स्वीकृति [illegible] 14
डॉ. तीर्थ प्रकाश
4. सावरकर का हिन्दुत्व चिंतन : व्यापक [illegible] का समावेश 20
डॉ. मनीष कुमार सिंह
5. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में वीर सावरकर [illegible] का मूल्यांकन 26
डॉ. प्रशान्त कुमार
डॉ. अजीत कुमार [illegible]
6. वीर सावरकर के व्यक्तित्व और कृतित्व का [illegible] मूल्यांकन 37
डॉ. फैज़ान अहमद
7. विनायक दामोदर सावरकर का हिन्दुत्व : [illegible] 45
डॉ. [illegible] तोमर
8. सावरकर का दर्शन : हिन्दुत्व और हिन्दू [illegible] 49
डॉ. नीरजा चौधरी
9. वीर सावरकर एवं उनके [illegible] 54
डॉ. शोभा [illegible]

Principal
Chaman Lal Mahavidhy[illegible]
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

315

10. वीर सावरकर और महात्मा गांधी : एक [illegible] अध्ययन — 58
डॉ. [illegible]पाल
डॉ. अनुराग शर्मा

11. विनायक दामोदर सावरकर की राष्ट्रवाद [illegible]ा : एक विश्लेषण — 64
डॉ. विक्रम सिंह
डॉ. मीनू देवी

12. विनायक दामोदर सावरकर : एक आदर्श [illegible] — 70
डॉ. अनुपम त्यागी

13. हिन्दुत्व के पुरोधा एवं स्वतंत्रता सेनानी [illegible] — 75
विशाल कुमार [illegible]

14. राष्ट्रीय आंदोलन में वीर सावरकर का योगदान — 82
नरेन्द्र कुमार

15. वीर सावरकर : एक महान[illegible] क्रांतिकारी — 88
आशीष [illegible]

16. सावरकर और हिन्दुत्व, हिन्दू और राष्ट्र[illegible] — 92
डॉ. प्रकाश चन्द

17. भारतीय बहुलवादी समाज में सावरकर के [illegible] – विपक्ष में एक अध्ययन — 95
प्रीति कुमारी

18. सावरकर : राष्ट्रवादी एवं क्रान्तिकारी वि[illegible] — 105
प्रमोद कुमार

19. प्रखर राष्ट्रवादी वीर सावरकर : एक अध्ययन — 111
डॉ. सुगंधा सिंह

20. सावरकर का हिन्दुत्व : एक अध्ययन — 114
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

21. सावरकर की सामाजिक – राजनीतिक [illegible] — 118
[illegible] सिंह

22. सावरकर एवं हिन्दू राष्ट्रवाद की अवधारणा — 127
ज्योति

23. स्वा. वि. दा. सावरकर जी द्वारा लिखित [illegible] विषयों की समीक्षा — 131
प्रो. [illegible] रविंद्र [illegible]कर

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Ma[illegible]alaya
Landhaura, Distt.-Haridwar Uttarakhand

316

24.	सावरकर एक समाज सुधारक एवं भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों का परम्पराओं एवं रूढ़िवादिता के सन्दर्भ में मूल्यांकन उमेश चन्द	138
25.	वीर सावरकर : वैचारिक दर्शन एवं प्रासंगिकता विवेक मिश्र	146
26.	विनायक दामोदर सावरकर अग्रगामी नायक के रूप में : एक अध्ययन डॉ. शिखा जैन	152
27.	राष्ट्रीय आन्दोलन में वीर सावरकर का कृत्यावलोकन डॉ. संदीप कुमार	159
28.	महामानव वीर सावरकर एवं सन् सत्तावन डॉ. रुकमेश चौहान	164
29.	विनायक दामोदर सावरकर एवं हिन्दू राष्ट्रवाद की अवधारणा डॉ. एम.एस. गुसांई संजय गिरि	168
30.	राष्ट्रवाद के अग्रदूत वीर सावरकर : एक अवलोकन नवीन कुमार शीतल	172
31.	वीर सावरकर : विचार और दर्शन पंकज कुमार	176
32.	वीर सावरकर के उपन्यासों का अध्ययन डॉ. मीरा चौरसिया विपिन कुमार	182

Chaman Lal Mahavidhyalaya LQAC Coordinator Landhaura (Haridwar)

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

32.

वीर सावरकर के उपन्यासों का अध्ययन

डॉ. मीरा चौरसिया*
विपिन कुमार**

मनुष्य के मस्तिष्क व हृदय को सर्वाधिक मर्मभेदी प्रभावोत्पादक साहित्य की विधा उपन्यास मानी जाती है। इसी कारण वीर सावरकर जी ने तत्कालीन जनमानस को वैदिक सत्ता के विरुद्ध स्वतंत्रता प्राप्त हेतु उन्मुख करने के लिये मर्मभेदी, यौद्धिक घटनाओं, सामाजिक, राजनीतिक व राष्ट्रीय विशेषता हिन्दुओं के जन-जागरण हेतु इन कथानको को उपन्यास के माध्यम से जनसामान्य को एक जुट जुटने का सफल प्रयत्न किया है। सावरकर जी के उपन्यासो में मोपला, गोमांतक, कालापानी, कमला इत्यादि है।

महर्षि सावरकर के साहित्य सृजन का देशकाल और समाज से सम्बंधित परिस्थितियाँ मात्र ही नहीं अपितु साहित्य में एक स्थायी तत्व ज्ञान भी है। उनकी रचनाओं का यह स्थायी तत्व ज्ञान तथा ऐतिहासिक सामग्री जो अस्थायी परिवेश में तत्कालीन समस्याओं पर आधारित रहा है।

मोपला (उपन्यास)

इस्लामी खलीफा के समर्थक में भारत में भी खिलाफत आंदोलन मुसलमानों द्वारा 1920 ई. में आरंभ हो गया। खिलाफत आंदोलन तुर्की के खलीफा को बचाने के लिये आरंभ हुआ। तुर्की का सुल्तान संसार में सबसे बड़ा मुसलमानों का शासक होने के कारण इस्लाम का खलीफा

*सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार।
**[illegible] चूरू, राजस्थान।

Chaman Lal Mahavidyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गुरुकुल शिक्षापद्धति का महत्व

डा. नीशू कुमार
अनामिका चौहान

I.Q.A.C. Coordinator
Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt. Haridwar, Uttarakhand

319

ISBN : 978-81-942838-2-9

© सम्पादक

प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

मोबाइल : +9315194807

ई-मेल: nalandaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर संयोजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Adhunik Paripekshya Me Gurukul Shiksha Paddati Ka Mahtava

by Dr. Nisha Kumar

Anamika Chauhan

Chaman Lal Mahavidhyalaya
I.Q.A.C. Coordinator
Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Scanned with CamScanner

320

अनुक्र[illegible]का

	प्राक्कथन	v
	भूमिका	vi
1.	आधुनिक भारत में शिक्षा : गुरूकुल शि[illegible] पद्धति के संदर्भ में नीशू कुमार	1
2.	गुरूकुल परम्परा का पुनजागरण : आ[illegible] आवश्कता का पोषक देव संस्कृति विश्वविद्यालय डा. दीपा गुप्ता	9
3.	भारत में प्राचीन शिक्षा परम्परा दीपक राठी	14
4.	भारतीय प्राचीन शिक्षा व्यवस्था बना[illegible]निक शिक्षा विशाल कुमार सोढी अरविन्द सिरोही	20
5.	गुरुकुल शिक्षा पद्धति: मूलभूत सिद्धा[illegible] डा. रुकमेश चौहान	30
6.	गुरूकुल-शिक्षा पद्धति का ऐतिहासि[illegible] डा. नवीन चन्द्र गुप्ता	35
7.	वर्तमान समय में गुरुकुल शिक्षा की [illegible]ता मधु त्यागी	44
8.	प्राचीन काल में शिक्षा एवं गुरू के दायि[illegible] मिनाक्षी	49
9.	वर्तमान संदर्भ में गुरूकुल शिक्षा प्रणा[illegible] अपरिहार्यता डॉ. कुसुमलता	55
10.	गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था: अध्ययन ए[illegible]पण पंकज कुमार	61
11.	आधुनिक शिक्षा पद्धति में गुणवत्ता [illegible] डा. राजेश कुमार	67

Chaman Lal Mahavidhyalaya Coordinator Landhaura (Haridwar)

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with CamScanner

(321)

12. गुरूकुल शिक्षा पद्धति का ऐतिहासिक सन्दर्भ 72
पूजा गुप्ता

13. गुरूकुलीय शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति : एक विश्लेषण 82
डॉ. आर.सी.सिंह

14. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एंव आधुनिक शिक्षा प्रणाली का तुल्नातमक अध्ययन 86
डॉ. रेनूराधा

15. गुरूकुल शिक्षा प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणाली से कैसे भिन्न है एक विश्लेषण 94
डॉ. पुनीता शर्मा

16. आधुनिक शिक्षा प्रणाली व गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन'' 99
डॉ. पवन कुमार
शिल्पी रानी

17. महिला सशक्तिकरणः भारतीय उच्च शिक्षा के विकास के सन्दर्भ में 104
डॉ. बलजीत कौर

18. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की भूमिका 113
डॉ. जितेन्द्रकुमार सिंह

19. स्वस्थ्य लोकतंत्र के विकास में नैतिक मूल्य निभा सकते हैं महत्वपूर्ण भूमिका 120
डॉ. जया नैथानी

20. भारतीय प्राचीन शिक्षा व्यवस्था तथा दयानन्द सरस्वती के द्वारा वैदिक शिक्षा-संस्कृति का पुनरुद्धार 124
मुकेश चौधरी
अंशु त्यागी

21. गुरूकुल शिक्षा पद्धति भारतीय संस्कृति की पोषकः एक अवलोकन 132
डॉ. कविता वर्मा

22. वर्तमान समय में गुरूकुल शिक्षा पद्धति की प्रांसगिकता 138
गुड्डी बाला

23. महाभारतकालीन गुरूकुलीय शिक्षा में पर्यावणीय जागरूकता 142
गौतम

24. नैतिक मूल्यः हमारी पहचान 147
श्रीमती रंजिता उनियाल

25. वर्तमान परिस्थितियों में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकताः एक दार्शनिक धारणा 151
राजीव कुमार

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar
Scanned with CamScanner

26. प्राचीन भारत की नीति-शिक्षा एवं उसकी आधुनिक शिक्षा में उपयोगिता 156
प्रीति आर्या
27. गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति नैतिकता, मूल्य, चरित्र निर्माण राष्ट्र निर्माण- एक विमर्श 162
प्रकृति
28. परंपरा एवं आधुनिकता के मध्य शिक्षा पद्धति 170
डॉ. उदय पाल सिंह
29. गुरुकुल शिक्षा पद्धति नैतिकता मूल्य, चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण : एक विमर्श 174
डॉ. विक्रान्त गिर
डॉ. अजयपाल सिंह
30. गुरूकुल शिक्षा पद्धति व आधुनिक परिवेश में इसकी उपयोगिता 180
डॉ. रवीन्द्र कुमार
31. भारतीय संस्कृति के आधार पर आधुनिक शिक्षा की अवधारणा: एक अध्ययन 184
डॉ. रूचि सिंह
32. आधुनिक शैक्षिक परिदृष्य के सन्दर्भ में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली में स्थापित गुरू शिष्य सम्बन्धों का महत्व 190
संजीव कुमार
डॉ. सुशील कुमार
33. गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की भूमिका 195
देव प्रकाश
34. ''नैतिक मूल्य'' ह्रास के कारणों का अध्ययन 201
डॉ. अनिता चौहान
35. गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन 208
सुमन लता तिरूवा
36. 'गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं प्राचीन विश्वविद्यालय' 213
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा
37. प्राचीन भारत में गुरूकुल शिक्षा पद्धति का महत्व- 221
बबीता सिंह
38. नैतिक मूल्य परक शिक्षा की अनिवार्यता और महत्व 225
विलियम
39. उदारीकरण के दौर में निजीकरण का दबाव एवं विकल्प की अवधारणा : सन्दर्भ शिक्षा एवं गुरूकुल पद्धति 230
डॉ. विपिन कुमार शर्मा

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator Landhaura (Haridwar)
Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand
Scanned with CamScanner

40. गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणाली से अलग है : एक अवलोकन 236

डॉ. विष्णु त्यागी

41. **Status of Women's Education in Gurukul Education System** 248

Anamika Chauhan

Kuldeep kumar

42. **Role of Teacher's Training in Educational System** 253

VandanaGaur

43. **Psycho Yogic Personality in Ancient Education** 260

Pooja Saini

Prof. J.S. Bhardwaj

44. **Vedic Education :Gurukula System of Education** 270

Dr. Pravindra kumar

45. **Relevance of Gurukul Education System in Modern Perspective** 278

Randeep Kaur

Akhilesh Upadhyay

46. **Values: The Chief Catalyst for Developing Attitude Towards Violence** 285

Dr. Anshu Agarwal

47. **Moral Education And Its Significance** 291

Dr. Ashish Pathak

48. **Causes of Decline in Moral Values** 295

Babita

Prof. Vijay Jaiswal

49. **Analytical View Of Gurukul And Modern Education System In India** 305

Dinesh Joshi

50. **Health And Education With Value System** 313

Dr. Himanshu Kumar

51. **Gurukul Versus Modern Education System** 319

Dr. Mamta Sundriyal

52. **The Relevance Of Ancient Education In The Present Scenario – Issues And Prospects** 325

Dr. Manveen Kaur

R.K. Gulati

I.Q.A.C. Cordinator

Chaman Lal Mahavidyalaya

Landhaura, Distt.-Haridwar, Uttarakhand

Scanned with CamScanner

53. **Implications Of Gurukul Education System In Modern Era** 332

Nagendra Pal

54. **Anharmonic Charactetstics of Thorium Oxide Using Ultrasonic Technique** 340

Padma Devi Nagaich
Kailash

55. **21st Century Gurukul Education With Yoga** 345

Swati Tyagi

(Prof) Dr. Preeti Kumari

Chaman Lal Mahavidhyalaya I.Q.A.C. Coordinator

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar, Uttarakhand

Scanned with CamScanner

15.

गुरूकुल शिक्षा प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणाली से कैसे भिन्न है एक विश्लेषण

डा. पुनीता शर्मा*

गुरू के महत्व को प्रतिपादित करने के लिए कहा गया है कि गुरू ब्रहमा गुरू विष्णु गुरू देवो महेश्वर गुरू साक्षात् परमं ब्रहा तस्मै श्री गुरूवे नम:।

अर्थात गुरू ही ब्रहा है, गुरू ही विष्णु है और गुरू ही भगवान शंकर है गुरू ही साक्षात परं ब्रह्म है, ऐसे गुरू को मै प्रणाम करता हूँ ।

प्राचीन काल मे हमारे देश में शिक्षा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । हमारे भारत में गुरूकुल परम्परा सबसे पुरानी व्यवस्था है। वैदिक शिक्षा को वेद कालीन शिक्षा प्राचीन भारतीय शिक्षा के नाम से जाना जाता है। वेद कालीन शिक्षा मूल रूप से ऋग्वेद पर आधारित है, लेकिन यजुर्वेद भी उस काल की शिक्षा व्यवस्था के विषय मे पर्याप्त ज्ञान प्रदान करता है। विश्व मे जितनी भी प्राचीन संस्कृतियाँ हैं उनकी सामान्य विशेषता यह रहि है कि उनमें धर्म का स्थान विशेष महत्वपूर्ण था। धर्म का जिस अर्थ मे आज इस्तमाल किया जाता है, उस से बहुत विस्तृत अर्थ मे उसका इस्तमाल प्रचलित था। समाज के समस्त आचरण को नियमित करने वाली संहिता धर्म के नाम से जानी जाती थी । इस धर्म की प्रतिष्ठा तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक उसके चलन को बनाए रखने हेतु एक सामाजिक प्रकिया की जरूरत प्रतित हुई होगी।

यह सामाजिक प्रकिया जब भी, जिस भी रूप मे अपनाई गई होगी, उसी दिन से शिक्षा का

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, पुस्तकालय विज्ञान विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा

Chaman Lal Mahavidyalaya
Landhaura -Handwar, Uttarakhand